वर्ष : 6 अंक :6 जून, 2026 मूल्य : 80 रु. पृष्ठ : 44

राजस्थान टुडे

RNI No. RAJHIN/2020/11458

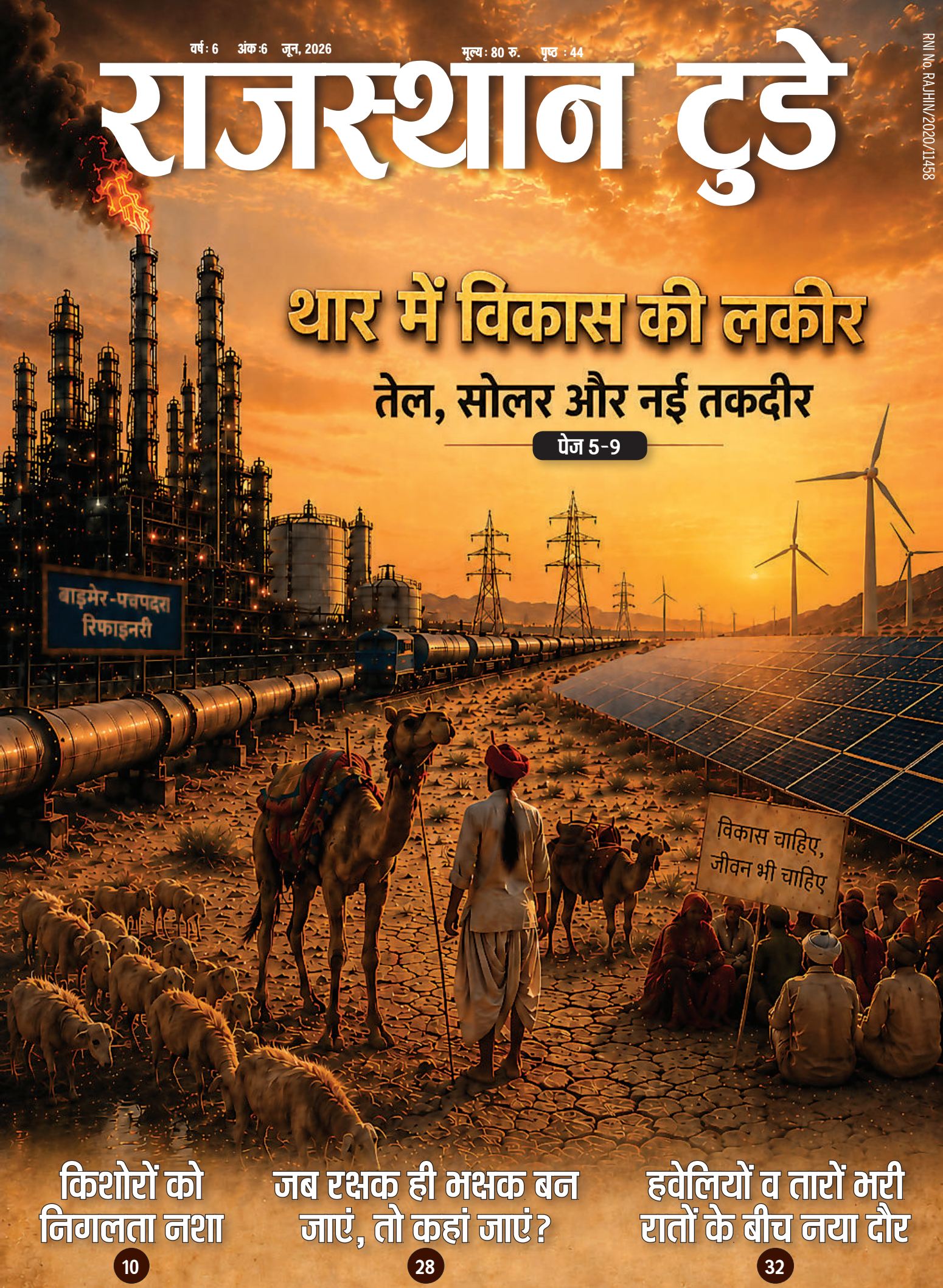

थार में विकास की लकीर

तेल, सोलर और नई तकदीर

पेज 5-9

किशोरों को निगलता नशा 10

जब रक्षक ही भक्षक बन जाएं, तो कहां जाएं? 28

हवेलियों व तारों भरी रातों के बीच नया दौर 32

AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.

AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS

221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in

राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात
www.rajasthantoday.online

RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 6, अंक 6, जून 2026

प्रधान सम्पादक - दिनेश रामावत
प्रबंध सम्पादक - राकेश गांधी
राजनीतिक सम्पादक - सुरेश व्यास
कार्यकारी सम्पादक - अजय अस्थाना
सह सम्पादक - बलवंत राज मेहता

विशेष प्रतिनिधि
नई दिल्ली - राधा रमण
जयपुर - मणिमाला शर्मा, विवेक श्रीवास्तव
अजमेर - रमेश शर्मा
उदयपुर - मधुलिका सिंह
कोटा - अरविन्द गुप्ता
पाली - चैनराज भाटी
सिरोही - गणपत सिंह
जालोर - तरुण गहलोत
बाड़मेर - धर्मसिंह भाटी

रेखाचित्र- राजेंद्र यादव

विज्ञापन प्रतिनिधि
जोधपुर - प्रवीण गिरी - 99280 26609
कोटा - यतीन्द्र जैन - 94140 76997

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स महावीर कॉलोनी, भास्कर सर्किल, रातानाड़ा, जोधपुर - 342 011
व्हाट्सएप नंबर - 81078 00000
ई-मेल - rajasthantoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और प्रधान सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर, महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342 011 से प्रकाशित और डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 10 जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर में मुद्रित। संपादक : अजय अस्थाना*
(*पी आर पी एक्ट के तहत उत्तरदायी)

अंदर विशेष

4 अपनी बात
विकास की रफ्तार और जनभावनाओं की दस्तक

नियमित कॉलम
12 बोल हरि बोल
16 बात बेलगाम
31 अभिव्यक्ति
42 ग्रहों की चाल

5 तेल, थार और तकदीर...

8 रेत पर बदलती विकास की कहानी

10 किशोरों को निगलता नशा

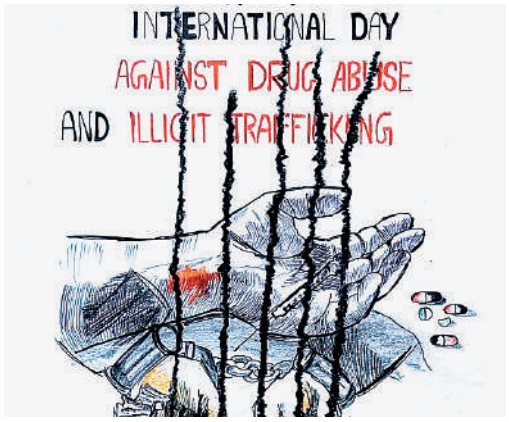

13 राष्ट्रीय राजनीति...
केरल में सत्ता बदली, चुनौतियां वही

17 वैश्विक राजनीति...
बीजिंग में टूटा ट्रंप का घमंड

20 सामयिक...
महंगाई का मौन हमला

24 साक्षात्कार...
एग्री-टेक की नई उड़ान

26 साक्षात्कार...
गांव की रसोई से देशभर तक पहुंचा स्वाद

28 राजकाज...
रक्षक ही भक्षक बन जाएं, तो कहां जाएं?

32 पर्यटन...
हवेलियों व तारों भरी रातों के बीच...

34 स्वास्थ्य...
सेहत की चुनौती और होम्योपैथी

36 स्पोर्ट्स...
'बेबी बॉस' वैभव

38 जालोर विशेष...
जालोर से दिल्ली का सपना हुआ पूरा

41 जैतारण विशेष...
जैतारण में विकास की नई इबारत

अपनी बात

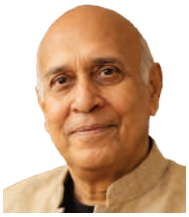

दिनेश रामावत
प्रधान सम्पादक

गिरल आंदोलन, जैसलमेर प्रकरण, नीट परीक्षा से जुड़ी चिंताएं और विकास परियोजनाओं ने राजस्थान की राजनीति को महत्वपूर्ण संदेश दिया है। जनता ने स्पष्ट कर दिया है कि अब केवल घोषणाएं नहीं, बल्कि जवाबदेही, भागीदारी और परिणाम चाहिए।

विकास की रफ्तार और जनभावनाओं की दस्तक

राजस्थान की राजनीति इन दिनों एक दिलचस्प बदलाव के दौर से गुजर रही है। एक तरफ सरकार विकास, निवेश और आधारभूत ढांचे को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत कर रही है, तो दूसरी तरफ जनता लगातार यह संकेत दे रही है कि विकास का अर्थ केवल बड़ी परियोजनाएं और निवेश समझौते नहीं हैं। विकास तब सार्थक माना जाएगा जब उसका लाभ आम आदमी तक पहुंचे और वह स्वयं को उस प्रक्रिया का हिस्सा महसूस करे।

राज्य सरकार ने ऊर्जा, उद्योग, परिवहन और आधारभूत ढांचे के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण पहलें की हैं। विशेष रूप से पश्चिमी राजस्थान को ऊर्जा और निवेश के बड़े केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में उठाए गए कदम भविष्य की संभावनाओं को मजबूत करते हैं। लंबे समय तक भौगोलिक चुनौतियों और सीमावर्ती पहचान के कारण पिछड़े माने जाने वाले क्षेत्रों के लिए यह अवसरों का नया दौर है।

लेकिन विकास की चमक के बीच कुछ ऐसे घटनाक्रम भी सामने आए जिन्होंने सत्ता और प्रशासन दोनों को आईना दिखाने का काम किया।

बाड़मेर के गिरल क्षेत्र में हुआ आंदोलन केवल एक स्थानीय विरोध नहीं था। यह उस असंतोष की अभिव्यक्ति थी जो तब पैदा होता है जब क्षेत्र के संसाधनों पर आधारित विकास तो होता है, लेकिन स्थानीय लोगों को उसका अपेक्षित लाभ नहीं मिलता। रोजगार, स्थानीय भागीदारी और सम्मानजनक हिस्सेदारी की मांग आज केवल सामाजिक मुद्दे नहीं रहे, बल्कि राजनीतिक विमर्श के केंद्र में आ चुके हैं।

गिरल आंदोलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि जनता विकास का विरोध नहीं कर रही, बल्कि विकास में अपनी भागीदारी चाहती है। अरबों रुपये की परियोजनाओं के बीच यदि स्थानीय युवा खुद को उपेक्षित महसूस करता है तो विकास के दावे खोखले नजर आने लगते हैं। यह संदेश सरकार और उद्योग जगत दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

इसी तरह नीट परीक्षा को लेकर छात्रों और अभिभावकों के बीच दिखाई दी चिंता भी केवल शिक्षा का विषय नहीं है। यह युवाओं के भरोसे और अवसरों की निष्पक्षता का प्रश्न है। आज का युवा केवल रोजगार की मांग नहीं कर रहा, बल्कि वह यह भी चाहता है कि अवसरों तक पहुंच की प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और विश्वसनीय हो। किसी भी परीक्षा व्यवस्था पर उठने वाला संदेह सीधे तौर पर शासन और संस्थागत विश्वास को प्रभावित करता है।

जैसलमेर में सामने आया गौवंश प्रकरण भी प्रशासनिक जवाबदेही पर गंभीर सवाल छोड़ गया। यह केवल एक स्थानीय घटना नहीं थी, बल्कि इसने यह दिखाया कि जमीनी स्तर पर प्रशासनिक सतर्कता और संवेदनशीलता में अभी भी सुधार की आवश्यकता है। कार्रवाई महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि ऐसी परिस्थितियां पैदा ही क्यों हों।

राजनीति में कई बार छोटी दिखने वाली घटनाएं बड़े संकेत छोड़ जाती हैं। गिरल आंदोलन, नीट को लेकर चिंताएं और जैसलमेर की घटना—तीनों ने अलग-अलग रूपों में एक ही बात कही है कि जनता अब केवल सुनना नहीं चाहती, वह जवाब भी चाहती है।

उधर विकास परियोजनाओं, रेल सुविधाओं के विस्तार और आधारभूत ढांचे को लेकर हुई घोषणाओं का स्वागत भी हुआ है। लेकिन आज का मतदाता पहले की तुलना में कहीं अधिक जागरूक और परिणामोन्मुख है। वह केवल शिलान्यास और उद्घाटन नहीं देखना चाहता, बल्कि यह जानना चाहता है कि योजनाएं धरातल पर कब उतरेंगी और उनके जीवन में क्या बदलाव लाएंगी।

राजस्थान की राजनीति के लिए सबसे बड़ा संदेश यही है कि जनता की अपेक्षाएं बदल चुकी हैं। अब विकास और जनभावनाओं को अलग-अलग खानों में रखकर नहीं देखा जा सकता। विकास तभी सफल माना जाएगा जब उसमें संवाद, सहभागिता और जवाबदेही भी शामिल हो।

सत्तारूढ़ दल के लिए यह संकेत है कि विकास योजनाओं के साथ जनविश्वास को भी मजबूत करना होगा। वहीं विपक्ष के लिए चुनौती यह है कि वह केवल आलोचना तक सीमित रहने के बजाय जनता के मुद्दों पर विश्वसनीय विकल्प प्रस्तुत करे।

राज्य की राजनीति आज जिस मोड़ पर खड़ी है, वहां भविष्य का रास्ता केवल निवेश और घोषणाओं से तय नहीं होगा। जनता का विश्वास, युवाओं की आकांक्षाएं, स्थानीय समुदायों की भागीदारी और प्रशासनिक जवाबदेही ही आने वाले समय की राजनीति की दिशा तय करेंगे।

राजस्थान की जनता ने अपना संदेश स्पष्ट कर दिया है—विकास चाहिए, लेकिन उसमें हिस्सेदारी भी चाहिए, अवसर चाहिए, लेकिन उनमें पारदर्शिता भी चाहिए; योजनाएं चाहिए, लेकिन उनके परिणाम भी चाहिए। जो इस बदलती सोच को समझेगा, वही आने वाले समय में जनता का विश्वास अर्जित कर पाएगा।

काले सोने का नया भारत : रेत से उठती ऊर्जा क्रांति

तेल, थार और तकदीर : पश्चिमी राजस्थान का नया उदय

दो दशक पहले बाड़मेर में तेल खोज ने पश्चिमी राजस्थान की तस्वीर बदलने की उम्मीद जगाई थी। आज पचपदरा रिफाइनरी भारत की ऊर्जा और औद्योगिक शक्ति का नया केंद्र बन रही है, लेकिन इसके साथ सवाल भी उठ रहे हैं कि क्या इसका लाभ स्थानीय लोगों तक पहुंचेगा, क्या रेगिस्तान का पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, और बदलती वैश्विक ऊर्जा नीतियों के बीच यह विकास कितना टिकाऊ साबित होगा?

सुरेश व्यास, वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

ये शायद दो हजार के दशक की शुरुआत के दिन थे। जोधपुर कलक्ट्री में एक बड़े अधिकारी के पास फैक्स से एक संदेश आता है। तकनीकी भाषा देखकर पहले तो उनके चेहरे पर उलझन उभरती है, लेकिन कुछ ही क्षणों बाद वही चेहरा ऐसी चमक से भर उठता है जैसे रेगिस्तान में अचानक कोई मीठा कुआं फूट पड़ा हो।

मैंने सहज जिज्ञासा में पूछा, 'कोई बड़ी खबर है क्या?' वे पहले थोड़ी देर चुप रहे। फिर मुस्कराते हुए फैक्स का पन्ना मेरी ओर सरका दिया। उस अंग्रेज़ी तकनीकी भाषा में दो शब्द साफ पढ़े जा सकते थे, बाड़मेर बेसिन और हाइड्रोकार्बन। इतना समझना काफी था कि मामला साधारण नहीं है। कुछ देर बाद वे अपने चैम्बर से बाहर आए और लगभग फुसफुसाते हुए बोले, 'बधाई हो... अब बाड़मेर काले पानी की सजा वाला इलाका नहीं रहेगा। कुछ साल बाद देखना, यह पूरा इलाका दुबई या शारजाह जैसा दिखाई देगा। बहुत बड़ा तेल भंडार मिला है वहां।'

उस वक्त शायद किसी ने नहीं सोचा होगा कि थार की रेत के नीचे दबा यह 'काला सोना' आने वाले वर्षों में केवल राजस्थान ही नहीं, बल्कि भारत के औद्योगिक और ऊर्जा भूगोल को बदलने वाली सबसे बड़ी कहानियों में बदल जाएगा।

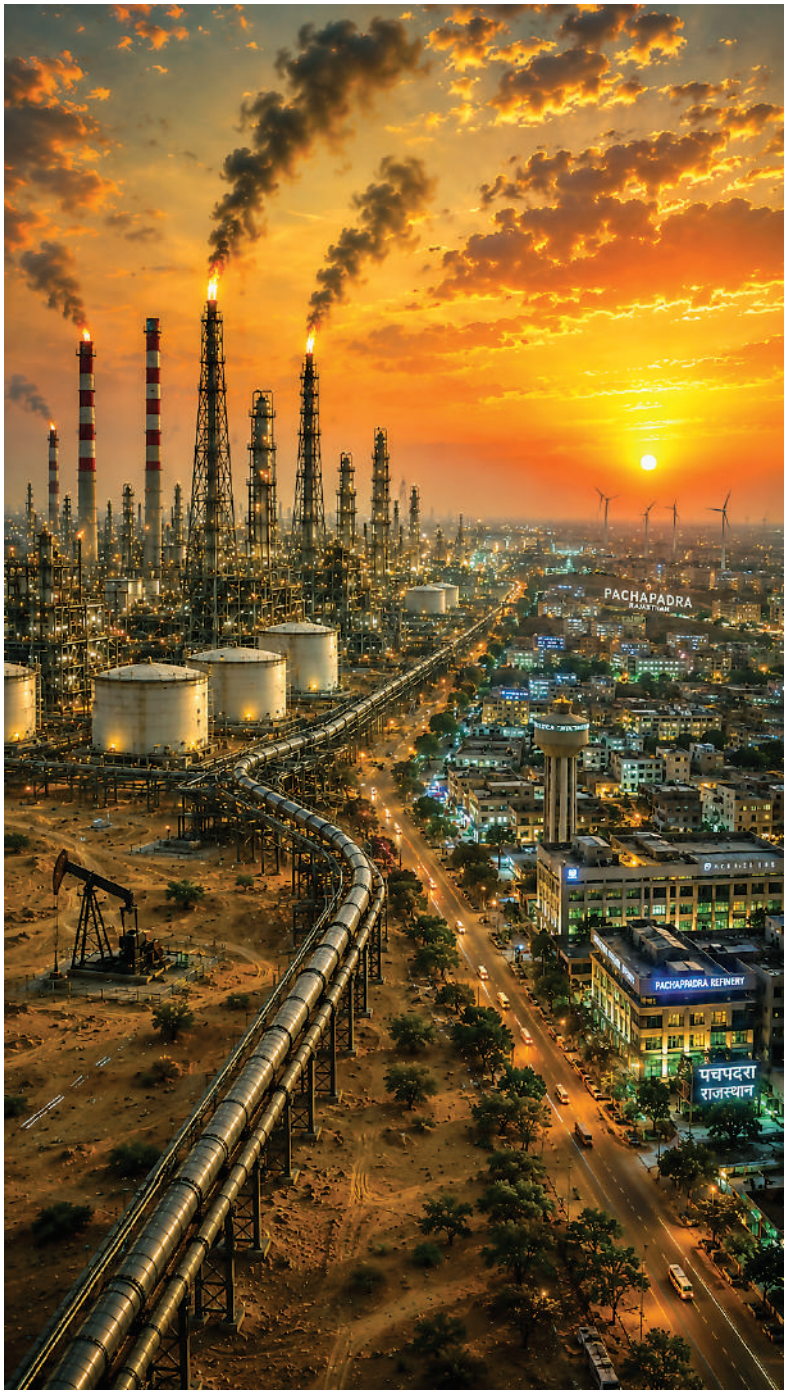

जब पहली बार देश को पता चला

▪ पत्रकारिता में खबर केवल सूचना नहीं होती, उसके पीछे प्रमाण और विवरण भी चाहिए होते हैं। लेकिन वह संदेश गोपनीय था। अधिकारी ने मित्रतावश उसे दिखाया जरूर, मगर शर्त यही थी कि स्रोत का नाम कभी बाहर नहीं आएगा।

सौभाग्य से उन्हीं दिनों कलक्ट्री में एक भू-वैज्ञानिक अधिकारी से अच्छा परिचय था। मैंने हाथ से लिखे नोट्स उनके सामने रख दिए। वे तकनीकी बातें समझाते गए और मैं तेजी से डायरी में लिखता गया। धीरे-धीरे तस्वीर साफ होती गई कि यह देश की सबसे बड़ी तेल खोजों में से एक थी।

▪ अगले दिन अखबार के पहले पन्ने पर मोटे शीर्षक के साथ खबर छपी, 'बाड़मेर में मिला अथाह तेल भंडार' और उसी दिन देश ने पहली बार महसूस किया कि सीमा से लगा यह वीरान जिला अब सिर्फ युद्ध, सूखा और पलायन की पहचान नहीं रहेगा।

राष्ट्रीय ऊर्जा मानचित्र पर उभरा रेगिस्तान

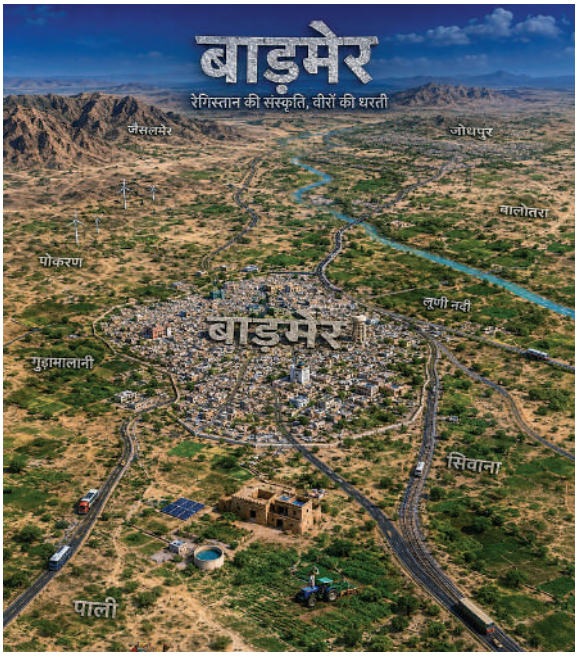

▪ वर्ष 2004-05 का दौर। विख्यात अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह देश के प्रधानमंत्री थे। बाड़मेर में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने तेल कुओं का नामकरण मंगला और भाग्यम किया। उस समय राष्ट्रीय मीडिया में एक पंक्ति बार-बार लिखी जा रही थी, 'बाड़मेर जल्दी ही भारत का दुबई बन सकता है।' लेकिन भारत में सपनों और परियोजनाओं के बीच राजनीति, नौकरशाही और वित्तीय फाइलों का लंबा रेगिस्तान भी होता है।

▪ फिर वह दृश्य भी आया जब एक ही परियोजना का शिलान्यास दो अलग-अलग राजनीतिक युगों में दो बार हुआ। पहले सोनिया गांधी ने और बाद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने। यह भारतीय लोकतंत्र का एक दिलचस्प सत्य भी है कि परियोजनाएं सरकारों से लंबी उम्र पाती हैं, लेकिन श्रेय की राजनीति हर दौर में नई हो जाती है।

पाइपलाइन, राजनीति और लंबा इंतजार

बाड़मेर से निकलने वाला कच्चा तेल केवल ऊर्जा की कहानी नहीं था, वह तकनीक और धैर्य की कहानी भी था। लगभग दो दशक तक यह तेल पाइपलाइन के जरिए गुजरात के सलाया तक पहुंचता रहा। लेकिन यह कोई साधारण पाइपलाइन नहीं थी।

थार से निकलने वाला यह कच्चा तेल अत्यधिक गाढ़ा और मोम जैसा है, जिसे सामान्य तापमान पर बहाना आसान नहीं। इसलिए पाइपलाइन में विशेष हीटिंग तकनीक का इस्तेमाल किया गया, ताकि निश्चित तापमान बनाए रखते हुए तेल को लगातार प्रवाह में रखा जा सके। उस समय यह तकनीक राजस्थान ही नहीं, देश के ऊर्जा क्षेत्र के लिए भी किसी अजूबे से कम नहीं मानी गई।

देश-विदेश से विशेषज्ञ इस पाइपलाइन को देखने आते रहे। रेगिस्तान के नीचे बिछी यह गर्म पाइपलाइन अपने आप में आधुनिक भारत की इंजीनियरिंग क्षमता का प्रतीक बन गई। ब्रिटेन की कम्पनी केयर्न एनर्जी ने यहां तेल उत्पादन शुरू किया और उत्पादन का आंकड़ा एक समय 1.60 लाख बैरल प्रतिदिन तक पहुंच गया। इस कम्पनी को बाद में वेदांता लिमिटेड ने अधिग्रहित किया। लेकिन, विडंबना यह रही कि जिस राजस्थान की धरती से तेल निकल रहा था, उसी राजस्थान में रिफाइनरी की फाइलें वर्षों तक सरकारी दफ्तरों में धूल फांकती रहीं। कांग्रेस सरकार ने इसकी रूपरेखा तैयार की, लेकिन सत्ता बदलते ही परियोजना वित्तीय व्यवहार्यता के सवालों में उलझ गई। फिर सरकार बदली तो फाइल दोबारा आगे बढ़ी। केंद्र की तत्कालीन यूपीए सरकार ने हिंदुस्तान पेट्रोलियम और राजस्थान सरकार के संयुक्त उपक्रम को मंजूरी दी। लेकिन इसके बाद भी परियोजना कभी लीलाणा और कभी पचपदरा के बीच अटकती रही। आखिरकार पचपदरा के नाम पर सहमति बनी।

पचपदरा : रेगिस्तान में उग रहा है औद्योगिक शहर

लंबे समय तक धीमी गति से चलने वाली परियोजना ने पिछले दो वर्षों में अचानक रफ्तार पकड़ी। आज पचपदरा की तरफ जाते हुए रेगिस्तान के बीच उठते विशाल स्टील स्ट्रक्चर, क्रूड प्रोसेसिंग यूनिट्स और पाइपलाइनों का जाल यह अहसास कराता है कि पश्चिमी राजस्थान का भूगोल बदल रहा है। करीब 79 हजार करोड़ रुपए लागत वाली यह 9 एमएमटीपीए क्षमता की एकीकृत रिफाइनरी केवल ईंधन उत्पादन केंद्र नहीं है। इसके साथ विकसित हो रहा पेट्रो-केमिकल कॉम्पलेक्स भारत के सबसे बड़े औद्योगिक क्लस्टरों में से एक बन सकता है।

यहां पेट्रोल और डीजल के साथ पॉलीप्रोपाइलीन, पॉलीएथिलीन, बेंजीन और ब्यूटाडाइन जैसे पेट्रो-केमिकल उत्पाद तैयार होंगे। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इसके बाद पश्चिमी राजस्थान में प्लास्टिक, पैकेजिंग, फाइबर, पेंट, फार्मा और केमिकल उद्योगों की नई शृंखला विकसित हो सकती है। यदि ऐसा हुआ तो बाड़मेर से जोधपुर तक का इलाका केवल तेल उत्पादक क्षेत्र नहीं रहेगा, बल्कि भारत के नए औद्योगिक गलियारे के रूप में उभर सकता है।

भारत का नया 'एनर्जी कॉरिडोर' बनेगा पश्चिमी राजस्थान?

यह कहानी सिर्फ एक रिफाइनरी की नहीं है। यह उस भू-भाग की कहानी है, जिसे दशकों तक केवल सीमा सुरक्षा, सूखा राहत और पलायन के संदर्भ में देखा गया। आज वही इलाका तेल उत्पादन कर रहा है, देश की सबसे बड़ी सोलर परियोजनाओं का केंद्र बन रहा है, ग्रीन हाइड्रोजन निवेश आकर्षित कर रहा है और अब पेट्रो-केमिकल हब बनने की ओर बढ़ रहा है।

यानी पश्चिमी राजस्थान धीरे-धीरे भारत के नए एनर्जी कॉरिडोर में बदलता दिखाई दे रहा है। यह बदलाव केवल आर्थिक नहीं, भू-राजनीतिक भी है। जिस इलाके को कभी सामरिक बफर माना जाता था, वही अब भारत की ऊर्जा सुरक्षा का प्रमुख स्तंभ बन सकता है।

रोजगार, निवेश और बदलती सामाजिक संरचना... रिफाइनरी परियोजना के निर्माण चरण में ही लगभग 35 हजार लोगों को रोजगार मिला। करीब एक लाख लोग अप्रत्यक्ष रूप से इससे जुड़े। पचपदरा, बालोतरा, बाड़मेर और जोधपुर जैसे शहरों में जमीनों के दाम, किराए, ट्रांसपोर्ट कारोबार और सेवा क्षेत्र की गतिविधियां तेजी से बढ़ी हैं। लेकिन, इसके साथ एक नया सामाजिक परिवर्तन भी दिखाई देने लगा है कि ग्रामीण इलाकों में पहली बार बड़े पैमाने पर तकनीकी और औद्योगिक नौकरियों की चर्चा हो रही है।

एक बड़ा प्रश्न फिर भी बाकी है, क्या स्थानीय युवाओं को इस नई अर्थव्यवस्था में पर्याप्त हिस्सेदारी मिलेगी, या यह विकास बाहर से आने वाली तकनीकी आबादी के हाथों केंद्रित हो जाएगा?

कुबेर का खजाना

हाइड्रोकार्बन इंडस्ट्री से जुड़े एक बड़े अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि आर्थिक रूप से यह रिफाइनरी राजस्थान के लिए तो गेम चैंजर साबित होने वाली है। इसके पूरी रफ्तार से काम में आने के बाद देश के पेट्रो आयात बिल में लगभग 26 हजार करोड़ रुपए की कमी आ सकती है। केंद्र और राज्य सरकार को लगभग 21 हजार करोड़ रुपए के राजस्व का अनुमान है। इसमें राजस्थान का हिस्सा करीब चार हजार करोड़ रुपए होगा। वैट, ट्रांसपोर्टेशन, सर्विस टैक्स और स्थापित होने वाली सहायक इकाइयों से मिलने वाली कर आय अलग है।

चमक जाएगी किस्मत

राजस्थान में यह बड़ी रिफाइनरी सिर्फ आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि यह कभी बीमारू कहे जाने वाले राज्य को आर्थिक रूप से सक्षम राज्य की दिशा में ले जाने वाला कदम साबित होने वाली है। इससे स्थानीय जीवन स्तर में उछाल तो आना ही है, साथ ही यह एक बहुआयामी औद्योगिक विकास इंजन के रूप में भी देखी जानी चाहिए। क्योंकि इससे आने वाले वर्षों में पश्चिमी राजस्थान की शहरी और आर्थिक सूरत बदली हुई नजर आएगी। विशेषज्ञ कहते हैं कि कौशल विकास पर निवेश और एमएसएमई इको सिस्टम को मजबूत करने के साथ यह रिफाइनरी राजस्थान को रेगिस्तान की दुर्गम स्थितियों से निकालकर इंडस्ट्रियल हब के रूप में प्रतिष्ठापित करने में सक्षम हो सकती है।

पेट्रो केमिकल कॉम्पलेक्स क्लस्टर बनने से पांच सौ से अधिक उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध होने लगेगा। इससे प्लास्टिक, फाइबर, पेंट, केमिकल, पैकेजिंग और फार्मा जैसे क्षेत्रों में निवेश का नया रास्ता राजस्थान के लिए खुलेगा। साथ ही सड़क, रेल, आवास, होटल, ट्रांसपोर्ट और तकनीकी सेवाओं के लिए भी अवसर बढ़ने से शहरीकरण तेजी से होगा और यह पिछड़ा कहा जाने वाला रेगिस्तानी इलाका देश की व्यापारिक और औद्योगिक गतिविधियों के नए हब के रूप में सामने आएगा।

विकास की चमक और पर्यावरण की छाया

- हर बड़ी औद्योगिक परियोजना अपने साथ कुछ असुविधाजनक प्रश्न भी लेकर आती है। पचपदरा रिफाइनरी भी इसका अपवाद नहीं है। रेगिस्तानी इलाके में भारी जल खपत वाली परियोजना भविष्य में जल संकट को कितना प्रभावित करेगी?
- क्या पेट्रो-केमिकल विस्तार स्थानीय पर्यावरण और पारंपरिक पशुपालन पर दबाव डालेगा?
- क्या थार की पारिस्थितिकी इस औद्योगिक विस्तार को संतुलित रख पाएगी?

ये वे सवाल हैं जिनका जवाब आने वाले वर्षों में ही मिलेगा।

जब दुनिया ग्रीन एनर्जी की ओर बढ़ रही है...

दिलचस्प विरोधाभास यह है कि जिस समय दुनिया जीवाश्म ईंधन से बाहर निकलने की तैयारी कर रही है, उसी समय राजस्थान पेट्रो-केमिकल युग में प्रवेश कर रहा है। हालांकि यही राजस्थान आज भारत का सबसे बड़ा सोलर और विंड एनर्जी हब भी बनता जा रहा है।

संभव है आने वाले वर्षों में पश्चिमी राजस्थान एक साथ दो विपरीत तस्वीरों का प्रतिनिधित्व करे, एक तरफ तेल और पेट्रो-केमिकल उद्योग, दूसरी तरफ सौर ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन। यानी थार केवल रेगिस्तान नहीं रहेगा, बल्कि भारत की ऊर्जा राजनीति का सबसे बड़ा प्रयोगशाला क्षेत्र बन सकता है।

रेगिस्तान की नई इबारत

कभी पश्चिमी राजस्थान का मतलब था वीरानी, पलायन, अकाल और सीमा का तनाव। अब वही इलाका ऊर्जा, उद्योग, निवेश और आधुनिक बुनियादी ढांचे की नई कहानी लिखता दिखाई दे रहा है। थार की रेत सदियों तक हवाओं के निशान संभालती रही। अब उसी रेत के नीचे दबा तेल राजस्थान ही नहीं, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था की नई इबारत लिखने की तैयारी में है। लेकिन, अंतिम प्रश्न अभी भी बाकी है, क्या यह चमक केवल औद्योगिक टावरों तक सीमित रहेगी, या सचमुच रेगिस्तान के आखिरी गांव तक रोशनी पहुंचाएगी?

रेगिस्तान की नई दौलतः ऊर्जा क्रांति या पर्यावरणीय चुनौती?

रेत पर बदलती विकास की कहानी

राजस्थान का थार क्षेत्र तेजी से भारत की ग्रीन एनर्जी राजधानी बन रहा है। सोलर और विंड हाइब्रिड मॉडल, अरबों के निवेश और ऊर्जा निर्यातक राज्य बनने की संभावनाओं के बीच पर्यावरण, चरागाह, पशुपालन और रेगिस्तानी पारिस्थितिकी पर बढ़ते दबाव ने विकास बनाम संतुलन की बहस को केंद्र में ला खड़ा किया है।

धर्मसिंह भाटी, वरिष्ठ पत्रकार

जैसलमेर की तपती रेत पर अब ऊंटों से ज्यादा सोलर पैनल दिखाई देने लगे हैं। रात के अंधेरे में जहां कभी केवल सीमा चौकियों की रोशनी चमकती थी, वहां अब पवन चक्कियों की लाल बत्तियां टिमटिमाती हैं। जिस रेगिस्तान को कभी सूखे, पलायन और पिछड़ेपन का प्रतीक माना जाता था, वही आज भारत की ऊर्जा क्रांति का सबसे बड़ा इंजन बनता दिख रहा है।

राजस्थान का पश्चिमी भूभाग अब केवल सीमावर्ती इलाका नहीं रहा, बल्कि देश की ऊर्जा सुरक्षा और हरित अर्थव्यवस्था का नया केंद्र बन चुका है। लेकिन इस चमकदार बदलाव के बीच एक गंभीर प्रश्न भी उभर रहा है कि क्या ग्रीन एनर्जी की यह दौड़ रेगिस्तान की पारिस्थितिकी, हरियाली और पारंपरिक जीवनशैली की कीमत पर आगे बढ़ रही है? यही वह द्वंद्व है, जिसने राजस्थान के विकास मॉडल को राष्ट्रीय बहस के केंद्र में ला खड़ा किया है।

पुराने राजस्थान से 'ऊर्जा राजस्थान' तक

एक समय था जब पश्चिमी राजस्थान को केवल सूखा, सीमित खेती और पलायन से जोड़कर देखा जाता था। गांवों से युवा रोजगार की तलाश में महानगरों की ओर निकलते थे। पानी और बिजली दोनों संकट माने जाते थे। लेकिन पिछले एक दशक में तस्वीर तेजी से बदली है। जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर और फलौदी जैसे जिले अब देश के ऊर्जा मानचित्र पर सबसे तेजी से उभरते क्षेत्रों में गिने जा रहे हैं। विशाल सोलर पार्क, हजारों पवन चक्कियां और ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर अब इस रेगिस्तान की नई पहचान बन गए हैं।

भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है और प्रकृति ने उसे अक्षय ऊर्जा के लिए असाधारण क्षमता दी है। यहां वर्ष के 365 दिनों में से लगभग 325 दिन तेज धूप रहती है। पश्चिमी राजस्थान में दिन भर चमकता सूर्य और रात के समय बहने वाली तेज हवाएं इस क्षेत्र को प्राकृतिक ऊर्जा प्रयोगशाला बना देती हैं। कम जनसंख्या घनत्व और विशाल खुला भू-भाग भी ऊर्जा परियोजनाओं के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं।

बीते एक दशक में सरकार ने इन परिस्थितियों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया है। राज्य में सैकड़ों सोलर पार्क स्थापित हुए हैं और पवन ऊर्जा परियोजनाओं का तेजी से विस्तार हुआ है। वर्तमान में राजस्थान लगभग 55 से 60 हजार मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन कर रहा है, जो देश में सबसे अधिक है। वहीं करीब 4000 मेगावाट पवन ऊर्जा उत्पादन के साथ राज्य अग्रणी श्रेणी में शामिल है।

सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए लगभग 6.67 लाख बीघा भूमि तथा पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए करीब 1.54 लाख बीघा भूमि उपयोग में ली जा रही है। रूफटॉप सोलर के क्षेत्र में भी राजस्थान अग्रिम राज्यों में शामिल है।

पिछले तीन वर्षों में ग्रीन एनर्जी क्षेत्र में अपूर्व उछाल देखा गया है। वर्ष 2022 तक जहां राज्य में लगभग 17 गीगावाट ग्रीन एनर्जी उत्पादन हो रहा था, वहीं वर्ष 2026 की शुरुआत तक यह आंकड़ा बढ़कर 46 गीगावाट तक पहुंच गया। इन उपलब्धियों से उत्साहित राज्य सरकार ने वर्ष 2030 तक 125 गीगावाट हरित ऊर्जा उत्पादन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है। जिस प्रदेश को कभी 'ऊर्जा उपभोक्ता' माना जाता था, वही अब 'ऊर्जा निर्यातक राज्य' बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

थार का प्राकृतिक हाइब्रिड मॉडल

राजस्थान की सबसे बड़ी ताकत केवल तेज धूप नहीं, बल्कि प्रकृति का वह संतुलन है जिसने इसे सोलर+विंड हाइब्रिड मॉडल के लिए आदर्श बना दिया है। दिन में यहां सौर ऊर्जा उत्पादन चरम पर रहता है, जबकि शाम और रात के समय तेज हवाएं पवन ऊर्जा उत्पादन को गति देती हैं। यानी जब सोलर उत्पादन कम होता है, तब विंड एनर्जी उस कमी को काफी हद तक संतुलित कर देती है।

ऊर्जा विशेषज्ञ इसे भविष्य की स्थायी ऊर्जा व्यवस्था का महत्वपूर्ण मॉडल मानते हैं। क्योंकि ग्रीन एनर्जी की सबसे बड़ी चुनौती केवल बिजली बनाना नहीं, बल्कि लगातार बिजली उपलब्ध करवाना है। राजस्थान का भूगोल इस चुनौती का स्वाभाविक समाधान प्रस्तुत करता दिखाई देता है, लेकिन इस मॉडल की सफलता केवल उत्पादन क्षमता पर निर्भर नहीं करेगी। असली चुनौती बैटरी स्टोरेज और राष्ट्रीय ग्रिड की होगी। यदि अतिरिक्त बिजली को सुरक्षित रखने और देश के अन्य हिस्सों तक पहुंचाने के लिए पर्याप्त इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित नहीं किया गया, तो उत्पादन क्षमता का पूरा लाभ नहीं मिल पाएगा। यानी राजस्थान की ऊर्जा क्रांति केवल सोलर पार्कों से नहीं, बल्कि बैटरी स्टोरेज, ग्रीन कॉरिडोर और मजबूत ट्रांसमिशन नेटवर्क से पूरी होगी।

23 लाख करोड़ के निवेश और बदलती अर्थव्यवस्था

राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट ने यह स्पष्ट कर दिया कि राज्य सरकार ग्रीन एनर्जी को भविष्य की अर्थव्यवस्था का आधार मान रही है। समिट में हुए लगभग 26 लाख करोड़ रुपए के एमओयू में से करीब 23 लाख करोड़ रुपए अक्षय ऊर्जा क्षेत्र से जुड़े बताए गए। संयुक्त अरब अमीरात सहित कई अंतरराष्ट्रीय निवेशक राजस्थान में बड़े प्रोजेक्ट लगाने की तैयारी कर रहे हैं। यदि ये निवेश धरातल पर उतरते हैं, तो राजस्थान केवल ऊर्जा क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि रोजगार, आधारभूत ढांचे और औद्योगिक विकास में भी बड़ी छलांग लगा सकता है।

कई गांवों में सड़कें बनी हैं, बिजली व्यवस्था मजबूत हुई है और स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर भी मिले हैं। यह पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि लंबे समय तक विकास से दूर रहे क्षेत्रों में पहली बार बड़े आर्थिक अवसर दिखाई दे रहे हैं। लेकिन, कहानी का दूसरा पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

हरित ऊर्जा के बीच हरियाली का सवाल

विकास की चमक के बीच पर्यावरणीय चिंता लगातार गहराती जा रही है। सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर भूमि उपयोग हो रहा है। चरागाह क्षेत्र सिकुड़ रहे हैं, स्थानीय वनस्पतियां प्रभावित हो रही हैं और कई स्थानों पर पेड़-पौधों की कटाई को लेकर विवाद सामने आए हैं। पश्चिमी राजस्थान का रेगिस्तान केवल रेत का विस्तार नहीं, बल्कि एक संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र है। खेजड़ी, जाल और अन्य स्थानीय वनस्पतियां यहां के पर्यावरणीय संतुलन का आधार हैं। यही वनस्पतियां पशुधन, वन्यजीव और स्थानीय जलवायु को संतुलित बनाए रखती हैं।

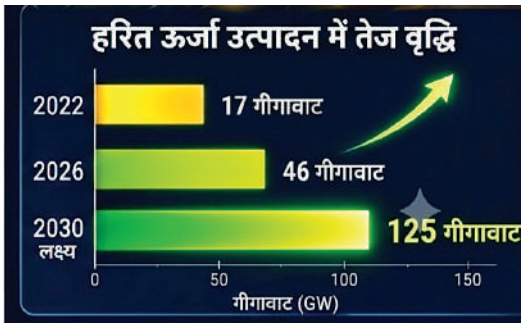

पर्यावरण प्रेमियों का आरोप है कि ग्रीन एनर्जी परियोजनाओं के विस्तार के दौरान हजारों पेड़ और झाड़ियां नष्ट हुई हैं। दूसरी ओर सरकार और ऊर्जा कंपनियों का तर्क है कि जलवायु परिवर्तन से लड़ने और कोयले पर निर्भरता कम करने के लिए ग्रीन एनर्जी विस्तार आवश्यक है। यहीं इस बहस की जटिलता दिखाई देती है। प्रश्न केवल विकास बनाम पर्यावरण का नहीं, बल्कि किस प्रकार का विकास का है।

पशुपालकों की बदलती दुनिया

पश्चिमी राजस्थान में आज भी पशुपालन केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि जीवनशैली है। भेड़-बकरी पालन और गोवंश स्थानीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। लेकिन, लगातार बढ़ते सोलर पार्कों के कारण चरागाह भूमि सीमित होती जा रही है। कई पशुपालकों का कहना है कि जिन रास्तों से कभी पशुधन गुजरता था, वहां अब सोलर परियोजनाओं की बाड़ खड़ी हो गई है। हालांकि दूसरी ओर कुछ ग्रामीण यह भी मानते हैं कि ऊर्जा परियोजनाओं से क्षेत्र में विकास आया है। सड़कें बनी हैं, बाजार बढ़े हैं और युवाओं को वैकल्पिक रोजगार मिला है। यानी गांवों के भीतर भी यह बदलाव पूरी तरह एकतरफा नहीं है। कहीं उम्मीद है, कहीं चिंता। कहीं अवसर हैं, तो कहीं असुरक्षा। यही इस परिवर्तन की वास्तविक तस्वीर है।

नीति की सबसे बड़ी परीक्षा

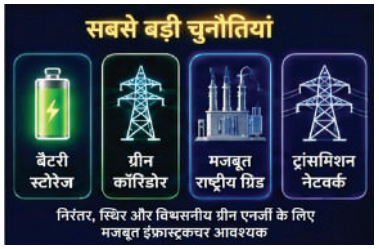

ग्रीन एनर्जी का विरोध शायद ही कोई करता हो। जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा के इस दौर में भारत को कोयले पर निर्भरता कम करनी ही होगी। राजस्थान की भूमिका इस परिवर्तन में बेहद महत्वपूर्ण है। लेकिन, प्रश्न यह है कि क्या विकास की वर्तमान रफ्तार के साथ पर्याप्त पर्यावरणीय सुरक्षा उपाय भी लागू किए जा रहे हैं? क्या ओरण, चरागाह और स्थानीय पारिस्थितिकी को बचाने के लिए स्पष्ट नीति मौजूद है? क्या स्थानीय समुदायों को निर्णय प्रक्रिया में पर्याप्त भागीदारी मिल रही है?

पर्यावरण कार्यकर्ता सुमेरसिंह सांवता जैसे लोग लंबे समय से ओरण भूमि संरक्षण का मुद्दा उठाते रहे हैं। यह केवल जमीन का सवाल नहीं, बल्कि रेगिस्तान की सांस्कृतिक और पर्यावरणीय विरासत का प्रश्न भी है। राजस्थान के सामने असली चुनौती अब केवल निवेश लाने की नहीं, बल्कि ऐसा विकास मॉडल तैयार करने की है जो ऊर्जा उत्पादन और पर्यावरणीय संतुलन दोनों को साथ लेकर चले।

राजस्थान आज एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है। उसके पास अवसर भी है और चेतावनी भी। यदि राज्य ऊर्जा विकास, पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय समाज के हितों के बीच संतुलन स्थापित कर लेता है, तो वह दुनिया के सामने टिकाऊ विकास का नया मॉडल पेश कर सकता है। लेकिन यदि हरित विकास की दौड़ में हरियाली, चरागाह और पारंपरिक जीवनशैली पीछे छूट गई, तो यह मॉडल भविष्य में गंभीर सामाजिक और पर्यावरणीय संकट भी पैदा कर सकता है।

थार का रेगिस्तान आज केवल रेत का विस्तार नहीं, बल्कि भारत के भविष्य की प्रयोगशाला बन चुका है। यहां तय होगा कि आने वाले समय का विकास केवल मेगावाट से मापा जाएगा या फिर प्रकृति और समाज के साथ उसके संतुलन से भी।

सीमाओं से गलियों तक फैलता नशे का जाल

किशोरों को निगलता नशा

मादक पदार्थों की बढ़ती तस्करी, आसान उपलब्धता और बदलती जीवनशैली के बीच किशोर तेजी से नशे की गिरफ्त में आ रहे हैं। सीमाओं से लेकर समुद्री और डिजिटल माध्यमों तक फैले इस जाल ने समाज के सामने गंभीर चुनौती खड़ी कर दी है। ऐसे में परिवार, समाज और शासन की जिम्मेदारी पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

भुवनेश जैन, पूर्व निदेशक, मेरा युवा भारत, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार

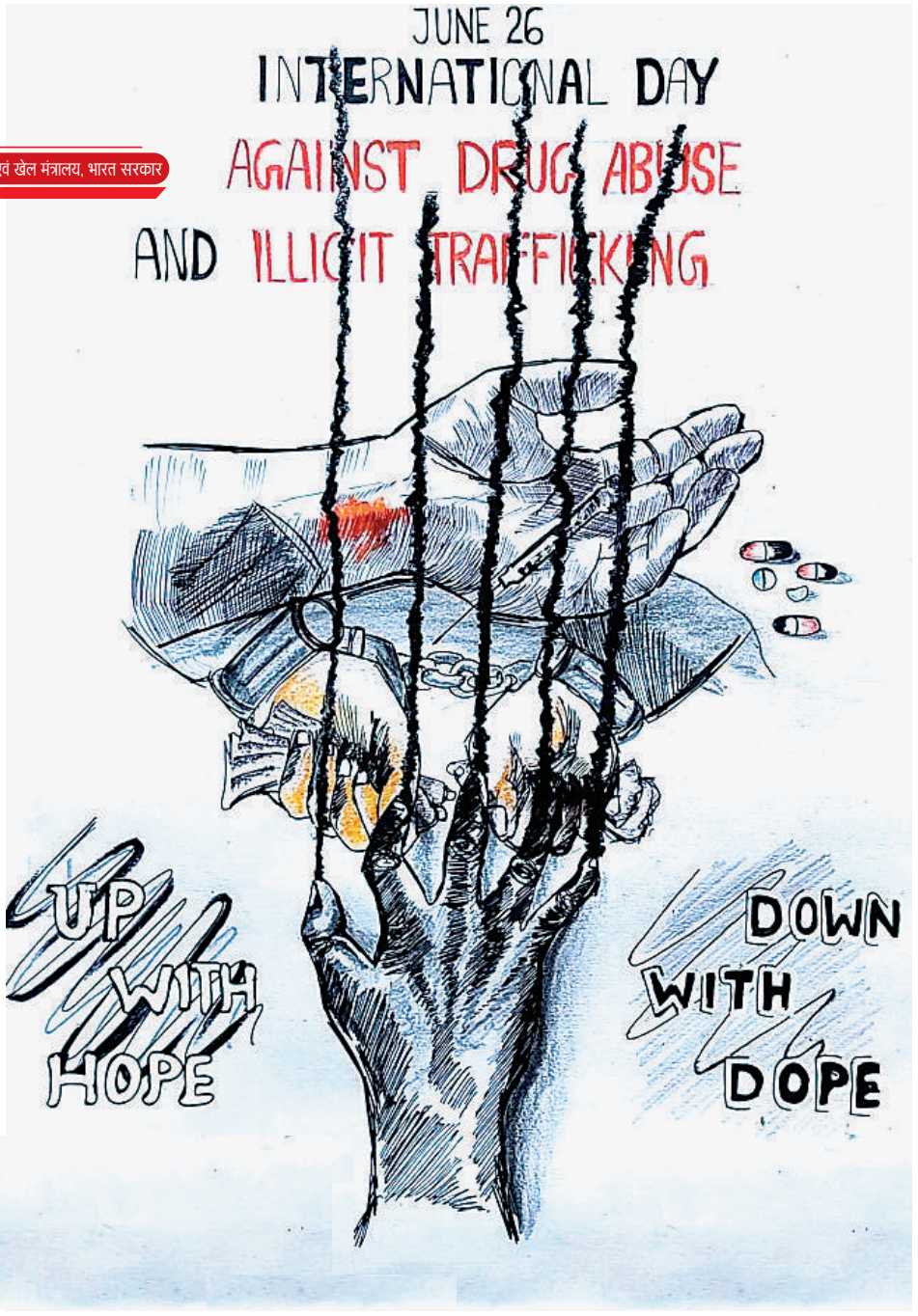

दुनिया भर में नशे की बढ़ती लत अब वैश्विक जनस्वास्थ्य के लिए गंभीर संकट बन चुकी है। संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय की विश्व ड्रग रिपोर्ट-2025 के अनुसार वर्ष 2023 में लगभग 32 करोड़ लोगों ने किसी न किसी नशीले पदार्थ का सेवन किया। हैरानी की बात यह है कि इसमें शराब और तंबाकू जैसे नशे तो शामिल ही नहीं हैं। वर्ष 2013 की तुलना में यह संख्या काफी अधिक है और वैश्विक आबादी के लगभग छह प्रतिशत के बराबर पहुंच चुकी है।

मादक पदार्थों की बढ़ती मांग और इससे जुड़े अपराधी गिरोहों के कारण दुनिया में नशे के अवैध कारोबार और तस्करी का जाल अत्यंत तेजी से फैल रहा है। इस जाल में फंसने वालों में सबसे अधिक किशोर और युवा हैं। यह अब केवल कानून-व्यवस्था का मसला नहीं रहा। यह वैश्विक जनस्वास्थ्य का गहराता संकट बन चुका है। रिपोर्ट के अनुसार सबसे बड़ी चिंता इस बात को लेकर है कि 15 से 16 वर्ष आयु वर्ग के किशोर तेजी से नशे की गिरफ्त में आ रहे हैं। इनकी संख्या 15-64 आयु वर्ग द्वारा किए जा रहे कुल ड्रग सेवन करने वालों के बराबर या उससे अधिक हो गई है। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस उम्र में मस्तिष्क का विकास जारी रहता है और नशीले पदार्थ सीधे उस हिस्से को प्रभावित करते हैं जो निर्णय लेने, जोखिम समझने और व्यवहार नियंत्रित करने से जुड़ा होता है। चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से देखें तो आवेगों पर नियंत्रण के लिए उत्तरदायी मस्तिष्क का अग्र भाग लगभग 25 वर्ष की आयु तक पूर्ण रूप से विकसित नहीं होता। नशे के तत्व इसी अधूरे विकास का लाभ उठाकर किशोरों की निर्णय क्षमता और आत्मनियंत्रण को कमजोर कर देते हैं। यही कारण है कि किशोरों में नशे की लत जल्दी विकसित होती है और इससे मानसिक अवसाद, हिंसक प्रवृत्ति, आत्महत्या, पढ़ाई से दूरी तथा समयपूर्व मृत्यु का खतरा बढ़ जाता है। विश्व स्तर पर किशोरों में नशीले पदार्थों के बढ़ते सेवन को अब 'मौन महामारी' कहा जाने लगा है।

भारत भी अछूता नहीं

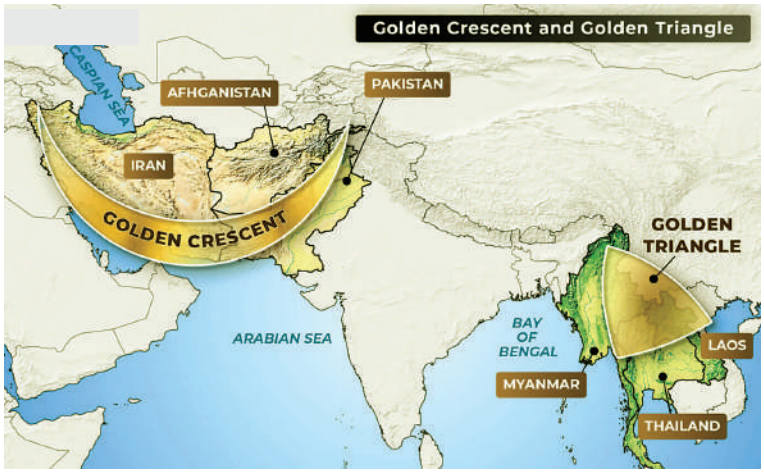

भारत भी इस खतरे से अछूता नहीं है। अंतरराष्ट्रीय नशा तस्करी गिरोह भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों और युवाओं को निशाना बना रहे हैं। देश के भीतर कृत्रिम नशीले पदार्थों के अवैध कारखाने लगातार सामने आ रहे हैं। तत्कालीन जिला पुलिस अधीक्षक नरेंद्र मीना के नेतृत्व में बाड़मेर जिले के धोरीमन्ना, रामसर, सेड़वा और बींजराड़ क्षेत्र में अवैध कृत्रिम नशीले पदार्थों की फैक्ट्रियां पकड़ी गई थीं, जिनका संबंध बड़े शहरों और अंतरराज्यीय गिरोहों से बताया जाता है। अब तस्कर केवल पारंपरिक अफीम या डोडा-चूरा तक सीमित नहीं हैं बल्कि मेफेड्रोन जैसे कृत्रिम नशीले पदार्थों के उत्पादन केंद्र विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं, जिन्हें स्थानीय स्तर पर अलग-अलग नामों से बेचा जाता है।

भारत में तेजी से विकसित हो रहे सड़क और परिवहन तंत्र का दुरुपयोग तस्कर भी कर रहे हैं। 'भारतमाला' जैसी परियोजनाओं ने जहां यातायात को गति दी है वहीं कई इलाकों में नशा तस्करी के नए मार्ग भी सक्रिय हुए हैं। सीमावर्ती राज्यों पंजाब, राजस्थान और जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान से आने वाली हेरोइन और अफीम सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है। यह तस्करी 'स्वर्ण अर्धचंद्र' मार्ग के जरिए होती है जिसमें अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईरान शामिल हैं। वर्ष 2024 में सीमा सुरक्षा बल ने पंजाब सीमा पर सैकड़ों किलो हेरोइन जब्त की जो इस खतरे की गंभीरता को दर्शाती है। अब इस तस्करी में तकनीक का समावेश हो गया है और सीमा पार से मानव रहित उड़न यंत्रों के माध्यम से नशे की खेप गिराई जा रही है जो सुरक्षा एजेंसियों के लिए नई और जटिल चुनौती बन चुकी है। दूसरा बड़ा मार्ग 'स्वर्ण त्रिकोण' है जिसमें म्यांमार, लाओस और थाईलैंड से हेरोइन तथा मेथाम्फेटामाइन जैसे कृत्रिम नशीले पदार्थ भारत के पूर्वोत्तर राज्यों तक पहुंचते हैं। मणिपुर, मिजोरम और असम के कई क्षेत्रों में स्कूल और महाविद्यालय जाने वाले किशोर इसकी चपेट में आ रहे हैं। इसके अलावा समुद्री रास्तों से गुजरात, केरल और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्र भी तस्करों के निशाने पर हैं। अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर के मार्ग अब अंतरराष्ट्रीय नशा तस्करी गिरोहों के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं। तस्कर अब समुद्री और जमीनी मार्गों के साथ-साथ डिजिटल माध्यमों का भी उपयोग कर रहे हैं। गुप्त अंतरजाल और आभासी मुद्रा के माध्यम से होने वाले लेन-देन ने पहचान छिपाना आसान कर दिया है जिससे नशीले पदार्थ अब सामान्य पार्सल की तरह किशोरों तक पहुंच रहे हैं।

किशोरों के व्यवहार पर पैनी नजर जरूरी

किशोरों के नशे की ओर बढ़ने के पीछे अनेक सामाजिक और मानसिक कारण हैं। दोस्तों का दबाव, जिज्ञासा, अकेलापन, पारिवारिक तनाव, बेरोजगारी, पढ़ाई और भविष्य की चिंता, सामाजिक माध्यमों का प्रभाव तथा रचनात्मक गतिविधियों से दूरी प्रमुख कारण हैं। कई बार निम्न आय वर्ग के किशोर सुधार द्रव, रासायनिक पतला करने वाले द्रव और गोंद जैसे सस्ते सूंघने वाले पदार्थों से शुरुआत करते हैं जो उनके फेफड़ों और तंत्रिका तंत्र को स्थायी रूप से क्षति पहुंचा देते हैं। माता-पिता शुरुआती संकेत पहचान नहीं पाते।

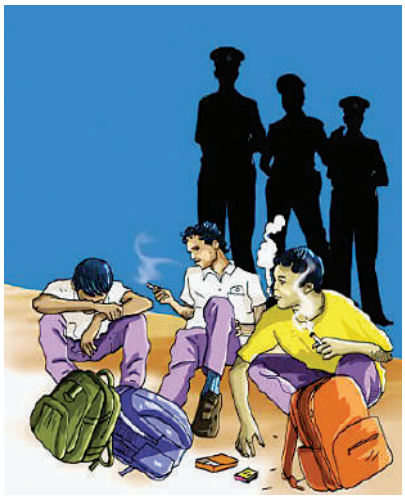

व्यवहार में अचानक बदलाव, चिड़चिड़ापन, पढ़ाई में गिरावट, नींद की समस्या, आंखों में लालिमा और पैसों की असामान्य मांग जैसे संकेतों को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है।

इस खतरे से बाहर निकलने के लिए केवल पुलिस कार्रवाई पर्याप्त नहीं है। जागरूकता, संवाद और सामाजिक भागीदारी सबसे जरूरी हथियार हैं। परिवारों को बच्चों के साथ विश्वासपूर्ण संवाद बढ़ाना होगा। स्कूलों और महाविद्यालयों में नशा मुक्ति पर नियमित परामर्श, खेल गतिविधियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम और मानसिक स्वास्थ्य सहायता उपलब्ध करानी होगी। इसके साथ ही सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय नशा मुक्ति सहायता सेवा जैसी सुविधाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार भी आवश्यक है, ताकि पीड़ित और उनके परिजन बिना सामाजिक झिझक के सहायता प्राप्त कर सकें।

हाल ही में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भी नशे की बढ़ती प्रवृत्ति को देश और युवा पीढ़ी के भविष्य के लिए गंभीर खतरा बताते हुए वर्ष 2047 तक 'नशा मुक्त भारत' का लक्ष्य दोहराया है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि नशा तस्करी केवल अपराध नहीं बल्कि राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक शक्ति को कमजोर करने वाली चुनौती है। गृहमंत्री ने राज्यों, सुरक्षा एजेंसियों और समाज के विभिन्न वर्गों से समन्वित अभियान चलाने का आह्वान करते हुए युवाओं को नशे से बचाने को राष्ट्रीय प्राथमिकता बताया।

युवाओं को आगे आना होगा

हर किशोर और युवा स्वयं भी इस अभियान का हिस्सा बन सकता है। मोहल्लों, गांवों और शिक्षण संस्थानों में युवा मंडल बनाकर खेल, संगीत, कला और सामाजिक गतिविधियों से जुड़ाव बढ़ाया जा सकता है। नुक्कड़ नाटक, समूह चर्चा और जनजागरण कार्यक्रमों के माध्यम से नशे के दुष्परिणामों को समझाया जाना चाहिए। संदिग्ध गतिविधियों की सूचना पुलिस और प्रशासन को देना भी सामाजिक जिम्मेदारी है। नशे के शिकार लोगों के प्रति घृणा नहीं बल्कि सहानुभूति और पुनर्वास की भावना जरूरी है। उपचार, परामर्श और पुनर्वास केंद्रों तक पहुंच आसान बनानी होगी।

यदि समाज नए किशोरों को नशे से दूर रखने और नशा पीड़ितों को उपचार से जोड़ने का सामूहिक प्रयास करे तो नशीले पदार्थों की मांग को काफी हद तक कम किया जा सकता है। नशा तस्करों का जाल भले ही मजबूत दिखाई देता हो लेकिन जागरूक समाज, जिम्मेदार युवा और सक्रिय परिवार मिलकर इसे कमजोर कर सकते हैं। राह कठिन जरूर है, लेकिन जागरूकता और सामूहिक प्रयास से इस खतरे पर काबू पाया जा सकता है। किशोर सुरक्षित रहेंगे तभी देश का भविष्य मजबूत बनेगा और भारत सच मायनों में नशा मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ सकेगा।

पीएम मोदी की सात अपील के बाद राहुल गांधी के साथ 'आत्म-साक्षात्कार'

अब सेंचुरी आने ही वाली है

हरीश मलिक, वरिष्ठ व्यंग्यकार और स्तंभकार

राजधानी में कोटला रोड पर उस दिन बड़ी हलचल थी। मैंने देखा कि कांग्रेस मुख्यालय के बाहर कुछ नेता ऐसे चेहरे बनाकर घूम रहे थे, जैसे रिजल्ट आने के बाद छात्र मार्कशीट नहीं, कोई दूसरी ही रिपोर्ट लेने आए हों। मैंने एक कांग्रेस नेता को सिर पकड़कर बैठे देखा तो पूछा- 'क्या हुआ?'

वह बोला- 'कुछ नहीं, बस चुनाव परिणाम आया है।'

मैं समझ गया, देश में दो चीजें स्थायी हैं- एक मानसून की भविष्यवाणी और दूसरी कांग्रेस की समीक्षा बैठक। मैं लोकतंत्र का पुराना मरीज हूं, सो भीतर घुस गया।

राहुल गांधी एक बड़े से सोफे पर धंसे बैठे थे। सामने हार की फाइलें थीं। असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और न जाने कौन-कौन सी हारें। मैंने पूछा, 'क्या कर रहे हैं?' जैसे डॉक्टर एक्स-रे देखकर रिश्तेदारों को धीरे-धीरे सच बताता है। वे भी धीरे से बोले, 'मैं सेंचुरी की प्रैक्टिस कर रहा हूं। पार्टी कह रही है कि थोड़ा संभलकर खेलो, लेकिन मैं कहता हूं- रिकॉर्ड तो बनना ही चाहिए।'

मैंने पूछा- 'जीत का?'

वे बोले- 'नहीं, हार का। जीत तो कई लोग लेते हैं, लेकिन लगातार हारकर भी आत्मविश्वास बनाए रखना बड़ा त्याग है।' इतने में ही एक नेता जोर देकर बोला- 'सर, बीजेपी चीटिंग कर रही है।'

राहुल गंभीरता से सिर हिलाकर बोले- 'हां, यह सच है। बीजेपी चुनाव नहीं लड़ती, ऑपरेशन करती है। हम लोग अभी हार का कारण खोजते रहते हैं और उधर वे अगला मुख्यमंत्री खोज लेते हैं। पता नहीं इनको लोकतंत्र में इतनी जल्दी क्या है?'

उन्होंने पंजाब का उदाहरण दिया। **बोले-** 'देखो न, पश्चिम बंगाल जीतते ही आम आदमी पार्टी के सांसद तक बीजेपी में चले गए। चड्ढा एंड कंपनी बोरिया-बिस्तर समेटकर उधर से खेलने लगी। अभी कल तक साथ बैठकर क्रांति की बातें करते थे, आज गा रहे हैं- हमारे अंगने में तुम्हारा क्या काम है।'

उसी समय टीवी पर प्रधानमंत्री मोदी की अपील चल रही थी- पेट्रोल बचाइए, अनावश्यक विदेश यात्राएं टालिए, सोना कम खरीदिए, देशहित में संयम बरतिए।

राहुल जोर से बोले- 'ये क्या उपदेश है? आदमी पेट्रोल भी न जलाए, विदेश भी न जाए, सोना भी न खरीदे- फिर लोकतंत्र बचेगा कैसे?'

मैंने टोका, 'वैश्विक संकट का समय है। यह विदेशी मुद्रा बचाने की कोशिश है।'

वे गरजकर बोले- 'तो फिर कांग्रेस इसका विरोध करेगी। हर कांग्रेसी एक-एक किलो सोना खरीदेगा। यही हमारा लोकतांत्रिक प्रतिरोध होगा।'

मैंने कहा, 'इतना सोना आएगा कहां से?'

वे मुस्कुराए और बोले- 'अरे भाई, आलू से। हम इतना आलू उगाएंगे कि इधर से आलू डालेंगे और उधर से सोना निकलेगा।'

फिर विदेश यात्रा का मुद्दा आया। मैंने कहा, 'प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि गैर-जरूरी विदेशी यात्राएं टालिए।'

राहुल भावुक होकर बोले- 'देखिए, चुनाव हारने के बाद विदेश जाना मानसिक स्वास्थ्य का विषय है। हारने के बाद विदेश जाना नेता का मौलिक अधिकार है। अगर यहीं रहे तो हर गली, हर पोस्टर, हर एग्जिट पोल उसे डिप्रेशन में डाल देगा। विदेश जाकर आदमी खुद को फिर से खोजता है।

मैंने पूछा, 'कहां खोजता है?' वे बोले 'कभी बैंकॉक में, कभी लंदन में, कभी इटली में। लोकतंत्र की आत्मा बहुत वैश्विक होती है।'

'वर्क फ्रॉम होम पर आपका क्या विचार है'- **मैंने पूछा।**

राहुल ने तपाक से कहा- 'वर्क फ्रॉम होम लागू करो।' मैं चौंका- 'राजनीति में भी?'

वे बोले- 'क्यों नहीं? देखिए, कांग्रेस में ऐसा कौन-सा उत्पादन होता है जिसके लिए रोज ऑफिस जाना पड़े? घर में डॉगी के साथ खेलिए, दो-तीन ट्वीट कर दीजिए, शाम को दो नेताओं को डांट दीजिए, संगठन चल जाता है।'

मुझे लगा भारत का कॉर्पोरेट सेक्टर अभी कांग्रेस की राजनीति से बहुत पीछे है।

मैंने जाते-जाते पूछा- 'प्रधानमंत्री की अपीलों पर आपका अंतिम विचार?'

राहुल कुर्सी से उठे, खिड़की की ओर देखा और दार्शनिक मुद्रा में बोले- 'देखिए, मोदी जी देश को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि देश आत्म-मनोरंजक बना रहे। जनता पेट्रोल बचाएगी तो घूमेगी कैसे? सोना नहीं खरीदेगी तो शादी में दिखाएगी क्या? विदेश नहीं जाएगी तो इंस्टाग्राम पर डालेगी क्या?'

फिर वे थोड़ा रुककर बोले- 'हालांकि एक बात माननी पड़ेगी। कांग्रेस चाहे विरोध कितना भी करे, मोदी जी की अपीलें लोगों को समझ में जल्दी आ जाती हैं। हमारी प्रेस कॉन्फ्रेंस, इंस्टा रील से ज्यादा उनकी मेलोडी टॉफी वायरल हो जाती है।'

मैं बाहर निकला। कांग्रेस कार्यालय के बाहर एक पोस्टर लगा था- 'हार से मत घबराओ।'

नीचे छोटे अक्षरों में लिखा था- 'सेंचुरी बस आने ही वाली है।'

चलते-चलते...

कॉकरोच जनता पार्टी के मुखिया अमेरिका में बैठकर भारत की जेन जी को आलसी, निकम्मा, कामचोर और ऐसा बेरोजगार युवा बता रहा है, जो इंटरनेट का लती है। जिस देश की नई पीढ़ी यूपीआई, चंद्रयान बना रही हो। स्टार्ट-अप/यूनिकॉर्न खड़े कर रही हो। ओलंपिक में तिरंगा लहरा रही हो, उसे 'कामचोर-आलसी' कहना, अपने ही देश के युवा सपनों का अपमान करना है।

कांग्रेस की वापसी और भीतर की गुटबाजी के बीच नई नेतृत्व परीक्षा

केरल में सत्ता बदली, चुनौतियां वही

केरल में कांग्रेस नेता वीडी सतीशन ने मुख्यमंत्री पद संभालते ही नई राजनीतिक दिशा के संकेत दिए हैं। 64 वर्षों बाद पूरी कैबिनेट के साथ शपथ लेने वाली इस सरकार के सामने जहां जनहित के वादों को पूरा करने की चुनौती है, वहीं कांग्रेस की अंदरूनी गुटबाजी और सहयोगी दलों के दबाव के बीच संतुलन साधना भी आसान नहीं होगा। दूसरी ओर तमिलनाडु में विजय की ऐतिहासिक जीत के बाद नई सरकार शुरुआती विवादों में घिरती नजर आ रही है।

राधा रमण ✍ वरिष्ठ पत्रकार

केरल में चुनाव परिणाम के 14 दिन बाद आखिरकार कांग्रेस नेता वडास्सेरी दामोदरन सतीशन ने मुख्यमंत्री पद संभाल लिया है। उनके साथ 19 और लोगों ने भी मंत्री पद की शपथ ली है। इनमें कांग्रेस के 11, इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के 5 और केरल कांग्रेस (जोसेफ गुट), केरल कांग्रेस (जैकब गुट), रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी तथा कम्युनिस्ट मार्क्सवादी पार्टी से एक-एक विधायक मंत्री बने हैं। 14 विधायक पहली बार मंत्री बनाए गए हैं। मंत्रिमंडल में दो महिलाओं और अनुसूचित जाति से दो लोगों को शामिल किया गया है। खास बात यह कि राज्य में मुख्यमंत्री पद के दावेदार रहे रमेश चेन्नितला को गृह मंत्री बनाया गया है। आमतौर पर गृह विभाग मुख्यमंत्री अपने पास रखते हैं। यही नहीं, राज्य में कांग्रेस के तीसरे गुट केसी वेणुगोपाल के 7 विधायकों को मंत्रिमंडल में जगह दी गई है। कहने का मतलब यह कि राज्य की जमीनी हकीकत को देखते हुए कांग्रेस आलाकमान ने वीडी सतीशन को भले ही मुख्यमंत्री पद पर आसीन कर दिया है, उनकी तगड़ी घेराबंदी भी कर दी है। वह राज्य के मुखिया तो रहेंगे, लेकिन राज-काज चलाने के लिए उन्हें रमेश चेन्नितला और केसी वेणुगोपाल से संबंध बनाकर रखना होगा। इसके अलावा सहयोगी दलों का दबाव अलग से झेलना होगा।

सतीशन राज्य के 13वें मुख्यमंत्री बने हैं। राज्य में 64 वर्षों बाद किसी मुख्यमंत्री ने पूरी कैबिनेट के साथ शपथ ली है। इससे पहले राज्य के तीसरे मुख्यमंत्री रहे आर. शंकर ने 1962 में पूरी कैबिनेट के साथ शपथ ली थी। यह अलग बात है कि महज दो साल बाद अविश्वास प्रस्ताव पारित हो जाने के कारण उनकी सरकार गिर गई थी।

सतीशन कैसे बने केरल के किंग

एर्नाकुलम में 12 अगस्त 1964 को साधारण परिवार में जन्मे वीडी सतीशन की पहचान एक जमीनी नेता की रही है। ग्रैजुएशन करने के बाद उन्होंने वकालत की पढ़ाई की और एलएलएम किया। पढ़ाई के दौरान ही वह छात्र राजनीति में सक्रिय हो गए। कांग्रेस के छात्र संगठन भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) से जुड़ने के बाद सतीशन ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। बाद में वह यूथ कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव बने। 1996 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने उन्हें राज्य की पारावूर सीट से उम्मीदवार बनाया, लेकिन महज 1100 वोटों से हार गए। 2001 से उसी सीट से लगातार छठवीं बार विधायक हैं। इससे उनकी लोकप्रियता और जमीनी पकड़ का पता चलता है। कांग्रेस ने उन्हें 2021 में विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बनाया था। सतीशन ने पूरे प्रदेश का कई बार दौरा किया। विधानसभा में भी हमेशा मुखर रहे, लेकिन गुटबाजी से दूर रहे। यही कारण है कि इस साल कांग्रेस विधायक दल की बैठक में उन्हें महज 6 विधायकों का ही समर्थन मिला था। जनता से जुड़ाव और सहयोगी दलों के दबाव के आगे कांग्रेस आलाकमान को झुकना पड़ा।

कमजोर होती कांग्रेस में कलह... कांग्रेस में कलह और गुटबाजी सिर्फ केरल में ही नहीं है। पीछे मुड़कर देखें तो राजस्थान और छत्तीसगढ़ में उसे आपसी कलह के कारण ही सत्ता से बेदखल होना पड़ा था। मध्यप्रदेश, दिल्ली और बिहार में गुटबाजी ने ही कांग्रेस का बंटाधार किया। फिलहाल, कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस की सरकारों का हाल देख लीजिए। कर्नाटक में डीके शिवकुमार की मेहनत की फसल पर सिद्धारमैय्या राज कर रहे हैं और शिवकुमार अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। हिमाचल में अगले साल चुनाव है। वहां वीरभद्र सिंह की पत्नी प्रतिभा सिंह और बेटे विक्रमादित्य सिंह मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की नाक में दम किए हुए हैं।
केरल में भी वीडी सतीशन के चयन में 10 दिन का समय इसलिए लग गया कि राहुल गांधी अपने सिपहसालार केसी वेणुगोपाल को मुख्यमंत्री बनाना चाहते थे। वहां कांग्रेस उम्मीदवारों को टिकट भी वेणुगोपाल की सहमति से ही दिया गया था। वह तो भला हो वायनाड के निवासियों का जिन्होंने सड़क पर उतरकर प्रदर्शन कर दिया और कहा कि वेणुगोपाल मुख्यमंत्री बने तो वायनाड को अमेठी बना दिया जाएगा। तब जाकर कांग्रेस आलाकमान को वीडी सतीशन के नाम पर मुहर लगानी पड़ी। दरअसल, कमजोर शरीर में बीमारियां और अभावग्रस्त घर में कड़वाहट हो ही जाती है। कांग्रेस का भी यही हाल है।

पहली ही कैबिनेट बैठक में पांच प्रस्ताव पारित

वीडी सतीशन ने शपथ ग्रहण के दिन ही अपनी पहली कैबिनेट बैठक में पांच महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर मुहर लगाकर यह दिखा दिया कि उनकी सरकार जनहित के कार्यों पर कोई समझौता नहीं करेगी। इन प्रस्तावों में आगामी 15 जून से राज्य परिवहन निगम की बसों में महिलाओं की मुफ्त यात्रा तथा राज्य में बुजुर्गों के लिए एक विशेष विभाग बनाने की घोषणा शामिल है। इसके अलावा राज्य में आशा कार्यकर्ताओं का मानदेय 3 हजार रुपए तत्काल प्रभाव से बढ़ा दिया गया है। अब उन्हें हर माह 12 हजार मिलेंगे। दरअसल, कांग्रेस की अगुवाई वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) ने चुनावों के दौरान सरकार बनने पर इन तीनों कामों को करने का जनता से वादा किया था। साथ ही 2023 में 'नव केरल यात्रा' के दौरान युवा कांग्रेस नेताओं पर हुए हमलों की एसआईटी से जांच कराने और राज्य की वित्तीय स्थिति और राजकोष पर श्वेत पत्र जारी करने की मंजूरी दी गई है।

सतीशन की स्वीकार्यता... ऐसा कहा जा सकता है कि मुख्यमंत्री वीडी सतीशन की स्वीकार्यता राज्य की सभी पार्टियों में है। ऐसा इसलिए कि जब कांग्रेस के नेता उनकी राह में कांटे बिछा रहे थे, तब यूडीएफ के सहयोगी दलों ने दो टूक कह दिया कि उन्हें सतीशन के अलावा कोई स्वीकार्य नहीं है। इसलिए आखिर में थक-हारकर कांग्रेस को उनके नाम पर मुहर लगानी पड़ी। दूसरे, मुख्यमंत्री पद की शपथ से पहले जब सतीशन राज्य के निवर्तमान मुख्यमंत्री पिनराई विजयन से मिलने उनके घर गए तो विजयन परिवार सहित उनके इंतजार में घर के बाहर खड़े मिले और उनका स्वागत ऐसे किया मानो परिवार का कोई सदस्य लंबे प्रवास के बाद घर आया हो।

सतीशन के शपथ ग्रहण में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी, तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, हिमाचल के मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू और कर्नाटक के उप मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार समेत सभी दलों के नेताओं की उपस्थिति रही। इनमें पिनराई विजयन समेत पूर्व केन्द्रीय मंत्री और राज्य भाजपा के अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर शामिल थे। बहरहाल, सतीशन की असली परीक्षा तो आने वाले दिनों में होगी।

केरल की दलीय स्थिति

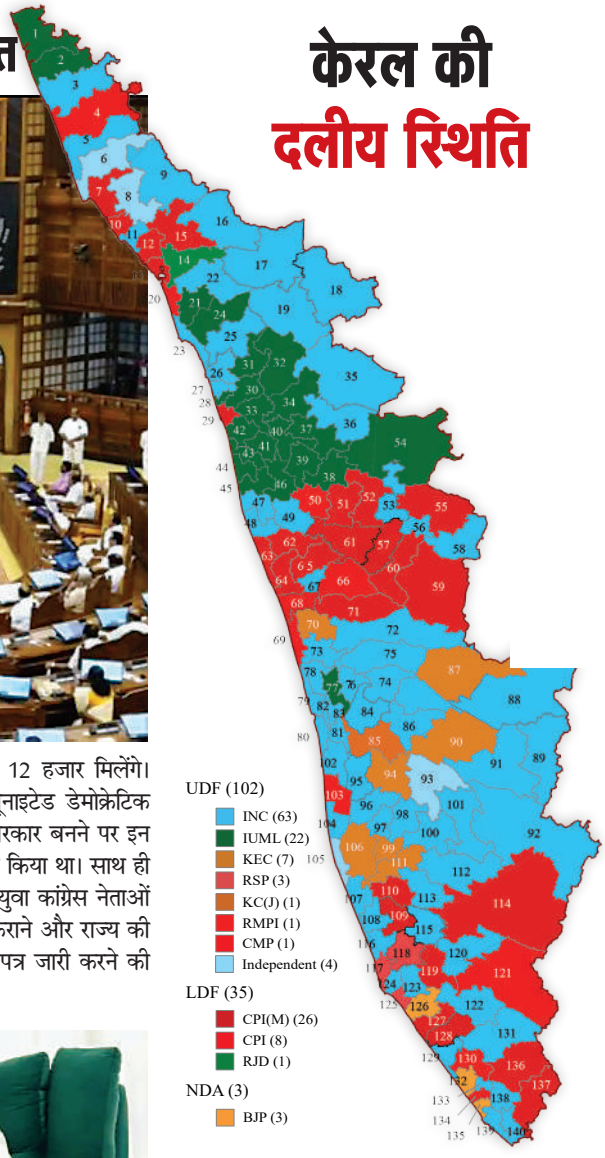

केरल के मतदाताओं ने इस बार 140 सदस्यों वाले विधानसभा के चुनाव में पिछले एक दशक से सत्ता पर काबिज वामदलों के लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) को बेदखल कर दिया। इस बार वहां मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएम) को 26, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सीपीआई) को 6 और लालू प्रसाद यादव की राष्ट्रीय जनता दल (राजद) को एक सीट पर समेट दिया। यानि एलडीएफ को कुल 35 सीटों पर विजय मिली। दूसरी तरफ कांग्रेस की अगुवाई वाले यूडीएफ को 102 सीटें देकर सरकार बनाने का जनादेश दिया। यूडीएफ के दलों में कांग्रेस को 63, इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग को 22, केरल कांग्रेस (जोसेफ गुट) को 7, जबकि केरल कांग्रेस (जैकब गुट) को एक, रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी को 3, सीएमपी को एक, आरएमपी को एक और यूडीएफ समर्थित निर्दलीयों को 4 सीटों पर विजय मिली है। राज्य में भाजपा को पहली बार तीन सीटें मिली हैं। कहने का मतलब यह कि बिना गठबंधन के किसी एक दल के लिए सरकार बनाना संभव नहीं था।

तमिलनाडु में विजय, सिर मुंडाते ही ओले गिरे

तमिलनाडु में पिछले 64 वर्षों से डीएमके और एआईडीएमके के बीच घूमती सत्ता की राजनीति को पीछे छोड़ पहली बार चुनावी मैदान में उतरे और 108 सीटों पर ऐतिहासिक जीत के बाद मुख्यमंत्री बने सी जोसेफ विजय को सिर मुड़ाते ही ओले पड़े हैं। दरअसल, विजय ने अपने ज्योतिषी राधान पंडित को अपना ओएसडी नियुक्त कर दिया था, जिसका चौतरफा विरोध होने लगा। विपक्ष के अलावा सत्ता पक्ष के लोगों ने भी खुलकर इसकी आलोचना की थी। आखिरकार, विजय झुके और राधान पंडित को पद से हटाया।

इसके अलावा, तमिलनाडु की क्षेत्रीय पार्टी अम्मा मक्कल मुनेत्र कड़गम के प्रमुख दिनाकरण ने विजय पर हॉर्स ट्रेडिंग का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि विजय कहते हैं कि वह घोड़े की रफ्तार से काम करेंगे, जबकि उन्होंने घोड़ा ही मोलभाव करके खरीदा है। दरअसल, दिनाकरण की पार्टी के एकमात्र विधायक एस. कामराज ने बिना शर्त विजय की पार्टी तमिलगा वेट्री कड़गम को समर्थन दिया है। हालांकि दिनाकरण ने कामराज को पार्टी से निष्कासित कर दिया है और अब उनके टीवीके में शामिल होने में कोई कानूनी अड़चन नहीं है। विजय पर एआईडीएमके और डीएमके ने भी हॉर्स ट्रेडिंग के आरोप लगाए हैं। इससे पहले, विजय के शपथ ग्रहण समारोह में तमिलनाडु के राज्य गीत 'तमिल थाई वाजथु' से पहले राष्ट्र गान 'जन गण मन' और 'वंदेमातरम्' बजाने पर भी विवाद हो गया। सहयोगी दलों के अलावा डीएमके ने भी इस पर आपत्ति जताई। विरोध करने वालों का कहना है कि राज्य के सम्मान के लिए तमिल राज्य गीत सबसे पहले बजाया जाना चाहिए था। हालांकि मुख्यमंत्री का कहना है कि शपथ समारोह के मेजबान राज्यपाल थे और उनके कहने पर ही ऐसा किया गया। इसमें राज्य सरकार की कोई भूमिका नहीं है।

तमिलनाडु विधानसभा में कुल 234 सीटें हैं। इनमें विजय की तमिलगा वेट्री कड़गम को 108 सीटों पर विजय मिली। विजय खुद दो सीटों से निर्वाचित हुए थे। इसलिए उन्हें एक सीट छोड़नी होगी। वहां बहुमत के लिए 118 विधायकों के समर्थन की दरकार है। इसलिए राज्यपाल विश्वनाथ आर्लेकर ने उनको सरकार बनाने के लिए काफी इंतजार करवाया। सबसे पहले कांग्रेस ने अपने पांच विधायकों का समर्थन विजय को दिया। फिर इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग, सीपीआई, सीपीआईएम, वीसीके ने अपने 2-2 विधायकों का समर्थन दिया। बता देना जरूरी है कि यह सभी दल डीएमके के साथ गठजोड़ में चुनाव मैदान में थे।

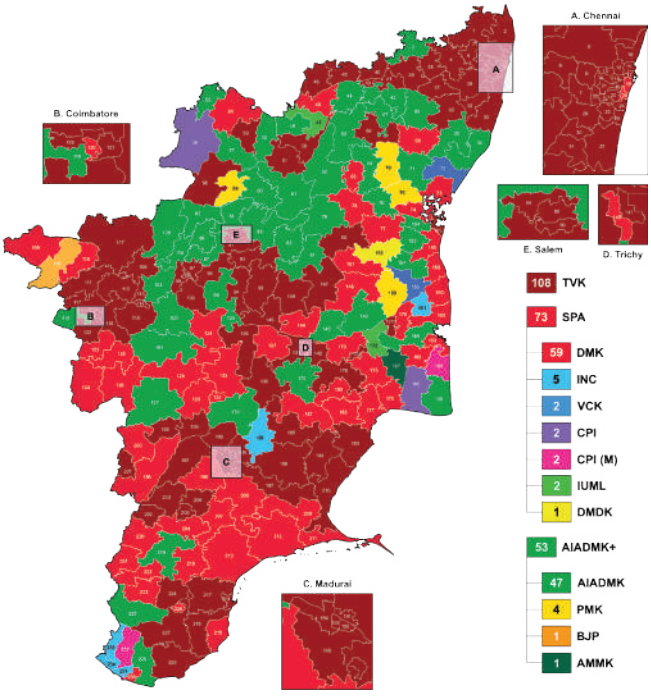

इस तरह विजय को कुल 120 विधायकों का समर्थन मिला। लेकिन फ्लोर टेस्ट में विजय को कुल 144 वोट मिले। एआईडीएमके के 23 और अम्मा मक्कल मुनेत्र कड़गम के एक विधायक विजय के पाले में आ गए। डीएमके को इस बार 59 सीटें ही मिली थीं, जबकि एआईडीएमके को 47 सीटें मिली थीं। कयास हैं कि आनेवाले दिनों में एआईडीएमके कुछ और विधायक भी विजय के पाले में जा सकते हैं, ताकि उन पर दल बदल कानून प्रभावी न हो सके। राज्य में भाजपा को महज एक सीट मिली है।

पेपर लीक प्रबंधन कला : मेहनत छोड़ो, नेटवर्क जोड़ो!

बलवंत राज मेहता, वरिष्ठ व्यंग्यकार

राजस्थान कभी वीरों, लोकसंस्कृति और शिक्षा नगरी के लिए पहचाना जाता था, लेकिन अब लगता है कि यहां पेपर प्रबंधन कला भी तेजी से विकसित हो रही है। नीट जैसी कठिन परीक्षा, जिसमें लाखों विद्यार्थी दिन-रात एक कर देते हैं, वहां कुछ लोगों ने पढ़ाई का नया शॉर्टकट खोज लिया। वह है गेस पेपर। मजेदार बात यह रही कि पेपर को सीधे लीक नहीं कहा गया। उसे बड़े संस्कारी अंदाज में गेस पेपर बताया गया, ताकि पकड़े जाने पर कहा जा सके, हम तो सिर्फ भविष्यवाणी कर रहे थे! और भविष्यवाणी भी ऐसी कि 120 सवाल हूबहू निकल आए। ज्योतिषाचार्य भी इतनी सटीक भविष्यवाणी करने से पहले दो बार कुंडली देख लें। अब जांच एजेंसियां नासिक, गुरुग्राम, जयपुर और सीकर के बीच तार जोड़ रही हैं। ऐसा लग रहा है जैसे कोई मेडिकल प्रवेश परीक्षा नहीं, बल्कि देशव्यापी फ्रेंचाइजी नेटवर्क चल रहा हो। कहीं टेलीग्राम यूनिवर्सिटी सक्रिय है तो कहीं व्हाट्सऐप कोचिंग सेंटर। सबसे ज्यादा चोट उन ईमानदार विद्यार्थियों को लगी है, जिन्होंने किताबों पर भरोसा किया, न कि सीक्रेट पीडीएफ पर। अब छात्र पढ़ाई से ज्यादा यह समझने लगे हैं कि सफलता के लिए मेहनत जरूरी है या सही व्हाट्सऐप ग्रुप में होना।

रोमियो रडार ऑन है, संभल जाइए!

जोधपुर में अब मनचलों के दिन वैसे ही कठिन हो गए हैं, जैसे बिना हेलमेट वाले बाइक चालक के सामने ट्रैफिक पुलिस। फर्क बस इतना है कि इस बार चालान जेब का नहीं, इज्जत का कट रहा है। पुलिस कमिश्नरेट पश्चिम की कालिका पेट्रोलिंग टीम ने सादी वर्दी में ऐसा डिकॉय ऑपरेशन चलाया कि फब्तियां कसने वाले खुद फंस गए। जो युवक अब तक खुद को फिल्मी हीरो समझकर मैडम...एक मिनट! कहकर सड़कें नापते थे, वे अचानक पुलिस की जीप में बैठकर जीवन दर्शन समझने लगे। शहर के चौराहों पर अब नई दहशत है। भाई, सामने वाली सच में लड़की है या पुलिस की सरप्राइज पैकेज टीम? इस कार्रवाई ने यह भी साबित कर दिया कि तकनीक के दौर में सीसीटीवी से ज्यादा खतरनाक सादी वर्दी होती है। उधर शरीफ लोग खुश हैं कि कम से कम अब बेटियां बिना फ्री कमेंट्री के कॉलेज जा सकेंगी। लगता है, जोधपुर में अब रोमियोगिरी का मौसम बदल चुका है।

हरी मिर्च के बाद अब गोभी की बारी!

राजस्थान में अब सब्जियों की पहचान केवल स्वाद से नहीं, सामान से भी होने लगी है। ब्यावर में गोभी के नीचे भारी मात्रा में डोडा पोस्त मिला, तो लोगों को पुरानी घटनाएं याद आ गईं, जब कहीं हरी मिर्च की बोरियों में नशा छिपाकर ले जाया गया, तो कहीं प्याज और फलों की आड़ में तस्करी पकड़ी गई। लगता है तस्करों ने कृषि मंडियों को क्रिएटिव लॉजिस्टिक्स हब मान लिया है। अब गृहिणी सब्जी खरीदते समय यह सोचकर डर जाए कि गोभी ताजी है या मालदार! बेचारा किसान मंडी में मेहनत से सब्जी उगाए और तस्कर उसी सब्जी को अपराध का कवच बना लें। अच्छी बात यह है कि पुलिस की नजर अब केवल सड़क पर दौड़ते वाहनों पर नहीं, बल्कि गोभी के पत्तों के नीचे भी पहुंच रही है। राजस्थान में नशे के खिलाफ लड़ाई अब खेत, खलिहान और सब्जी टोकरी तक आ पहुंची है।

रील वाला डॉन और असली पुलिस

आजकल सोशल मीडिया पर प्रसिद्धि पाने के लिए लोग क्या-क्या नहीं कर रहे। कोई ट्रेन के आगे नाच रहा है, कोई सांप पकड़कर सेल्फी ले रहा है, और अब जनाब सीधे एमडी ड्रग्स सप्लायर बन बैठे। फर्क बस इतना था कि माल असली नहीं, केवल एडिटिंग असली थी। सांचौर के युवक ने यूट्यूब से वीडियो उठाए, एआई से अपना नंबर चिपकाया और इंस्टाग्राम पर ऐसा रौब जमाया, मानो अंतरराष्ट्रीय तस्करी का ठेका उसी के पास हो। शायद उसे लगा होगा कि फॉलोअर्स बढ़ेंगे, लोग डरेंगे और रील्स वायरल होंगी। रील्स तो वायरल हुईं, लेकिन साथ में पुलिस भी ऑनलाइन हो गई। विडंबना देखिए, लड़का असली ड्रग्स से कोसों दूर था, मगर अभिनय इतना दमदार था कि पुलिस को जांच करनी पड़ गई। अब हालत यह है कि इंस्टाग्राम पर बनने वाला डॉन थाने में बैठकर असली पूछताछ का अनुभव ले रहा है। सोशल मीडिया का यह नया गणित बड़ा विचित्र है। जहां प्रतिभा से ज्यादा कांड जल्दी वायरल होता है। लेकिन युवाओं को समझना होगा कि हर रील मनोरंजन नहीं होती, कुछ सीधे जेल यात्रा का ट्रेलर भी बन जाती हैं।

कबूतरों का सपना, इंसानों का इंतज़ार

नगर परिषद बूंदी की आवास योजना अब शायद इंसानों से ज्यादा कबूतरों के लिए उपयोगी साबित हो रही है। जिन फ्लैट्स में वर्षों पहले परिवारों की हंसी गूंजनी थी, वहां आज कबूतरों की गुटरगूं सुनाई देती है। लाभार्थियों ने 2018 से 2020 के बीच पूरी रकम जमा करवाई, किसी ने बैंक से कर्ज लिया तो किसी ने ब्याज पर पैसा उठाया, लेकिन चाबी अब तक फाइलों की कैद में ही बंद है। उधर फ्लैट्स की हालत ऐसी हो गई है मानो वे भी इंतजार करते-करते थक गए हों। कहीं प्लास्टर झड़ रहा है, कहीं रेलिंग टूट रही है और कहीं गेट ही गायब हैं। रात में असामाजिक तत्वों की चहल-पहल देखकर लगता है कि भवनों का अनौपचारिक उद्घाटन हो चुका है। अब बेचारे लाभार्थी किराया भी भर रहे हैं और लोन की किस्त भी। लगता है योजना का नया नारा है घर आपका, इंतजार हमारा!

खाली हाथ लौटा 'अमेरिका फर्स्ट' : ढहती चौधराहट और भारत-चीन रिश्तों के नए संकेत

बीजिंग में टूटा ट्रंप का घमंड

बीजिंग पहुंचे डोनाल्ड ट्रंप को इस बार वह कूटनीतिक बढ़त नहीं मिली जिसकी उन्हें उम्मीद थी। चीन ने न केवल अमेरिकी दबाव को ठंडे आत्मविश्वास से टाल दिया, बल्कि दुनिया को यह संकेत भी दे दिया कि वैश्विक शक्ति संतुलन अब बदल चुका है। ट्रंप की यह यात्रा अमेरिकी चौधराहट की कमजोर पड़ती पकड़, चीन के बढ़ते आत्मविश्वास और भारत के लिए उभरते नए रणनीतिक अवसरों की कहानी बन गई है।

हरीश मलिक, वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक

दुनिया इस समय एक ऐसे विस्फोटक मोड़ पर खड़ी है जहां युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़े जा रहे, बल्कि तेल के कुओं, सेमी कंडक्टर चिप, समुद्री रास्तों, दुर्लभ खनिजों और वैश्विक सप्लाई चेन पर भी छिड़ चुके हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध अभी पूरी तरह थमा नहीं है, जिसने यूरोप की अर्थव्यवस्था हिला दी है। ईरान और पश्चिम एशिया की आग ने दुनिया की ऊर्जा सुरक्षा को संकट में डाल दिया है। ताइवान को लेकर चीन और अमेरिका के बीच तल्खी अपने चरम पर है। इस बीच कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लेकर दुर्लभ खनिजों तक नई वैश्विक होड़ छिड़ चुकी है। ऐसे खतरनाक दौर में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप लगभग नौ वर्षों बाद बड़े राजनीतिक शोर-शराबे, वैश्विक उद्यमियों के काफिले और 'अमेरिका फर्स्ट' के आक्रामक नारे के साथ बीजिंग पहुंचे।

इस बहुप्रचारित दौरे से यह उम्मीद बनाई गई कि ट्रंप चीन से कोई बड़ा व्यापारिक समझौता लेकर लौटेंगे। चीन को ईरान पर दबाव डालने के लिए राजी करेंगे। दुर्लभ खनिजों की सप्लाई सुनिश्चित करेंगे और ताइवान पर अपनी शर्तें मनवा लेंगे। लेकिन बीजिंग ने इस बार अमेरिकी चौधराहट को वह सम्मान नहीं दिया जो कभी डर की वजह से दिया जाता रहा था। ट्रंप भले ही कैमरों के सामने मुस्कुराते रहे हों, लेकिन वास्तविकता यह रही कि चीन ने उन्हें सुन तो लिया, मगर माना कुछ भी नहीं। न व्यापार युद्ध खत्म हुआ, न टैरिफ हटे, न ताइवान पर अमेरिका को कोई राहत मिली, न ही ईरान पर चीन अमेरिकी लाइन पर आया। ट्रंप जिस ऐतिहासिक सफलता का दावा कर रहे थे, वह आखिरकार प्रतीकात्मक तस्वीरों और सीमित घोषणाओं तक सिमट गई।

चीन का संदेश- अब अमेरिका अकेला सुपरपावर नहीं

असल में यह यात्रा सिर्फ ट्रंप की व्यक्तिगत विफलता नहीं है। यह अमेरिकी प्रभुत्व पर उठते नए वैश्विक सवालों का संकेत है। वही प्रभुत्व जिसने दशकों तक दुनिया को अपने आदेशों पर चलाने की कोशिश की। बीजिंग में पहली बार साफ दिखाई दिया कि अब दुनिया बदल चुकी है। अब अमेरिका अकेला सुपरपावर नहीं है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने साफ संदेश दिया कि उसके सामने ऐसा चीन खड़ा है जो उसकी आंखों में आंख डालकर बात करता है। भारत ने पहले ही जता दिया है कि वह अब किसी भी महाशक्ति के दबाव में आने वाला नहीं है और उसकी आर्थिक नाकेबंदी का जवाब भी उसी की भाषा में देता है। इस दौरे की सबसे अहम बात यह रही कि इसने भारत के लिए भी एक नया अवसर पैदा किया है। क्योंकि जब दो महाशक्तियों का टकराव थकान में बदलता है, तब एशिया में संतुलन और सहयोग की नई संभावनाएं जरूर जन्म लेंगी।

बीजिंग ने दिखाया, अब अमेरिका आदेश नहीं दे सकता

चीन दौरे में इस बार तस्वीर बिल्कुल उलट रही। ट्रंप बार-बार व्यापारिक डीलों की बात करते रहे, जबकि शी जिनपिंग लगातार संतुलन, स्थिरता और परस्पर सम्मान की भाषा बोलते रहे। यह शब्द सुनने में सामान्य लग सकते हैं, लेकिन इनके पीछे गहरे संदेश हैं। इसका मतलब चीन साफ कह रहा है कि वह अब अमेरिका को केवल बराबरी का देश मानता है, मालिक नहीं। इस चीनी सोच का सबसे बड़ा संकेत ताइवान मुद्दे पर देखने को मिला। चीन ने साफ चेतावनी दी कि अमेरिका यदि ताइवान में दखल बढ़ाता है तो परिणाम गंभीर होंगे। आश्चर्य की बात यह रही कि ट्रंप इस मुद्दे पर लगभग शांत दिखाई दिए। यह वही अमेरिका है जो कभी दुनिया के हर कोने में लोकतंत्र और सैन्य हस्तक्षेप का झंडाबरदार बना घूमता था। बीजिंग ने यह संकेत जरूर दे दिया कि एशिया अब पहले जैसा एकध्रुवीय प्रभाव स्वीकार करने को तैयार नहीं है।

चीन का बढ़ता वर्चस्व क्या संकेत देता है?

दरअसल, चीन ने पिछले एक दशक में केवल आर्थिक मोर्चे पर ही नहीं, बल्कि सैन्य, तकनीकी और भू-राजनीतिक स्तर पर भी अपने प्रभाव का तेजी से विस्तार किया है। बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, दक्षिण चीन सागर में सैन्य उपस्थिति, अफ्रीका और एशिया में निवेश तथा डॉलर के विकल्प के रूप में युआन को बढ़ावा देना इसी रणनीति का हिस्सा है। अमेरिका की आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता और पश्चिम एशिया में उलझाव ने चीन को वैश्विक मंच पर अधिक आक्रामक बनने का अवसर दिया। यही कारण है कि कई छोटे और विकासशील देशों में यह चिंता बढ़ रही है कि कहीं अमेरिकी प्रभुत्व की जगह चीनी केंद्रीकरण और आर्थिक दबाव की नई व्यवस्था तो स्थापित नहीं हो रही।

ब्रिक्स में भारत के बढ़ते कद की संभावनाएं

अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने भारत को एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में स्थापित करने का अवसर दिया है। ब्रिक्स के विस्तार के बाद भारत की भूमिका और अधिक अहम हो गई है, क्योंकि वह पश्चिम और पूर्व दोनों के साथ संवाद बनाए रखने की क्षमता रखता है। भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, डिजिटल क्षमता, जनसंख्या शक्ति और वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधि के रूप में उसकी स्वीकार्यता उसे ब्रिक्स के भीतर एक निर्णायक आवाज बना रही है। रूस और चीन भी यह समझते हैं कि भारत के बिना ब्रिक्स केवल चीन-केन्द्रित मंच बनकर रह जाएगा। यही वजह है कि आने वाले वर्षों में भारत की भूमिका केवल सदस्य देश की नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति-संतुलन के 'मध्य स्तंभ' के रूप में स्वीकार्य हो सकती है।

अमेरिका-चीन-रूस की कूटनीतिक गतिविधियों के संदेश

अमेरिका का चीन जाना, उसके बाद रूस का बीजिंग के साथ सामरिक निकटता बढ़ाना और फिर पुतिन के भारत दौरे की तैयारी यह संकेत देती है कि दुनिया में एक नई बहुध्रुवीय कूटनीति आकार ले रही है। रूस आज पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण चीन पर अधिक निर्भर दिखाई देता है, लेकिन वह भारत के साथ अपने पारंपरिक संबंधों को भी बनाए रखना चाहता है। वहीं अमेरिका भी चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए भारत को इंडो-पैसिफिक रणनीति का अहम भागीदार मानता है। यह स्थिति भारत को बड़े अवसर के साथ-साथ बड़ी जिम्मेदारी भी देती है।

ईरान संकट और विश्व व्यवस्था की नई प्रतिस्पर्धा

ईरान को लेकर पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव केवल क्षेत्रीय संघर्ष नहीं है, बल्कि वैश्विक शक्ति-संतुलन की लड़ाई का हिस्सा बन चुका है। अमेरिका और उसके सहयोगी जहां ईरान को नियंत्रित करने की नीति पर चलते रहे हैं, वहीं चीन और रूस ने तेहरान के साथ आर्थिक और सामरिक संबंध मजबूत किए हैं। इससे दुनिया दो स्पष्ट खेमों में बंटती दिखाई दे रही है। खतरा यह है कि महाशक्तियों की यह प्रतिस्पर्धा कहीं मानवता के लिए नए शीत युद्ध जैसी स्थिति न पैदा कर दे। ऊर्जा संसाधनों, व्यापारिक मार्गों और सामरिक प्रभुत्व की इस होड़ में आम नागरिकों की सुरक्षा, खाद्य संकट और वैश्विक शांति जैसे मुद्दे पीछे छूटते जा रहे हैं। यदि यही स्थिति बनी रही, तो आने वाले वर्षों में दुनिया अधिक अस्थिर और संघर्षपूर्ण हो सकती है।

G-2 अवधारणा और भारत का 'तीसरे ध्रुव' के रूप में उभार

पिछले कुछ वर्षों में 'G-2' यानी अमेरिका और चीन के बीच वैश्विक नेतृत्व साझा करने की अवधारणा पर लगातार चर्चा होती रही है। इसका अर्थ यह है कि दुनिया की राजनीति और अर्थव्यवस्था दो सबसे बड़ी शक्तियों वॉशिंगटन और बीजिंग के इर्द-गिर्द घूमने लगे। लेकिन वास्तविकता यह है कि रूस, भारत, यूरोप, पश्चिम एशिया और वैश्विक दक्षिण के जबरदस्त उभार ने इस अवधारणा को बड़ी चुनौती दी है। विशेष रूप से भारत इस व्यवस्था में 'तीसरे ध्रुव' के रूप में उभर रहा है, जो न पूरी तरह पश्चिमी खेमे में है और न ही चीन-रूस धुरी का हिस्सा। यही कारण है कि आज दुनिया केवल G-2 की ओर नहीं बढ़ रही, बल्कि एक जटिल बहुध्रुवीय व्यवस्था का निर्माण हो रहा है, जहां शक्ति का संतुलन लगातार बदलता रहेगा।

अमेरिका की चौधराहट क्यों टूट रही?

एक बड़ा सवाल यह भी है कि अमेरिकी चौधराहट टूट क्यों रही है? दरअसल, दुनिया में अमेरिकी प्रभाव घटने का सबसे बड़ा कारण डोनाल्ड ट्रंप की अति-आक्रामक विदेश नीति है। इराक, अफगानिस्तान, लीबिया और सीरिया जैसे युद्धों ने अमेरिका की नैतिक साख को नुकसान पहुंचाया। टैरिफ नीति के मोर्चे पर ट्रंप पहले भी अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर पाए हैं। दुनिया अब लोकतंत्र बहाली के नाम पर किए गए अमेरिकी हस्तक्षेपों को संदेह की नजर से देखने लगी है। दूसरी तरफ चीन ने खुद को एक वैकल्पिक आर्थिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। उसने सड़कों, बंदरगाहों, रेलवे और ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश कर एशिया और अफ्रीका में प्रभाव बढ़ाया। यही कारण है कि आज दुनिया के कई देश अमेरिका और चीन के बीच संतुलन साधने लगे हैं।

भारत-चीन रिश्तों के नए संकेत

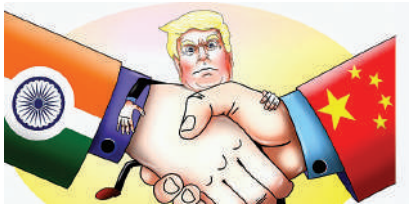

भारत के लिए यह पूरा घटनाक्रम बेहद अहम है। सबसे पहले तो यह स्पष्ट हुआ कि अमेरिका अब चीन को अकेले नियंत्रित नहीं कर सकता। इसका मतलब है कि एशिया में संतुलन की राजनीति और मजबूत होगी, जो कि भारत के हित में है। भारत लंबे समय से रणनीतिक स्वायत्तता की नीति अपनाता रहा है। उसने अमेरिका के साथ भी संबंध बनाए और रूस व चीन के साथ भी संवाद कायम रखा।

इस यात्रा का सबसे बड़ा अप्रत्यक्ष असर भारत-चीन संबंधों पर भी पड़ सकता है। जब अमेरिका चीन पर अत्यधिक दबाव बनाता है, तब बीजिंग अपनी सीमाओं और रणनीतिक क्षेत्रों में अधिक आक्रामक रुख अपनाता है। लेकिन जब वैश्विक शक्ति संतुलन अपेक्षाकृत स्थिर दिखाई देता है, तब चीन को भी क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग की जरूरत महसूस होती है। भारत और चीन दोनों एशिया की प्राचीन सभ्यताएं और उभरती आर्थिक शक्तियां हैं। दोनों ब्रिक्स, स्को और जी20 जैसे मंचों पर साथ काम कर रहे हैं। पश्चिमी आर्थिक दबावों और डॉलर आधारित वैश्विक व्यवस्था को लेकर भी दोनों देशों की कई समान चिंताएं हैं। हालांकि सीमा विवाद और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा अपनी जगह कायम हैं, लेकिन आर्थिक सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीक और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था जैसे मुद्दों पर संवाद और सहयोग की संभावनाएं आने वाले वर्षों में बढ़ सकती हैं। चीन भी यह समझने लगा है कि भारत के साथ स्थायी तनाव एशिया में उसके लिए दीर्घकालिक अस्थिरता पैदा कर सकता है।

भारत को भी फूंक-फूंक कर कदम बढ़ाने होंगे

हालांकि चीन का एक दूसरा पहलू भी है। चीन अब भी भारत का एक रणनीतिक प्रतिस्पर्धी है। उसकी विस्तारवादी नीतियां और हिंद महासागर में बढ़ती गतिविधियां भारत के लिए चिंता का विषय हैं। इसलिए भारत को अत्यधिक उत्साहित होने की जरूरत नहीं है और उसे फूंक-फूंककर कदम रखने होंगे। भारत को यह समझना होगा कि भविष्य में तकनीक, विनिर्माण, ऊर्जा और सप्लाई चेन पर नियंत्रण ही विश्व की वास्तविक शक्ति तय करेंगे। यदि भारत इस बदलती दुनिया में आत्मनिर्भर विनिर्माण, सेमीकंडक्टर, एआई और हरित ऊर्जा में तेजी से आगे बढ़ता है, तो वह अमेरिका और चीन दोनों के बीच संतुलन बनाकर सबसे बड़ा लाभ उठा सकता है।

ताइवान पर ट्रंप की चुप्पी बहुत कुछ कहती है

इस यात्रा का सबसे बड़ा राजनीतिक संकेत ताइवान पर अमेरिकी नरमी भी रही। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने ट्रंप को साफ चेतावनी दी कि ताइवान मुद्दे को गलत तरीके से संभालना संबंधों को 'खतरनाक दिशा' में ले जा सकता है। हैरानी की बात यह रही कि व्हाइट हाउस के आधिकारिक बयान में ताइवान का उल्लेख तक नहीं किया गया। यह सामान्य कूटनीतिक चूक नहीं थी। इसका अर्थ है कि अमेरिका फिलहाल चीन को उकसाने से बचना चाहता है। इससे एशिया में यह संदेश गया कि अमेरिका अब हर हाल में सैन्य टकराव के लिए तैयार नहीं है। यह चीन की बड़ी कूटनीतिक जीत थी।

एशिया के नए युग की शुरुआत में भारत-चीन की भूमिका निर्णायक

ट्रंप की बीजिंग यात्रा इतिहास में शायद किसी बड़ी डील के लिए याद न रखी जाए, लेकिन यह उस क्षण के रूप में जरूर याद की जाएगी जब दुनिया ने अमेरिकी दादागिरी को पहली बार खुलकर कमजोर पड़ते देखा। यह यात्रा की समीक्षा में लिखा जाएगा कि अब युद्ध केवल मिसाइलों से नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था, तकनीक, ऊर्जा और धैर्य से जीते जाएंगे। चीन ने इस बार अमेरिकी दबाव के सामने झुकने के बजाय संतुलित प्रतिरोध का प्रदर्शन किया। और कभी-कभी किसी महाशक्ति को रोक देना ही सबसे बड़ी जीत होती है। भारत के लिए यह बेहद अहम समय है। यदि नई दिल्ली संतुलन, आत्मनिर्भरता और रणनीतिक बुद्धिमत्ता के साथ आगे बढ़ती है, तो आने वाला दशक एशिया का दशक हो सकता है और उस एशिया में भारत और चीन दोनों की भूमिका निर्णायक होगी।

चीन को पुराना समझना अमेरिका की सबसे बड़ी भूल... संक्षेप में कहें तो डोनाल्ड ट्रंप की विफलता की जड़ यही रही कि वे अपने मन में 2017 वाले चीन को लेकर बीजिंग पहुंचे। लेकिन 2026 का चीन पूरी तरह बदल चुका है। यह अब केवल सस्ते सामान बनाने वाला देश नहीं, बल्कि दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आर्थिक और तकनीकी शक्ति है। इलेक्ट्रिक कारों से लेकर सोलर पैनल, चिप, एआई सिस्टम से लेकर रेयर अर्थ मिनरल्स तक चीन अब दुनिया की सप्लाई चेन का केंद्र बन चुका है। ट्रंप ने सोचा होगा कि वैश्विक उद्योगपतियों के बड़े प्रतिनिधिमंडल के साथ वे पुराने अंदाज में धमकी देंगे और चीन झुक जाएगा। लेकिन चीन अब अमेरिका पर पहले जैसा निर्भर नहीं है। उसने अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, पश्चिम एशिया और दक्षिण एशिया में अपने बाजार बढ़ा लिए हैं। अमेरिकी रक्षा उद्योग से लेकर टेक कंपनियों तक को चीन के दुर्लभ खनिज चाहिए। एप्पल से लेकर टेस्ला तक चीन के बाजार और विनिर्माण पर टिके हुए हैं। ऐसे में ट्रंप की धमकियां बीजिंग के लिए अब डर नहीं, बल्कि शोर बन चुकी हैं।

वैश्विक अस्थिरता और बढ़ती जीवन लागत के बीच आम परिवारों की नई चिंता

महंगाई का मौन हमला

राकेश गांधी, वरिष्ठ पत्रकार

पेट्रोल की कीमतों में बढ़ोतरी से लेकर शेयर बाजार की गिरावट तक, इन दिनों आर्थिक चर्चाओं ने आम आदमी के मन में भविष्य को लेकर नई बेचैनी पैदा कर दी है। सवाल यह है कि क्या सचमुच कोई बड़ा आर्थिक संकट आने वाला है या फिर डर और अफवाहों ने कृत्रिम महंगाई का माहौल बना दिया है?

कई बार महंगाई अचानक नहीं आती। वह चुपचाप घर में दाखिल होती है। पहले बचत कम करती है, फिर जरूरतों को सीमित करती है और अंततः भविष्य को लेकर चिंता पैदा कर देती है। इन दिनों देश में कुछ ऐसा ही माहौल महसूस किया जा रहा है। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में हुई बढ़ोतरी को लेकर चर्चाएं तेज हैं। हालांकि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। भारत इससे पहले भी कई बार तेल संकट और वैश्विक आर्थिक दबाव देख चुका है। लेकिन इस बार फर्क केवल कीमतों का नहीं, बल्कि लोगों के मन में बढ़ती आर्थिक असुरक्षा का है।

दरअसल, पेट्रोल केवल वाहन चलाने का खर्च नहीं बढ़ाता। उसका असर धीरे-धीरे पूरे बाजार पर दिखाई देता है। परिवहन महंगा होता है तो सब्जियों से लेकर निर्माण सामग्री तक हर चीज की लागत बढ़ने लगती है। यही वजह है कि आम आदमी को लगता है कि उसकी आय वहीं ठहरी है, जबकि खर्च लगातार बढ़ते जा रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में खुदरा महंगाई कई बार नियंत्रित दिखाई दी, लेकिन स्कूल फीस, इलाज, किराया और घरेलू जरूरतों का खर्च लगातार बढ़ता गया है। एक मध्यमवर्गीय परिवार, जिसकी आय पांच साल पहले संतुलित मानी जाती थी, आज उसी आय में ईएमआई, बच्चों की पढ़ाई और रसोई का बजट संभालने के लिए लगातार समझौते कर रहा है।

हालांकि केवल पेट्रोल के कुछ रुपए बढ़ जाने से अर्थव्यवस्था संकट में चली जाएगी, ऐसा मानना भी अतिशयोक्ति होगी। दुनिया के कई देशों की तुलना में भारत की स्थिति अभी भी अपेक्षाकृत मजबूत मानी जा रही है। अमेरिका और यूरोप के कई देश ऊंची ब्याज दरों, भारी कर्ज और उत्पादन संकट से जूझ रहे हैं। चीन की अर्थव्यवस्था भी अपेक्षित गति नहीं पकड़ पा रही। ऐसे माहौल में भारत अभी भी दुनिया की तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में गिना जा रहा है। फिर भी सवाल उठता है कि यदि स्थिति इतनी खराब नहीं है तो लोगों में चिंता क्यों बढ़ रही है?

तेल की आग और बाजार की मनोवैज्ञानिक हलचल

होर्मूज जलमार्ग में बढ़ते तनाव और वैश्विक ईंधन संकट का असर अब दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं पर दिखाई देने लगा है। कई देशों में पेट्रोल और डीजल की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं। भारत भी इससे पूरी तरह अछूता नहीं रह सकता था। हालांकि वैश्विक परिस्थितियों की तुलना में भारत की स्थिति फिलहाल अपेक्षाकृत संतुलित मानी जा रही है। इसके बावजूद देश के भीतर महंगाई को लेकर चिंता अधिक इसलिए भी महसूस होती है, क्योंकि यहां आर्थिक मुद्दों पर सोशल मीडिया और राजनीतिक बयानबाजी कई बार वास्तविक स्थिति से अधिक भय का माहौल तैयार कर देती है।

असल समस्या केवल वास्तविक महंगाई नहीं, बल्कि आर्थिक मनोविज्ञान भी है। किसी दिन शेयर बाजार गिरता है तो अगले ही पल मंदी की आशंकाएं सोशल मीडिया पर छा जाती हैं। कहीं युद्ध की खबर आती है तो बाजार में डर बढ़ जाता है। कई व्यापारी भी भविष्य की आशंका को देखते हुए पहले ही कीमतें बढ़ाने लगते हैं। इस तरह वास्तविक और मनोवैज्ञानिक दबाव मिलकर कृत्रिम महंगाई जैसा माहौल तैयार कर देते हैं।

भारत में अक्सर देखा जाता है कि पेट्रोल या डीजल की कीमतों में मामूली वृद्धि के बाद कई वस्तुओं और सेवाओं के दाम आवश्यकता से अधिक बढ़ा दिए जाते हैं। ट्रांसपोर्ट महंगा होने का हवाला देकर सब्जियों से लेकर निर्माण सामग्री तक के दाम बढ़ जाते हैं, जबकि कई मामलों में वास्तविक लागत वृद्धि इतनी बड़ी नहीं होती। छोटे शहरों में ऑटो किराया बढ़ जाता है, ऑनलाइन डिलीवरी शुल्क बढ़ जाता है और स्थानीय दुकानदार भी भविष्य की आशंका का हवाला देकर कीमतें ऊपर कर देते हैं। यही वह बिंदु है जहां वास्तविक महंगाई और अवसरवादी मूल्यवृद्धि एक-दूसरे में घुलने लगती हैं।

नौकरी बचाने की चिंता, भविष्य बनाने की जंग

▪ रोजगार को लेकर भी चिंता बढ़ रही है। तकनीक और एआई के विस्तार ने कई क्षेत्रों में नई संभावनाएं पैदा की हैं, लेकिन साथ ही नौकरी की असुरक्षा की भावना भी बढ़ाई है। बड़ी कंपनियां लागत घटाने के लिए ऑटोमेशन की ओर बढ़ रही हैं। आईटी, मीडिया और सेवा क्षेत्र में समय-समय पर छंटनी की खबरें सामने आती रही हैं। ऐसे में युवाओं के सामने केवल डिग्री नहीं, बल्कि लगातार नए कौशल सीखने की चुनौती भी खड़ी हो रही है।

▪ यह वही पीढ़ी है जिसने बेहतर भविष्य की उम्मीद में शिक्षा ऋण लिया, महंगे शहरों में करियर शुरू किया और अब बढ़ती लागत तथा अस्थिर रोजगार के बीच खुद को फंसा हुआ महसूस कर रही है। यही कारण है कि आर्थिक चिंता अब केवल गरीब वर्ग तक सीमित नहीं रही, बल्कि शिक्षित मध्यम वर्ग भी असुरक्षा महसूस करने लगा है।

'श्रिंकफ्लेशन' : जब सामान वही, मात्रा कम

▪ महंगाई केवल वह नहीं है जो कीमतों में बढ़ती हुई दिखती है, बल्कि वह भी है जो चुपके से वजन कम कर देती है। इन दिनों बाजार में 'श्रिंकफ्लेशन' का चलन बढ़ा है। बिस्कुट, नमकीन, साबुन और अन्य घरेलू सामानों की कीमतें तो वही रहती हैं, लेकिन पैकेट के अंदर का वजन 10 से 20 प्रतिशत तक कम कर दिया जाता है। आम उपभोक्ता को लगता है कि वह अब भी पुराने दाम पर सामान खरीद रहा है, लेकिन हकीकत में वह उसी पैसे में कम सामग्री घर ला रहा होता है। यह अदृश्य कटौती मध्यम वर्ग की जेब पर वह प्रहार है, जिसका अहसास उसे महीने के अंत में तब होता है जब राशन उम्मीद से पहले खत्म होने लगता है। ऐसे में अब यह बहस भी तेज हो रही है कि क्या सरकार को पैकेजिंग और मात्रा संबंधी नियमों को और पारदर्शी बनाना चाहिए, ताकि उपभोक्ता आसानी से समझ सके कि वह वास्तव में कितनी मात्रा खरीद रहा है।

विकास के दावे बनाम घर का बिगड़ता बजट

इन दिनों शेयर बाजार की गिरावट को लेकर भी कई तरह की बातें हो रही हैं। लेकिन बाजार में उतार-चढ़ाव कोई नई घटना नहीं है। भारतीय शेयर बाजार पहले भी कई बार ऊपर-नीचे होता रहा है। इस बार गिरावट के पीछे विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली को बड़ा कारण माना जा रहा है। वैश्विक अस्थिरता और अमेरिका में बढ़ती ब्याज दरों के दबाव के चलते विदेशी निवेशक उभरते बाजारों से पैसा निकाल रहे हैं। इसका असर भारत पर भी दिखाई देता है। हालांकि इसका अर्थ यह नहीं कि भारतीय अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो रही है।

पिछले कुछ वर्षों में एक बड़ा बदलाव यह भी आया है कि अब घरेलू निवेशकों की भागीदारी काफी बढ़ चुकी है। एसआईपी और छोटे निवेशकों ने बाजार को पहले की तुलना में अधिक स्थिरता दी है। यही कारण है कि विदेशी बिकवाली के बावजूद भारतीय बाजार पूरी तरह टूटता हुआ नहीं दिखाई देता। लेकिन, आम आदमी की वास्तविक चिंता शेयर बाजार से ज्यादा रोजमर्रा की जिंदगी को लेकर है। स्कूल फीस बढ़ रही है। इलाज महंगा हो रहा है। घर चलाने का खर्च लगातार बढ़ रहा है। मध्यम वर्ग की सबसे बड़ी परेशानी यही है कि उसकी आय और खर्च के बीच का अंतर धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। आर्थिक विकास के बड़े आंकड़े भी कई बार लोगों को अपने जीवन से जुड़े हुए महसूस नहीं होते।

यही वजह है कि अब सवाल केवल विकास दर का नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता का भी उठने लगा है। यदि अर्थव्यवस्था मजबूत है तो रोजगार में स्थिरता क्यों नहीं दिख रही? यदि निवेश बढ़ रहा है तो मध्यम वर्ग की बचत क्यों घट रही है? केवल एक्सप्रेस-वे, निवेश सम्मेलन और शेयर बाजार के रिकॉर्ड आर्थिक मजबूती का अंतिम प्रमाण नहीं हो सकते। जब तक आम परिवार अपने भविष्य को सुरक्षित महसूस नहीं करेगा, तब तक विकास के दावे अधूरे लगते रहेंगे।

असली संकट अर्थव्यवस्था नहीं, भरोसे का है

ऐसे समय में आम आदमी के सामने सबसे बड़ी चुनौती केवल महंगाई नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन बनाए रखना भी है। डर और अफवाहों के इस दौर में जल्दबाजी से लिए गए आर्थिक फैसले कई बार नुकसान बढ़ा देते हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि खर्च और बचत के बीच संतुलन बनाना, अनावश्यक दिखावे से बचना और बदलते समय के अनुसार खुद को कौशल के स्तर पर तैयार करना आने वाले समय की सबसे बड़ी सुरक्षा बन सकता है। लेकिन, केवल नागरिकों की सावधानी पर्याप्त नहीं होगी। सरकार और बाजार व्यवस्था की जिम्मेदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। ईंधन पर कर ढांचे को संतुलित रखना, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों पर प्रभावी निगरानी और रोजगार सृजन को प्राथमिकता देना अब केवल आर्थिक नहीं, सामाजिक आवश्यकता भी बनता जा रहा है।

? भविष्य को लेकर सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या यह स्थिति किसी बड़े आर्थिक संकट की ओर संकेत है? संभवतः अभी ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। भारत की सबसे बड़ी ताकत उसका विशाल घरेलू बाजार, युवा आबादी और तेजी से बढ़ता डिजिटल ढांचा है। हरित ऊर्जा, विनिर्माण, रक्षा उत्पादन और तकनीकी सेवाओं जैसे क्षेत्रों में अभी भी बड़े अवसर दिखाई दे रहे हैं। लेकिन इसके साथ यह भी उतना ही जरूरी है कि विकास का लाभ समाज के निचले और मध्यम वर्ग तक वास्तविक रूप से पहुंचे। आज की स्थिति को शायद एक वाक्य में इस तरह समझा जा सकता है, देश की अर्थव्यवस्था आंकड़ों में मजबूत दिखाई दे सकती है, लेकिन घर की अर्थव्यवस्था लगातार दबाव में है।

संघर्षों में तपकर संवेदनशील चेहरा

ऐसा जननेता, जिसने संघर्षों को अपनी त

राजस्थान की राजनीति में कई चेहरे आते हैं, लेकिन कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो अपने पद से नहीं, बल्कि अपने व्यवहार, संवेदनाओं और संघर्षों से लोगों के दिलों में जगह बनाते हैं। राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत उन्हीं जननेताओं में शामिल हैं, जिनकी पहचान सत्ता से ज्यादा संवेदनशीलता और जनसेवा से बनी है।

आज भले ही वे राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री के महत्वपूर्ण पद पर हों, लेकिन उनका जीवन संघर्षों की ऐसी लंबी कहानी है, जिसने उन्हें आमजन के दर्द को समझना सिखाया।

यही कारण है कि आज जब कोई गरीब, किसान, मजदूर या जरूरतमंद व्यक्ति उनसे मिलता है तो उसे एक मंत्री नहीं, बल्कि अपना आदमी नजर आता है। साथ ही जनता के आशीर्वाद से लगातार दूसरी बार विधायक भी बने।

सरकारी
शुरू हुआ सं

कैबिनेट मंत्री बनने वाले अविनाश
जैतारण के सरकारी विद्यालय से प्राप
करना आसान नहीं था, लेकिन उन्होंने
नहीं बनने दिया।

जोधपुर जाकर उन्होंने उच्च शि
पूरी की, साथ ही एमए और बीपीए
आर्थिक जिम्मेदारियां भी थीं। ऐसे
ठेकेदारी की।

उन्होंने कभी किसी काम को
जीवन की वास्तविकताओं के
कारण आज भी वे आम
आसानी से समझ ले

संघर्षों ने सिखाया लोगों का दर्द समझना

- अविनाश गहलोत का पूरा जीवन इस बात का उदाहरण है कि संघर्ष इंसान को कमजोर नहीं, बल्कि संवेदनशील और मजबूत बनाते हैं। जिन कठिनाइयों को उन्होंने खुद महसूस किया, वही आज उन्हें लोगों की समस्याओं के प्रति ज्यादा गंभीर बनाती हैं।
- साइकिल से सफर करने वाला युवक आज भले ही मंत्री बन गया हो, लेकिन उसके भीतर का संवेदनशील इंसान आज भी वैसा ही है। शायद यही कारण है कि जनता उन्हें केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि उम्मीद और भरोसे के रूप में देखती है।
- संघर्षों की आग में तपकर निकला यह व्यक्तित्व आज राजस्थान की राजनीति में जनसेवा, संवेदनशीलता और सादगी की मजबूत पहचान बन चुका है।

संस्कारों ने बनाया संवेदनशील व्यक्तित्व

अविनाश गहलोत का जन्म एक शिक्षित परिवार में हुआ। उनके पिता नाथूराम गहलोत प्रधानाध्यापक पद से रिटायर्ड हुए हैं। माता पाना देवी ने परिवार को संस्कारों और सादगी की सीख दी। पत्नी मीरा गहलोत हमेशा उनके साथ खड़ी रहती है। उनके दो बच्चे हैं। अविनाश गहलोत के परिवार में बचपन से ही ईमानदारी, मेहनत और दूसरों की मदद करने का वातावरण रहा।

गांव के माहौल में पले-बढ़े अविनाश गहलोत ने बहुत करीब से अभाव और संघर्ष देखे। आज भी वे गरीबों की तकलीफ को केवल सुनते नहीं, बल्कि उसे महसूस भी करते हैं। उनके पिता अक्सर कहते थे कि जीवन में कितना भी बड़ा मुकाम हासिल कर लो, लेकिन इंसानियत और विनम्रता कभी नहीं छोड़नी चाहिए। यही सीख आज भी उनके व्यक्तित्व में साफ दिखाई देती है।

अविनाश गहलोत अच्छे स्पोर्ट्समैन भी

मंत्री अविनाश गहलोत एक अच्छा स्पोर्ट्समैन भी है। वे क्रिकेट व हॉकी के शौकीन है व अच्छे खिलाड़ी भी है। जब भी समय मिलता है, इन खेलों के लिए समय निकालते हैं और अन्य खेलों में भी रुचि रखते है।

बना जन सेवा का ... अविनाश गहलोत

ाकत बनाया और सेवा को जीवन का उद्देश्य

स्कूल से घर्षों का सफर

ा गहलोत ने अपनी शुरुआती शिक्षा त की। सीमित संसाधनों के बीच पढ़ाई परिस्थितियों को कभी अपनी कमजोरी

क्षा प्राप्त की। एलएलबी की पढ़ाई एड भी किया। लेकिन पढ़ाई के साथ में उन्होंने कपड़ों की दुकान चलाई,

छोटा नहीं माना। यही संघर्ष उन्हें करीब लेकर गया। शायद इसी आदमी की परेशानियों को ते हैं।

जहां जाते हैं, लोगों से भावनात्मक रिश्ता बन जाता है

- राजनीति में अक्सर नेताओं और जनता के बीच दूरी दिखाई देती है, लेकिन अविनाश गहलोत की पहचान अलग है। वे केवल चुनाव के समय लोगों के बीच नहीं जाते, बल्कि हर परिस्थिति में साथ खड़े दिखाई देते हैं।
- क्षेत्र में किसी परिवार में दुःख हो, किसी किसान को परेशानी हो या किसी गरीब को मदद की जरूरत वे हर जगह मौजूद रहते हैं। यही कारण है कि लोग उन्हें नेता कम और परिवार का सदस्य ज्यादा मानते हैं।
- उनकी सादगी भी लोगों को प्रभावित करती है। वे शाकाहारी हैं, घर का बना भोजन पसंद करते हैं और साधारण जीवनशैली में विश्वास रखते हैं। हॉकी और क्रिकेट के शौकीन अविनाश गहलोत युवाओं को खेल और सकारात्मक जीवन की प्रेरणा भी देते हैं।

जंजीर से जीवन अभियान का संदेश

- सामाजिक न्याय विभाग की ओर से जंजीर से जीवन अभियान चलाया जा रहा है, इसमें ऐसे लोगों का इलाज करवाकर मुख्य धारा से जोड़ रहे हैं, जिन्हें समाज-परिवार के लोग जंजीरों व बेड़ियों में बांधकर रख रहे हैं। 100 से अधिक लोगों को जंजीरों से मुक्ति दिलाई जा चुकी है।

सत्ता नहीं, सेवा को बनाया पहचान

- अविनाश गहलोत की सबसे बड़ी विशेषता यह मानी जाती है कि वे राजनीति को सत्ता का माध्यम नहीं, बल्कि सेवा का अवसर मानते हैं। मंत्री बनने के बाद भी उनकी कार्यशैली में कोई बदलाव नहीं आया।
- जयपुर स्थित सिविल लाइंस निवास पर रोजाना जनसुनवाई होती है। यहां दूर-दूर से लोग अपनी समस्याएं लेकर पहुंचते हैं। कोई बुजुर्ग पेंशन की समस्या लेकर आता है, कोई गरीब इलाज की उम्मीद लेकर, तो कोई छात्र अपनी परेशानी लेकर। मंत्री गहलोत हर व्यक्ति की बात गंभीरता से सुनते हैं और अधिकारियों को तुरंत समाधान के निर्देश देते हैं।
- इसी तरह वे हर सप्ताह जैतारण क्षेत्र में भी समय बिताते हैं। गांवों में जाकर लोगों से मिलना, उनकी समस्याएं सुनना और समाधान करवाना उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है।

- अविनाश गहलोत केवल राजस्थान तक सीमित नेता नहीं रहे। पार्टी के निर्देश पर वे देश के कई राज्यों में भाजपा के लिए चुनाव प्रचार किया। दिल्ली, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, ओडिशा, बिहार और कर्नाटक जैसे राज्यों में गए और महीनों तक वहाँ रहकर पार्टी प्रत्याशियों में पक्ष में प्रचार किया।

संघ के संस्कारों ने दी सेवा की प्रेरणा

- अविनाश गहलोत विश्व हिंदू परिषद से भी जुड़े रहे। उन्होंने हिंदुत्व चेहरे के रूप में अपनी पहचान कायम की।
- गरीब, दलित, पिछड़े और जरूरतमंद लोगों के लिए काम करने का भाव उनमें बचपन से रहा है। यही कारण है कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय की जिम्मेदारी संभालते हुए वे संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ काम कर रहे हैं। वे मानते हैं कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचना ही असली जनसेवा है।

समाज सेवा में अग्रणी एजीएफ... अविनाश गहलोत फाउंडेशन की ओर से एंबुलेंस सेवा जारी है। इस एंबुलेंस से दुर्घटनाग्रस्त व जरूरतमंदों मरीजों उपचार के लिए निशुल्क अन्य अस्पतालो तक लाने ले जाने की व्यवस्था रहती है। फाउंडेशन की ओर से कई जगह पर सामाजिक कार्य भी किया जा रहे हैं।

छोटी यात्रा से शुरू हुआ बड़ा राजनीतिक सफर

अविनाश गहलोत की राजनीतिक यात्रा भी संघर्षों से होकर गुजरी। वर्ष 2010 में उन्होंने नगर पालिका अध्यक्ष का चुनाव भारतीय जनता पार्टी के कमल निशान पर लड़ा, लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा। यह हार उनके लिए निराशा नहीं, बल्कि सीख बन गई।

उन्होंने संगठन में सक्रिय रहकर लगातार काम जारी रखा। नमो ऐप के विधानसभा संयोजक, भाजपा युवा मोर्चा शहर अध्यक्ष, भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य तथा भाजपा मीडिया प्रभारी विधानसभा जैतारण जैसे कई महत्वपूर्ण दायित्व निभाए। सामाजिक जीवन में भी वे लगातार सक्रिय रहे। माली समाज संस्थान के सचिव, व्यापार मंडल जैतारण के सचिव और माली सैनी विकास संस्थान राजस्थान के प्रदेश सचिव के रूप में उन्होंने समाजसेवा का कार्य किया। धीरे-धीरे संगठन और जनता के बीच उनकी मजबूत पहचान बनती गई। वर्ष 2018 में भाजपा ने उन पर भरोसा जताते हुए जैतारण विधानसभा से उम्मीदवार बनाया। उन्होंने बड़े राजनीतिक दिग्गजों को हराकर जीत दर्ज की। इसके बाद 2023 के विधानसभा चुनाव में भी जनता ने उन पर भरोसा कायम रखा और लगातार दूसरी बार विधायक चुना।

उनकी मेहनत, सक्रियता और जनसेवा को देखते हुए राजस्थान सरकार में उन्हें सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया।

झुंझुनू में पहली बार उपचुनाव जीते... मंत्री अविनाश गहलोत वर्तमान में झुंझुनू प्रभारी है। उनके प्रभारी होने के दौरान इस बार विधानसभा के उपचुनाव में इतिहास में पहली बार भाजपा विजय रही है।

मानसिक विमंदित लोगों को जीवनदान... मानसिक विमंदित लोगों का उपचार कर उन्हें वापस सामान्य जीवन जीने के लिए सामाजिक न्याय विभाग लगातार कार्य कर रहा है। अविनाश गहलोत के प्रयासों से सैकड़ो मानसिक विमंदित लोगों को उपचार के बाद वापस सामान्य जीवन जीने की राह दिखाई गई है।

तकनीक, जैविक खेती और नवाचार से बदलती राजस्थान की कृषि तस्वीर

एग्री-टेक की नई उड़ान

सुधांशु टाक, लेखक, समीक्षक

राजस्थान की धरती आज केवल पारंपरिक खेती की पहचान तक सीमित नहीं रही, बल्कि एग्री-टेक और टिकाऊ कृषि नवाचारों का उभरता हुआ केंद्र बनती जा रही है। इसी बदलते दौर में Cultivator के मैनेजिंग डायरेक्टर तरुण प्रजापति ने आधुनिक शिक्षा, वैश्विक दृष्टिकोण और भारतीय कृषि परंपराओं के संतुलित समन्वय से यह साबित किया है कि वास्तविक नवाचार वही है, जो किसानों, समाज और प्रकृति तीनों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सके।

लेखक और विश्लेषक सुधांशु टाक से विशेष बातचीत में तरुण प्रजापति ने एग्री-टेक, एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) आधारित खेती, जल प्रबंधन, जैविक कृषि और ग्रामीण युवाओं के भविष्य जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि खेती केवल उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने की एक जिम्मेदारी भी है।

स्वर्गीय नारायण दास प्रजापति की प्रेरणा और विरासत को आगे बढ़ाते हुए Cultivator का उद्देश्य ऐसी कृषि व्यवस्था विकसित करना है, जहां किसान केवल उत्पादक नहीं, बल्कि सम्मानित और सशक्त भागीदार बने। उनका स्पष्ट मानना है कि त्वरित सफलता से अधिक महत्वपूर्ण दीर्घकालिक प्रभाव होता है, और भविष्य उसी खेती का है जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर आगे बढ़े। Cultivator की सोच हमेशा यही रही है, 'जब किसान सशक्त होगा, तभी देश और भविष्य दोनों सुरक्षित होंगे।'

आज राजस्थान जैसे राज्य में एग्री-टेक स्टार्टअप्स के लिए सबसे बड़ा अवसर और सबसे बड़ी चुनौती क्या है?

तरुण प्रजापति- राजस्थान आज एग्री-टेक के लिए केवल एक राज्य नहीं, बल्कि नवाचार प्रयोगशाला बन चुका है। यहां की जलवायु संबंधी चुनौतियां हमें ऐसी तकनीक विकसित करने के लिए प्रेरित करती हैं, जो कम संसाधनों में अधिक उत्पादन दे सके। सबसे बड़ा अवसर टिकाऊ खेती, जल प्रबंधन और जैविक खेती में है, जहां पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है। लेकिन सबसे बड़ी चुनौती छोटे किसानों तक सही तकनीक, प्रशिक्षण और विश्वास पहुंचाना है। तकनीक तभी सफल मानी जाएगी, जब किसान उसे अपनाने में सहज महसूस करे। हमारा मानना है कि तकनीक का उद्देश्य खेती को जटिल बनाना नहीं, बल्कि किसान को सशक्त बनाना होना चाहिए। राजस्थान की धरती में अपार संभावनाएं हैं, बस उन्हें सही दिशा और वैज्ञानिक सहयोग की आवश्यकता है।

Cultivator किन प्रमुख समस्याओं को तकनीक के जरिए किसानों के लिए हल करना चाहता है?

तरुण प्रजापति- हमारा उद्देश्य केवल उत्पाद बनाना नहीं, बल्कि किसानों के जीवन को अधिक सुरक्षित, स्थायी और लाभकारी बनाना है। हम किसानों की सबसे बड़ी समस्याएं मिट्टी की गुणवत्ता, जल संरक्षण, उचित मूल्य और फसल की ट्रेसबिलिटी को तकनीक और वैज्ञानिक खेती के माध्यम से हल करने का प्रयास कर रहे हैं। हम पुनर्जीवित जैविक खेती, गुणवत्ता परीक्षण और वैश्विक प्रमाणनों के जरिए किसानों को अंतरराष्ट्रीय बाज़ार से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं। हमारा मानना है कि किसान केवल उत्पादक नहीं, बल्कि प्रकृति का संरक्षक है। हम ऐसी खेती को बढ़ावा देना चाहते हैं, जहां किसान की आय बढ़े, मिट्टी जीवित रहे और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकृति सुरक्षित बनी रहे।

क्या आपको लगता है कि एआई, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और ड्रोन जैसी तकनीकें छोटे किसानों तक व्यावहारिक रूप से पहुंच पा रही हैं, या अभी यह केवल बड़े किसानों तक सीमित हैं?

तरुण प्रजापति- शुरुआत में ये तकनीकें केवल बड़े किसानों तक सीमित थीं, लेकिन अब धीरे-धीरे छोटे किसान भी इनके लाभ को समझने लगे हैं। भारत में स्मार्टफोन और इंटरनेट की बढ़ती पहुंच ने इस बदलाव को गति दी है। एआई आधारित सलाह, सेंसर तकनीक और ड्रोन अब खेती को अधिक सटीक, कम लागत वाली और वैज्ञानिक बना रहे हैं। हालांकि अभी भी जागरूकता और वहनीयता एक बड़ी चुनौती है। हमें ऐसी किसान-अनुकूल तकनीक विकसित करनी होगी, जो सरल भाषा, कम लागत और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो। हमारा विश्वास है कि आने वाला समय समावेशी एग्री-टेक का होगा, जहां तकनीक हर किसान तक पहुंचेगी।

राजस्थान की जलवायु और पानी की कमी को देखते हुए एग्री-इनोवेशन में कौन-सी तकनीक सबसे ज्यादा असर डाल सकती है?

तरुण प्रजापति- राजस्थान जैसे राज्य में जल प्रबंधन आधारित तकनीक ही भविष्य की सबसे महत्वपूर्ण कृषि तकनीक है। सूक्ष्म सिंचाई, मिट्टी की नमी की निगरानी और एआई आधारित जल प्रबंधन प्रणाली खेती में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती हैं। इसके साथ पुनर्जीवित खेती और जैविक मिट्टी प्रबंधन, मिट्टी की जलधारण क्षमता को बढ़ाने में अत्यंत प्रभावी हैं। यदि किसान कम पानी में अधिक पोषण वाली खेती अपनाएं, तो राजस्थान पूरी दुनिया के लिए टिकाऊ कृषि का

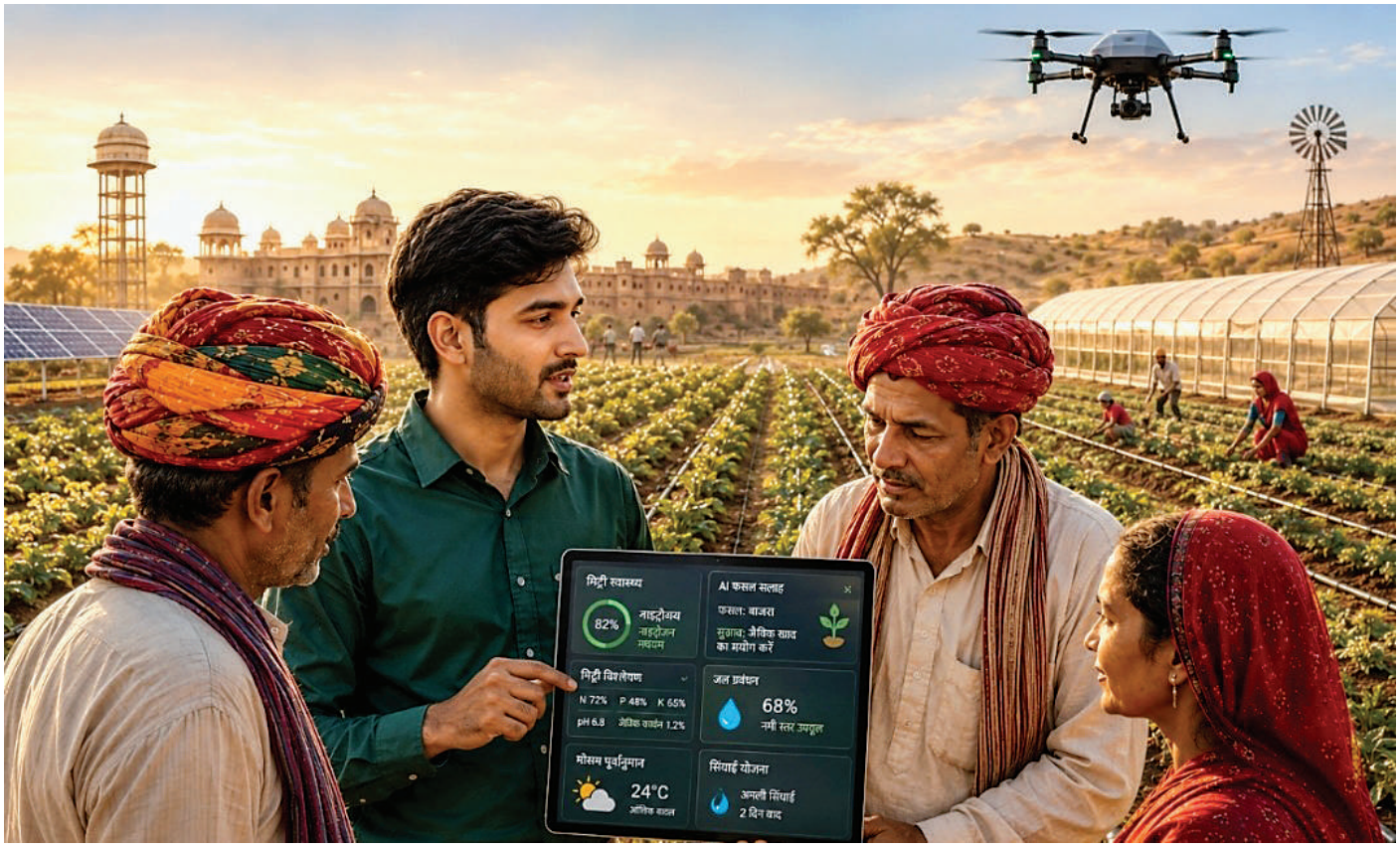

उदाहरण बन सकता है। भविष्य उसी खेती का है, जो प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं, बल्कि संतुलन बनाकर चले।

किसी ऐसे नवाचार का उदाहरण साझा कीजिए, जिसने किसानों की आय या उत्पादकता में वास्तविक बदलाव किया हो।

तरुण प्रजापति- हमारे लिए सबसे प्रभावशाली बदलाव जैविक और ट्रेसबिलिटी आधारित खेती मॉडल रहा है। जब किसानों को केवल उत्पादन तक सीमित न रखकर गुणवत्ता आधारित अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों से जोड़ा गया, तब उनकी आय और आत्मविश्वास दोनों में वास्तविक परिवर्तन देखने को मिला। हमने अपनी शिक्षा और वैश्विक दृष्टिकोण को भारतीय कृषि की जड़ों से जोड़ते हुए किसानों के लिए ऐसा मॉडल विकसित किया, जहां वैज्ञानिक खेती, वैश्विक जैविक प्रमाणन और निष्पक्ष व्यापार व्यवस्था को प्राथमिकता दी गई। इस सोच की प्रेरणा कंपनी के संस्थापक स्वर्गीय नारायणदास प्रजापति की दूरदर्शिता से मिली, जिन्होंने हमेशा प्रकृति, किसानों और शुद्ध खेती को व्यवसाय से ऊपर रखा। कई किसानों ने पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर औषधीय पौधों और जैविक वनस्पति खेती को अपनाया, जिससे उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह केवल आर्थिक बदलाव नहीं था, बल्कि किसानों के सम्मान, आत्मनिर्भरता और अगली पीढ़ी के भविष्य को मजबूत करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

युवा उद्यमियों के लिए एग्री-टेक क्षेत्र में फंडिंग जुटाना कितना कठिन है?

तरुण प्रजापति- एग्री-टेक में फंडिंग चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। निवेशक अब ऐसे स्टार्टअप्स को महत्व दे रहे हैं, जो केवल लाभ नहीं, बल्कि स्थायित्व और सामाजिक प्रभाव पर काम कर रहे हों। सबसे महत्वपूर्ण है स्पष्ट दृष्टि, जमीनी समझ और दीर्घकालिक प्रतिबद्धता। कृषि क्षेत्र में परिणाम धीरे-धीरे सामने आते हैं, इसलिए धैर्य और विश्वसनीयता बहुत जरूरी है। हम मानते हैं कि यदि आपका उद्देश्य किसानों और प्रकृति दोनों के हित में है, तो सही लोग और सही अवसर समय के साथ आपके साथ जुड़ते जाते हैं।

क्या भारत में किसान अब तकनीक अपनाने के लिए पहले से ज्यादा तैयार हैं? इस बदलाव के पीछे क्या कारण हैं?

तरुण प्रजापति- भारतीय किसान अब पहले से कहीं अधिक जागरूक और तकनीक के प्रति खुला है। कोविड के बाद किसानों ने डिजिटल मंचों, ऑनलाइन जानकारी और बाज़ार से सीधे जुड़ने की ताकत को समझा है। नई पीढ़ी के किसान अब केवल खेती नहीं, बल्कि कृषि उद्यमिता की सोच के साथ आगे बढ़ रहे हैं। सरकारी योजनाएं, मोबाइल इंटरनेट और सफलता की वास्तविक कहानियों ने इस बदलाव को गति दी है। आज किसान यह समझ चुका है कि तकनीक केवल सुविधा नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकता है।

आने वाले पांच वर्षों में आपको कौन-सा एग्री-टेक ट्रेंड सबसे ज्यादा परिवर्तनकारी लगता है?

तरुण प्रजापति- हमें लगता है कि एआई आधारित सटीक कृषि और पुनर्जीवित जैविक खेती आने वाले वर्षों में सबसे अधिक परिवर्तनकारी साबित होंगे। भविष्य की खेती केवल अधिक उत्पादन पर नहीं, बल्कि मिट्टी के स्वास्थ्य, जल संरक्षण और पोषण गुणवत्ता पर आधारित होगी। ट्रेसबिलिटी और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकें उपभोक्ताओं को यह जानने में मदद करेंगी कि उनका भोजन कहां और कैसे उगाया गया है। दुनिया अब स्वच्छ, नैतिक और पारदर्शी कृषि की ओर बढ़ रही है, और भारत इस परिवर्तन का नेतृत्व कर सकता है।

ग्रामीण युवाओं को एग्री-इनोवेशन और स्टार्टअप्स की तरफ आकर्षित करने के लिए क्या बदलाव जरूरी हैं?

तरुण प्रजापति- सबसे पहले हमें खेती की छवि बदलनी होगी। कृषि केवल पारंपरिक श्रम नहीं, बल्कि नवाचार, विज्ञान और उद्यमिता का क्षेत्र है। ग्रामीण युवाओं को आधुनिक प्रशिक्षण, डिजिटल शिक्षा और बाज़ार संबंधी अनुभव देना बहुत जरूरी है। यदि गांवों में कृषि इनक्यूबेशन केंद्र, कौशल विकास कार्यक्रम और तकनीकी प्रयोगशालाएं विकसित हों, तो युवा खेती को एक सम्मानजनक और लाभकारी करियर के रूप में अपनाएंगे। हमें युवाओं को यह विश्वास दिलाना होगा कि नवाचार का भविष्य गांवों से भी जन्म ले सकता है।

अगर आज कोई युवा राजस्थान से एग्री-टेक स्टार्टअप शुरू करना चाहता है, तो आप उसे सबसे पहली सलाह क्या देंगे?

तरुण प्रजापति- मैं उसे यही सलाह दूंगा कि पहले किसान को समझिए, फिर तकनीक बनाइए। जमीनी वास्तविकता से जुड़ाव सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि खेती केवल आंकड़ों का विषय नहीं, बल्कि भावनाओं, प्रकृति और जीवन से जुड़ी हुई प्रक्रिया है।

मास्टरशेफ तक का सफर तय करने वाली महिला उद्यमी कौशल्या चौधरी से खास बातचीत

गांव की रसोई से देशभर तक पहुंचा स्वाद

डॉ. मधु बैनर्जी ✍ पत्रकार व लेखिका

राजस्थान की मिट्टी के देसी स्वाद, मारवाड़ी संस्कृति की खुशबू और घरेलू परंपराओं को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर देशभर में पहचान दिलाने वाली जोधपुर के कुड़ी गांव की कौशल्या चौधरी आज हजारों महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं। कभी गांव की साधारण गृहिणी रहीं कौशल्या चौधरी ने अपने संघर्ष, आत्मविश्वास और मेहनत के दम पर ऐसा मुकाम हासिल किया कि आज उनका 'सीधी मारवाड़ी' ब्रांड देशभर में अपनी पहचान बना चुका है। यूट्यूब पर लाखों सब्सक्राइबर, देशभर में 58 स्टोर, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मजबूत उपस्थिति और टीवी के लोकप्रिय शो मास्टर शेफ इंडिया तक पहुंचना उनके संघर्ष और सफलता की कहानी को खास बनाता है।

राजस्थान टुडे के लिए वरिष्ठ पत्रकार डॉ. मधु बैनर्जी ने उनसे उनके संघर्ष, समाज, महिलाओं की चुनौतियों, डिजिटल क्रांति और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तृत बातचीत की तो उन्होंने संघर्ष से अपनी सफलता को कुछ यूं बयां किया...

मारवाड़ी समाज महिलाओं को कितना सपोर्ट करता है? महिलाओं के आगे बढ़ने में सबसे बड़ी मानसिक रुकावट क्या है?

कौशल्या चौधरी : देखिए, समाज हमेशा परिस्थितियों के हिसाब से बनता और बदलता है। पहले के समय में गांवों का जीवन अलग था। पुरुष बाहर जाकर व्यापार, खेती या मजदूरी करते थे और महिलाओं की जिम्मेदारी घर, बच्चे और परिवार संभालने की होती थी। उस दौर में सुरक्षा, संसाधनों की कमी और सामाजिक व्यवस्था के कारण महिलाओं को बाहर जाकर काम करने के अवसर कम मिलते थे। यही सबसे बड़ी मानसिक रुकावट थी। लेकिन आज समय बदल चुका है। महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि पहले महिलाओं को अवसर नहीं मिलते थे, अब जब शिक्षा, तकनीक और अवसर बढ़ गए हैं तो सोच भी बदलनी चाहिए। आज महिलाएं घर के साथ बिजनेस, राजनीति, प्रशासन, सोशल मीडिया और हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं।

आपकी खुद की यात्रा कैसी रही? क्या बचपन से कुछ अलग करने का सपना था?

कौशल्या चौधरी : मैं गांव के माहौल में पली-बढ़ी हूं। बचपन बहुत साधारण था। कम उम्र में शादी होने से पढ़ाई बीच में रुक गई। सच कहूं तो उस समय इतनी समझ भी नहीं थी कि जिंदगी में आगे क्या करना है। लेकिन शादी के बाद धीरे-धीरे महसूस हुआ कि मेरे अंदर कुछ अलग करने की तमन्ना है। हालांकि उस समय संसाधन बहुत सीमित थे। गांव का माहौल, परिवार की जिम्मेदारियां, बच्चों की परवरिश, इन सबके बीच अपने लिए समय निकालना आसान नहीं था। फिर मैंने यूट्यूब के बारे में जाना। मैंने सोचा कि अगर लोग हिंदी और अंग्रेजी में वीडियो बना सकते हैं तो मैं अपनी मारवाड़ी भाषा में क्यों नहीं बना सकती? जनवरी 2019 में हमने चैनल शुरू किया। सबसे पहले तो मोबाइल खरीदा। बिना संसाधनों के बहुत मुश्किल से कभी छत पर थर्मोकोल लगाकर, लाइट लटका कर तो कभी कैमरा लटका कर मोबाइल से वीडियो रिकॉर्ड किए। एक डेढ़ साल में मेरे मात्र 100 सब्सक्राइबर थे। रेसिपी बनाने की सामग्री का खर्च निकालना भी मुश्किल था। धीरे-धीरे घर की देसी रसोई, घरेलू तरीके और मारवाड़ी अंदाज लोगों को पसंद आने लगा। डेढ़ साल की मेहनत के बाद चैनल मोनेटाइज हो गया। 1000 सब्सक्राइबर और 4000 घंटे वॉच टाइम की शर्त बहुत जल्दी पूरी हो गई। आज करीब 18 लाख लोग हमारे यूट्यूब चैनल से जुड़े हुए हैं।

क्या परिवार का सहयोग शुरू से मिला?

कौशल्या चौधरी : सबसे बड़ा सपोर्ट मेरे पति का रहा। अगर परिवार साथ न दे तो महिलाओं के लिए आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता है। शुरुआत में परिवार और रिश्तेदारों को समझ नहीं आता था कि यह काम आखिर है क्या। मुझे अपने काम पर भरोसा था। धीरे-धीरे जब लोगों ने रिजल्ट देखे तो परिवार का विश्वास भी बढ़ता गया। महिलाओं के लिए सबसे जरूरी है कि वे खुद पर भरोसा रखें। अगर इरादा मजबूत है तो एक दिन लोग आपका साथ जरूर देते हैं।

मास्टरशेफ तक पहुंचने का सफर कैसा रहा?

कौशल्या चौधरी : यह मेरे जीवन का बहुत खास अनुभव रहा। गांव की रसोई से निकलकर इतने बड़े मंच तक पहुंचना किसी सपने जैसा था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन मैं इतने बड़े शो का हिस्सा बनूंगी। लेकिन यही डिजिटल प्लेटफॉर्म की ताकत है। जब लोग आपके काम को पसंद करते हैं तो आपकी पहचान दूर तक पहुंचती है। हमारी पारंपरिक मारवाड़ी रेसिपीज और घरेलू स्वाद लोगों को पसंद आए। उसी ने मुझे आगे बढ़ने का आत्मविश्वास दिया।

क्या आज भी महिलाओं को परिवार और करियर में से किसी एक को चुनने का दबाव झेलना पड़ता है?

कौशल्या चौधरी : कई जगह आज भी ऐसा होता है। खासकर छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं से उम्मीद की जाती है कि वे पहले परिवार को प्राथमिकता दें। लेकिन मुझे लगता है कि अब संतुलन बनाना सीखना होगा। महिलाएं बहुत जिम्मेदार होती हैं। वे घर भी संभाल सकती हैं और अपना काम भी कर सकती हैं। जरूरत सिर्फ परिवार के सहयोग और सही सोच की है। अगर एक महिला आगे बढ़ती है तो उसका फायदा सिर्फ उसे नहीं, पूरे परिवार और समाज को होता है। इसलिए महिलाओं को रोकने के बजाय उन्हें अवसर देना चाहिए।

छोटे शहरों और गांवों की महिलाओं के लिए सबसे ज्यादा अवसर किस क्षेत्र में हैं?

कौशल्या चौधरी : आज के समय में सबसे बड़ा अवसर डिजिटल दुनिया में है। सोशल मीडिया और इंटरनेट ने गांव और शहर के बीच की दूरी खत्म कर दी है। अगर किसी महिला को सिलाई आती है, खाना बनाना आता है, खेती की जानकारी है या कोई भी हुनर है, तो वह उसे ऑनलाइन दुनिया तक पहुंचा सकती है। पहले व्यापार के लिए बाजार, दुकान और बड़े निवेश की जरूरत होती थी। लेकिन आज एक मोबाइल फोन भी बिजनेस शुरू करने का माध्यम बन सकता है। मैं हमेशा महिलाओं से कहती हूं कि शुरुआत छोटी करें लेकिन सोच बड़ी रखें।

सोशल मीडिया ने महिलाओं की जिंदगी में कितना बदलाव किया है?

कौशल्या चौधरी : बहुत बड़ा बदलाव आया है। पहले महिलाओं को घर से बाहर निकलने में भी कई सीमाएं थीं। लेकिन आज सोशल मीडिया ने उन्हें आवाज और पहचान दोनों दी है। कोरोना काल में हमने देखा कि लोग घर बैठे ऑनलाइन पढ़ाई, व्यापार और नौकरी कर रहे थे। उसी तरह महिलाएं भी घर बैठे अपना बिजनेस संभाल सकती हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि अब पहचान बनाने के लिए बड़े शहर जाने की जरूरत नहीं है। अगर आपके पास हुनर है तो सोशल मीडिया आपको दुनिया तक पहुंचा सकता है।

आपने संघर्ष के दौरान क्या सबसे बड़ी सीख हासिल की?

कौशल्या चौधरी : सबसे बड़ी सीख यही है कि बिना जानकारी के किसी भी क्षेत्र में कदम नहीं रखना चाहिए। मैंने अपने काम में कई गलतियां कीं। कई बार लोगों पर भरोसा किया और नुकसान भी उठाया। एक समय ऐसा भी आया जब हमने ऐप बनवाने के लिए लाखों रुपए लगाए, लेकिन सही जानकारी न होने के कारण हमें नुकसान उठाना पड़ा। उस समय समझ आया कि किसी भी काम में उतरने से पहले उसकी पूरी जानकारी होना जरूरी है।

आपको क्या लगता है? सरकारी योजनाओं का लाभ महिलाओं तक पहुंच रहा है?

कौशल्या चौधरी : सरकार महिलाओं के लिए बहुत योजनाएं चलाती है। लेकिन जानकारी की कमी सबसे बड़ी समस्या है। गांवों में आज भी कई महिलाओं को पता ही नहीं होता कि उनके लिए कौन-कौनसी योजनाएं हैं। अगर सही मार्गदर्शन मिले तो महिलाएं इन योजनाओं का बहुत अच्छा लाभ उठा सकती हैं।

नई शुरुआत करने वाली महिलाओं को क्या संदेश देना चाहेंगी?

कौशल्या चौधरी : सबसे पहले खुद पर भरोसा रखिए। कोई भी काम छोटा नहीं होता। दूसरी बात, सीखना कभी बंद मत कीजिए। दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है। तकनीक के साथ चलना जरूरी है। और सबसे जरूरी बात, डरिए मत। अक्सर महिलाएं सोचती हैं कि लोग क्या कहेंगे। लेकिन जब आप सफल होती हैं तो वही लोग आपकी तारीफ भी करते हैं।

भविष्य को लेकर आपका सपना क्या है?

कौशल्या चौधरी : मैं चाहती हूं कि ज्यादा से ज्यादा ग्रामीण महिलाएं आत्मनिर्भर बनें। महिलाएं अपनी भाषा, संस्कृति और हुनर पर गर्व करें। हमारी कोशिश है कि मारवाड़ी स्वाद और राजस्थान की परंपरा को देश-दुनिया तक पहुंचाएं। साथ ही ऐसी महिलाओं को प्रेरित करें जो अपने सपनों को सिर्फ इसलिए रोक देती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वे कुछ नहीं कर सकतीं। अगर एक गांव की महिला यूट्यूब और सोशल मीडिया के जरिए मास्टरशेफ तक पहुंच सकती है, तो आज हर महिला के लिए रास्ते खुले हैं। जरूरत सिर्फ पहला कदम उठाने की है।

आरपीएससी: भर्ती का 'ब्लैकहोल'

रक्षक ही भक्षक बन जाएं, तो कहां जाएं?

राजस्थान में भर्ती परीक्षाएं अब केवल प्रतियोगिता नहीं रहीं, बल्कि भ्रष्टाचार, पेपर लीक और अंदरूनी सांठगांठ के ऐसे जाल में फंसती जा रही हैं जहां लाखों युवाओं की मेहनत दम तोड़ रही है। रिकॉर्ड रूम से लेकर शीर्ष पदों तक फैले घोटालों ने आरपीएससी जैसी संवैधानिक संस्था की विश्वसनीयता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

रमेश शर्मा ✍ वरिष्ठ पत्रकार

सरकारी नौकरी सिर्फ एक रोजगार नहीं, बल्कि परिवार की सामाजिक सुरक्षा और सम्मान का दस्तावेज़ है। लेकिन आज राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) जैसी संवैधानिक और प्रतिष्ठित संस्था एक ऐसे 'ब्लैकहोल' में तब्दील हो चुकी है, जहां प्रदेश के लाखों युवाओं का भविष्य, उनकी दिन-रात की मेहनत और खून-पसीने की गाढ़ी कमाई तंत्र की मिलीभगत के अंधेरे कुएं में स्वाहा हो रही है।

हाल ही में राष्ट्रीय स्तर पर गूंजे नीट पेपर लीक कांड और खुद आरपीएससी के भीतर से रिसकर आ रहे सच ने यह साफ कर दिया है कि पेपर लीक और भर्ती घोटालों की जड़ें सिर्फ बाहर बैठे अंडरवर्ल्ड या क्रिमिनल सिंडिकेट तक ही सीमित नहीं हैं। असल दीमक तो सिस्टम की 'तिजोरी' के भीतर ही कुंडली मारकर बैठे हैं, जो रिकॉर्ड रूम में घुसकर खुलेआम सबूतों का सौदा कर रहे हैं।

कल्पना कीजिए, जिस रिकॉर्ड रूम को आरपीएससी की शुचिता का 'गर्भगृह' होना चाहिए, जहां कड़े डिजिटल प्रोटोकॉल और 'टू-पर्सन रूल' (दो व्यक्तियों की अनिवार्य मौजूदगी) लागू होने चाहिए थे, वहां एक मामूली क्लर्क आराम से घुसता है और मेरिट की धज्जियां उड़ा देता है। एसओजी के हत्थे चढ़ा आयोग का यूडीसी मानसिंह मीणा इस संस्थागत पतन का जीता-जागता चेहरा है। मीणा ने स्कूल लेक्चरर भर्ती परीक्षा के एक अभ्यर्थी से सिर्फ 2 लाख रुपए की घूस लेकर रिकॉर्ड रूम में डमी कैंडिडेट की तस्वीरें और मूल दस्तावेज बदलने का दुस्साहस किया। सीसीटीवी फुटेज ने इस पूरे खेल का भंडाफोड़ किया। यह सिर्फ एक अदने से क्लर्क का व्यक्तिगत दुस्साहस नहीं था। एसओजी की पूछताछ में सामने आया है कि इस घिनौने खेल में आयोग के 7 से 9 अन्य आंतरिक कर्मचारी भी शामिल हैं। यानी आरपीएससी के भीतर ही एक समानांतर 'इंटरनल सिंडिकेट' सक्रिय था, जो सीधे तौर पर आधिकारिक रिकॉर्ड को दूषित कर 'योग्य' और 'अयोग्य' के बीच के अंतर को ही मिटा रहा था।

शीर्ष तक पहुंचती आंच: 'करोड़ों' की कुर्सी

भ्रष्टाचार की यह सरिता सिर्फ नीचे के पायदानों पर नहीं बह रही थी, इस धारा का असल उद्गम तो तंत्र के शीर्ष पर ही बैठा था। जांच की आंच जब आगे बढ़ी, तो आरपीएससी के सर्वोच्च पदों पर बैठे लोगों के चेहरे बेनकाब होने लगे। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने पूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष डॉ. शिवसिंह राठौड़ को हिरासत में लेकर 8 घंटे तक कड़ी पूछताछ की। यह कार्रवाई आयोग के ही निलंबित सदस्य बाबूलाल कटारा के उस कबूलनामे के बाद हुई, जिसने पूरे प्रदेश को सन्न कर दिया था। कटारा ने स्वीकार किया कि उसने कृषि विज्ञान भर्ती परीक्षा-2022 (कुल 54 पद) का प्रश्नपत्र 60 लाख रुपए की भारी-भरकम रकम में बेचा था। जब परीक्षा कराने वाली संस्था के जज और जूरी ही खुद 'बिक्री' के लिए बाजार में उपलब्ध हों, तो वहां मेरिट या निष्पक्षता की बात करना ही बेमानी है।

सिर्फ पेपर नहीं, पूरा सिस्टम ही फर्जी

▪ एडीजी विशाल बंसल के नेतृत्व में एसओजी की जांच ने इस घोटाले का एक और डरावना और व्यापक आयाम उजागर किया है। यह खेल अब सिर्फ 'पेपर लीक' करने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसके पीछे दो तरह के बड़े संगठित नेटवर्क काम कर रहे हैं-

1. डमी अभ्यर्थियों का डिजिटल डेटाबेस: एसओजी के पास वर्तमान में 2000 से अधिक ऐसे डमी अभ्यर्थियों का डेटा मौजूद है, जो असली उम्मीदवारों की जगह परीक्षा में बैठे थे। अब तक 150 से अधिक जालसाजों को दबोचा जा चुका है।

2. बैक-डेट डिग्री का कॉरपोरेट धंधा: जांच में चुरू के एक निजी विश्वविद्यालय की संलिप्तता सामने आई है, जो मोटी रकम लेकर 'बैक-डेट' (पुरानी तारीखों) की फर्जी डिग्रियां बांट रहा था। यानी गणित सीधा है। अगर आप परीक्षा पास नहीं कर सकते, तो पैसे फेंकिए, सिस्टम आपके लिए फर्जी डिग्री भी तैयार रखेगा और रिकॉर्ड रूम में सांठगांठ कर फोटो भी बदल दी जाएगी।

राजस्थान में पेपर लीक का 'क्रॉनिक' इतिहास

2021 (REET लेवल-2): पेपर लीक के बाद परीक्षा रद्द, इतिहास में पहली बार किसी बड़ी परीक्षा को इस स्तर पर रद्द करना पड़ा।

2022 (कांस्टेबल भर्ती): मजबूत सुरक्षा के दावों के बीच पेपर लीक हुआ, एक शिफ्ट की परीक्षा दोबारा करानी पड़ी।

2022 (वरिष्ठ अध्यापक-जीके): परीक्षा से ठीक पहले उदयपुर में बस के भीतर पेपर हल करते हुए अभ्यर्थी पकड़े गए, परीक्षा रद्द।

2024 (सब-इंस्पेक्टर भर्ती-2021): एसओजी जांच में खुलासा कि थानेदारों की पूरी खेप ही डमी और पेपर लीक के दम पर भर्ती हो गई; आरपीएससी के पूर्व सदस्य कटारा के बाद अब शीर्ष नेतृत्व तक आंच।

राजनीतिक नूराकुश्ती : युवाओं के दर्द पर सिकती रोटियां

इस पूरे महाघोटाले पर राजस्थान की सियासत में आरोप-प्रत्यारोप का घिनौना दौर जारी है, लेकिन नैतिक जवाबदेही से दोनों प्रमुख दल चतुराई से बच रहे हैं। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ का सीधा हमला है कि पिछली गहलोत सरकार के कार्यकाल में 17 पेपर लीक हुए और आरपीएससी के चेयरमैन तक इसमें शामिल थे। दूसरी तरफ, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अपने कार्यकाल की खामियों पर मौन साधकर मुद्दे को राष्ट्रीय फलक पर ले जा रहे हैं। वे केंद्र सरकार को घेरते हुए नीट पेपर लीक के मद्देनजर एनटीए को तत्काल भंग करने की मांग कर रहे हैं।

इस राजनीतिक फुटबॉल के बीच पिस रहा है वह आम छात्र, जिसके माता-पिता पेट काटकर, कर्ज लेकर जयपुर-अजमेर के कोचिंग सेंटरों की फीस और कमरों का किराया भरते हैं। बार-बार पेपर रद्द होने से छात्रों का मानसिक संतुलन और हौसला टूट रहा है, और हजारों युवा ओवर एज हो गए, यानी परीक्षा देने की अधिकतम आयु सीमा पार कर चुके हैं।

नया ट्रेंड : 'शैडो इन्वेस्टर्स' और 'पोस्ट-एग्जाम क्लीनअप'

इस पूरे घटनाक्रम में जो सबसे खतरनाक और नया ट्रेंड उभर कर आता है, वह है भर्ती घोटालों का 'कॉर्पोरेटाइजेशन'। अब यह काम कुछ स्थानीय सटोरियों या दलालों का नहीं रह गया है, बल्कि इसे एक सुनियोजित बिजनेस मॉडल की तरह चलाया जा रहा है:

1. शैडो इन्वेस्टर्स (सफेदपोश फाइनेंसर): सूत्रों के अनुसार, इन घोटालों के पीछे कुछ बड़े सफेदपोश 'शैडो इन्वेस्टर्स' हैं, जो कोचिंग सेंटरों, निजी विश्वविद्यालयों और भ्रष्ट नौकरशाहों के इस नापाक गठजोड़ को बकायदा 'फंड' करते हैं। ये लोग एडवांस में करोड़ों रुपए लगाकर पूरा पेपर या रिकॉर्ड रूम का एक्सेस ब्लॉक बुक करते हैं, और बाद में अभ्यर्थियों से मुनाफे के साथ इसकी 'रिटेल वसूली' करते हैं।

2. डिजिटल एविडेंस क्लीनिंग (सबूतों का डिजिटल सफाचट): मानसिंह मीणा का पकड़ा जाना यह साबित करता है कि माफिया अब केवल परीक्षा पास कराने तक नहीं रुकता, उनका एक विंग केवल 'पोस्ट-एग्जाम क्लीनअप' यानी परीक्षा के बाद सबूत मिटाने के लिए काम करता है। आरपीएससी के आईटी सेल और रिकॉर्ड रूम के भीतर बैठे लोगों को मोटी घूस देकर यह सुनिश्चित किया जाता है कि यदि भविष्य में आरटीआई या कोर्ट केस हो, तो भी मुख्य सर्वर और फाइलों से सबूत गायब मिलें। जानकारों के मुताबिक, यह सीधे तौर पर 'स्टेट-स्पॉन्सर्ड साइबर क्राइम' का मामला है जिसकी फॉरेंसिक जांच होनी चाहिए।

युवाओं का दर्द

रानीवाड़ा (जालोर) से जयपुर आकर किसी तरह छोटे से कमरे में संघर्ष करते हुए तैयारी कर रहा हूं, अगर पेपर लीक हो जाए तो हमारे परिवार पर क्या गुजरेगी। अधिकतर युवाओं के माता-पिता पेट काटकर, कभी गहने गिरवी रखकर कोचिंग की फीस भेजते हैं।
-संदीप राजपुरोहित, जालोर

हमारा संघर्ष सिर्फ किताबों से नहीं, बल्कि इस भ्रष्ट सिस्टम से है। जब पता चलता है कि 2 लाख में कोई क्लर्क फोटो बदल रहा है, तो लगता है कि हमारी सालों की मेहनत बेमानी थी।
-कैलाश प्रजापति, कोटपूतली

अपनाया जाए अन्य राज्यों का सख्त मॉडल

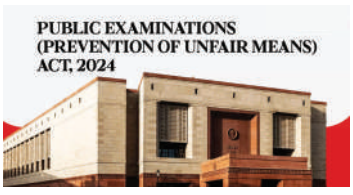

राजस्थान को भी उत्तराखंड और केंद्र सरकार के नए सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम की तर्ज पर पूर्णतः सख्त रुख अपनाना होगा। नए राष्ट्रीय कानूनों के तहत पेपर लीक और संगठित अपराध में शामिल माफियाओं के लिए 10 साल तक की कठोर जेल और एक करोड़ तक के जुर्माने का प्रावधान है। इसके अलावा, संलिप्त पाए जाने पर पूरी संस्था की संपत्ति कुर्क करने जैसे कड़े प्रावधान आरपीएससी के आंतरिक तंत्र पर भी लागू करना होगा।

जब तक सिस्टम के भीतर बैठे इन सफेदपोश अपराधियों और उन्हें राजनीतिक संरक्षण देने वाले बिचौलियों पर निर्णायक और प्राणघातक प्रहार नहीं होगा, तब तक राजस्थान के युवाओं का इस लोकतांत्रिक चयन प्रणाली पर विश्वास बहाल होना असंभव है।

मरहम-पट्टी नहीं, गहरी 'सर्जरी' की जरूरत

आरपीएससी और राजस्थान के परीक्षा तंत्र को वेंटिलेटर से बाहर निकालने के लिए अब केवल कुछ क्लर्कों की गिरफ्तारियों या निलंबन जैसी 'कॉस्मेटिक सर्जरी' से काम नहीं चलेगा। इस सड़ चुके सिस्टम के आमूलचूल शुद्धिकरण की दरकार है। प्रशासनिक और तकनीकी एक्सपर्ट्स जितेन्द्र कुमार शर्मा और डॉ. विकास अग्रवाल के अनुसार, इसके लिए तत्काल तीन कड़े कदम उठाने होंगे:

1. अपरिवर्तनीय डिजिटल लॉग: आरपीएससी के रिकॉर्ड रूम और डेटा सर्वर को तुरंत ब्लॉकचेन जैसी उन्नत तकनीक से जोड़ा जाए। इससे कोई भी कर्मचारी या खुद अध्यक्ष भी बैक-डेट में जाकर किसी लॉग या डेटा को मिटा या बदल (एडिट) नहीं सकेगा।

2. अनिवार्य रोटेशन और 'लीव' पॉलिसी: गोपनीय शाखाओं और रिकॉर्ड रूम में बैठे कर्मचारियों को एक निश्चित अवधि से अधिक वहां न रहने दिया जाए। संवेदनशील पदों पर बैठे अधिकारियों की संपत्तियों का नियमित रूप से 'थर्ड-पार्टी फॉरेंसिक ऑडिट' अनिवार्य हो।

3. एंड-टू-एंड बायोमेट्रिक मिलान: आवेदन फॉर्म भरने से लेकर, परीक्षा हॉल में बैठने और अंत में विभाग में जॉइनिंग के समय तक अभ्यर्थी के फिंगरप्रिंट और 'फेशियल रिकग्निशन' को कानूनी रूप से अनिवार्य किया जाए, ताकि 2000 डमी अभ्यर्थियों का यह समानांतर साम्राज्य हमेशा के लिए ध्वस्त हो सके।

शिव गौरी

RESIDENCY

WAVES OF PROSPERITY

4 | 5 BHK PREMIUM BUNGALOWS

Project Amenities

- गंगा विहार / सांई विहार के बीच (डवलप्ड सोसाईटी)
- जिला अस्पताल से 1 किमी
- भीनमाल रोड़ 500 मीटर
- सिनेमा मॉल से 1 किमी
- रेल्वे स्टेशन से 5 किमी
- बस स्टेण्ड से 5 किमी

Shiv Gauri Developers
JALORE (RAJ.)
Site Address:
Shiv Gauri Residency, Near Ganga Vihar Bhinmal Road, Jalore (Raj.) 343001

शिव गौरी रेजीडेन्सी आवासीय टाऊनशिप
जय आशापुरा टाऊनशिप
आवासीय (प्लॉट एवं विला खरीदने हेतु सम्पर्क करें

प्रेमाराम देवासी
भाजपा
ग्रामीण मंडल,
अध्यक्ष-जालोर
9079301942
9413658149

जम्बु कुमार जैन
9413313220

पुखराज चौधरी
9440671866

सहमति के दौर में असहमति की घटती जगह और सृजनशील विरोध की जरूरत पर विचार

विरोध में छिपा सृजन

आज ऐसे समय में जब विरोध की जगह सुविधाजनक सहमतियां लेती जा रही हैं, रचनात्मक असहमति का स्वर लगातार कमजोर पड़ रहा है। हर नया सृजन दरअसल विरोध, प्रश्न और स्थापित ढांचों को चुनौती देने की साहसिक प्रक्रिया से जन्म लेता है

दिनेश सिंदल ✍ कवि, लेखक

एक पत्रिका ने मुझे कुछ पुस्तकें समीक्षार्थ भिजवाई। पुस्तकों के साथ एक पर्ची भी थी, जिस पर लिखा था- 'थोड़ा गुड़ी-गुड़ी लिख देना।' यह 'गुड़ी-गुड़ी' शब्द इस सन्दर्भ में मैंने पहली बार देखा था। खैर, मैंने अपनी समझ से समीक्षा की, किन्तु संपादक की समझ से मैं गुड़ी-गुड़ी नहीं लिख पाया। फिर उस पत्रिका से मेरे पास समीक्षार्थ पुस्तकें आना बंद हो गई।

आज के समय में सृजन की संभावनाएं क्षीर्ण हो गई हैं। इसका मुख्य कारण है कि कहीं कोई रचनात्मक विरोध नहीं है। आदमी अपने गुड़ी-गुड़ी चेहरे के साथ रहना चाहता है।

कोई भी रचनाकार 'जैसा है', उसका विरोध करता है एवं 'जैसा होना चाहिए' उसे स्थापित करने की कोशिश करता है। नए सृजन के लिए पुराने को ध्वस्त करना जरूरी है। पुराने को नकारने की हिम्मत रचनाकार में होनी चाहिए।

कोई आत्मवन व्यक्ति ही बने-बनाए ढांचे का विरोध कर सकता है, लीक पर चलने से इनकार कर सकता है। समाज हमें भेड़ों की भांति चाहता है, व्यक्तियों की भांति नहीं। क्योंकि व्यक्ति के साथ ही बगावत का स्वर शुरू हो जाता है। जैसे ही होश की किरण उतरती है व्यक्ति अपने स्वयं के मार्ग को खोजने लग जाता है। फिर वह भीड़ के पीछे नहीं चलता। होश आते ही समाज से टूट जाता है। वह पहली बार स्वयं होता है और स्वयं होने में ही बगावत है, विद्रोह है, क्रांति है। इसलिए कोई समाज व्यक्ति को बर्दाश्त नहीं करता।

समाज जन्म की पहली ही घड़ी से व्यक्ति को दबाता है, तोड़ता है कि कहीं वह आत्मवान न हो जाए। क्योंकि अगर वह आत्मवान हुआ तो समाज का नियंत्रण उस पर नहीं रहेगा। लेकिन आज का रचनाकार अपने कई चेहरों के साथ रहता है। वह अपने निजी हित की संभावनाएं दोनों तरफ तलाश करता है।

बस्तियां मधुमेह से पीड़ित रही
आदमी इतने रसीले हो गए

आज का आदमी विरोध और समर्थन दोनों के बीच का मुखोटा लगा कर घूमता है। अपने पक्ष के प्रति न तो प्रबल समर्थन और न ही अपने विपक्ष का प्रबल विरोध।

माणक वर्मा कहते हैं कि-

भारत बंद के दौरान
एक आदमी
सिर्फ चड्डी पहन कर सड़क पर आया
और उसका कारण उसने यह बताया कि-
बंद को अपना समर्थन मिला-जुला है
बंद कहो तो बंद, खुला कहो तो खुला है..!!

आप कुछ भी करो कोई आपको रोकने-टोकने वाला नहीं। कवि-सम्मेलनों के मंच पर मिमिकरी करो, चुटकले सुनाओ। प्रवचन के नाम पर भजन गाओ, नाच नाचवाओ। सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाओ। कहीं पर थूको। नो पार्किंग में गाड़ी खड़ी करो। कहीं कोई विरोध नहीं।

आज विरोध है तो समर्थन जैसा और समर्थन है तो विरोध जैसा। अंधेरा, अंधेरे जैसा नहीं, उजाला उजाले जैसा नहीं।

अंधेरा है तो क्यों गहरा नहीं है
उजाला है तो क्यों दिखता नहीं है

विरोध में ही सृजन की शक्ति होती है। भवन बनाते समय हम ईंटों को एक दूसरे के विपरीत खड़ा करके दीवार खड़ी कर सकते हैं। ताश का महल बनाते समय दो पत्तों को एक दूसरे के विपरीत खड़ा किया जाता है। इससे एक दूसरे के खिलाफ लगने वाली शक्ति सृजन की शक्ति बनती है और ताश का महल खड़ा हो जाता है।

अगर कोई बेटा बाप के बताए रास्ते पर चलने से मना करता है तब ही नये रास्ते की तलाश की संभावनाएं बनती हैं। अगर विरोध नहीं है तो नये की तलाश भी नहीं है। सिद्धार्थ ने अपने पिता की मर्जी के खिलाफ राज छोड़ा और वन की तरफ प्रस्थान किया तो हमें गौतम बुद्ध मिले। द्रोणाचार्य ने जब एक भील बालक को धनुर्विद्या सिखाने से मना कर दिया, तब उस बालक ने अपनी संभावनाएं खोजीं और देश को एकलव्य जैसा धनुर्धर मिला।

विरोध का आकर्षण ही सृजन का द्वार है।

एक गांव के सब युवा निष्क्रिय हो गए। कोई कुछ भी काम नहीं करता था। समस्या खड़ी हो गई। गांव का एक बुजर्ग इस चिंता को लेकर पड़ौस के एक साधु महात्मा के पास गया और उनके सामने अपनी समस्या रखी। कहा- महाराज गांव के सब युवा निष्क्रिय हो गए हैं। कोई कुछ काम धंधा नहीं करना चाहता। कोई उपाय बताएं।

साधु महात्मा ने कहा, बहुत सरल उपाय है। आपके गांव के पास एक नदी बहती है। गांव की जितनी स्त्रियां हैं उन सभी को नदी के उस पार छोड़ आओ। वृद्ध ने ऐसा ही किया। और दूसरे दिन एक चमत्कार देखा कि गांव के सब युवा नाव बनाने में जुट गए। यही विपरीत का आकर्षण है। यही विरोध की ऊर्जा है।

हवेलियों व तारों भरी रातों के बीच नया दौर

राजस्थान में पर्यटन अब केवल किले और महल देखने तक सीमित नहीं रहा। बीकानेर की हवेलियों से लेकर जैसलमेर के स्लो टूरिज्म और जयपुर के उभरते एस्ट्रो टूरिज्म तक, पर्यटक अब यहां की संस्कृति को महसूस करने और जीने आ रहे हैं। बदलते दौर में राजस्थान अनुभव आधारित पर्यटन के नए मॉडल के रूप में उभर रहा है।

ऊंट महोत्सव के दौरान हेरिटेज वॉक का दृश्य।

डा. मुदिता पोपली, पत्रकार एवं लेखिका

राजस्थान को लंबे समय तक केवल किलों, महलों, ऊंटों और लोकनृत्य वाले पर्यटन राज्य के रूप में देखा जाता रहा। यहां आने वाले पर्यटक कुछ दिन बिताते, ऐतिहासिक धरोहरें निहारते, लोकसंगीत सुनते और लौट जाते थे। लेकिन अब राजस्थान का पर्यटन बदल रहा है। पर्यटक अब यहां की संस्कृति को दूर से देखने नहीं, बल्कि उसे महसूस करने और उसमें कुछ समय तक जीने की इच्छा लेकर आ रहे हैं।

राजस्थान के कई शहर इस बदलाव के केंद्र बनते जा रहे हैं। जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर और शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन का स्वरूप अब पहले जैसा नहीं रहा। अब पर्यटक केवल बड़े होटल और प्रसिद्ध पर्यटन स्थल नहीं खोज रहे, बल्कि वे असली लोकजीवन, पुरानी गलियां, पारंपरिक भोजन, लोकसंगीत और ग्रामीण संस्कृति को करीब से समझना चाहते हैं। इस बदलते पर्यटन मॉडल की सबसे रोचक तस्वीर बीकानेर में दिखाई दे रही है। लंबे समय तक बीकानेर को केवल भुजिया, ऊंट और जूनागढ़ किले वाले शहर के रूप में देखा जाता रहा। लेकिन अब बीकानेर की पर्यटन पहचान तेजी से बदल रही है। यह शहर अब केवल घूमने की जगह नहीं रहा बल्कि अनुभव करने वाला सांस्कृतिक केंद्र बनता जा रहा है।

देहाती जीवन बना आकर्षण का केन्द्र

हजार हवेलियों के शहर के रूप में पहचाने जाने वाले बीकानेर की पुरानी गलियां, हवेलियां, चौक और देहाती जीवन अब पर्यटकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण बनते जा रहे हैं। यहां पर्यटक उस असली राजस्थान को तलाश रहे हैं जो बड़े शहरों की चमक से दूर है। यही वजह है कि यहां अनुभव आधारित पर्यटन तेजी से उभर रहा है। लोग अब केवल होटल में ठहरना नहीं चाहते, बल्कि पुराने मोहल्लों की सुबह, चौखटों पर बैठी बुजुर्ग पीढ़ी की बातचीत, मिट्टी के चूल्हे पर बनती रोटियां और लोकगीतों की जीवंत धुनों को महसूस करना चाहते हैं। बीकानेर के पुराने शहर में स्थित अनेक पुश्तैनी हवेलियां अब नए रूप में सामने आ रही हैं। जिन हवेलियों में कभी बड़े परिवारों की रौनक होती थी वहां अब हेरिटेज होम स्टे, सांस्कृतिक कैफे और कला केंद्र विकसित हो रहे हैं। लकड़ी के पुराने दरवाजे, रंगीन झरोखे, चौक में बनी बैठकें और दीवारों पर बनी पारंपरिक चित्रकारी अब पर्यटन का नया आकर्षण बन चुके हैं। पर्यटक यहां केवल ठहरते नहीं बल्कि उस दौर की जीवनशैली को समझने की कोशिश करते हैं।

दरअसल यह बदलाव केवल बीकानेर तक सीमित नहीं है। जैसलमेर, जोधपुर और शेखावाटी क्षेत्र में भी बड़ी संख्या में लोग अपनी पुरानी हवेलियां छोड़कर नई कॉलोनियों में बस चुके हैं। जिन हवेलियों को कभी बोझ समझा जा रहा था वहीं अब वे सांस्कृतिक पूंजी बनती जा रही हैं। राजस्थान में 'हेरिटेज होम स्टे' और 'हेरिटेज होटल' का नया ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। लोग अपनी पुश्तैनी धरोहरों को तोड़ने की बजाय उन्हें संरक्षित कर पर्यटन से जोड़ रहे हैं। इससे रोजगार भी बढ़ रहा है और पुरानी स्थापत्य कला भी बच रही है।

विदेशी पर्यटकों के व्यवहार में भी बड़ा बदलाव दिखाई दे रहा है। पहले जहां विदेशी पर्यटक केवल जयपुर या जैसलमेर तक सीमित रहते थे, वहीं अब वे अपेक्षाकृत शांत और कम भीड़भाड़ वाले शहरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। बीकानेर और जैसलमेर में कई विदेशी पर्यटक अब कई दिनों या महीनों तक रुक रहे हैं। वे केवल किले देखने नहीं आते बल्कि स्थानीय संस्कृति को समझने आते हैं। कुछ लोग मंगणियार और लंगा कलाकारों से लोकसंगीत सीख रहे हैं तो कुछ ऊंट पालन, उस्ता कला, मिनिएचर आर्ट, पारंपरिक भोजन और ग्रामीण जीवनशैली को समझने में रुचि दिखा रहे हैं।

लोकप्रिय हुआ 'स्लो टूरिज्म' का ट्रेंड

जैसलमेर और बाड़मेर क्षेत्र में 'स्लो टूरिज्म' का ट्रेंड तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। पर्यटक अब जल्दबाजी में घूमने के बजाय किसी स्थान को धीरे-धीरे महसूस करना चाहते हैं। सुबह गांव की चाय, दोपहर में लोककला, शाम को लोकसंगीत और रात में रेगिस्तान की शांति। यह नया पर्यटन अनुभव लोगों को आकर्षित कर रहा है। यही कारण है कि अब राजस्थान केवल दर्शनीय स्थलों का राज्य नहीं बल्कि अनुभवों का प्रदेश बनता जा रहा है।

ग्रामीण पर्यटन भी अब तेजी से उभर रहा है। बीकानेर, बाड़मेर, नागौर और शेखावाटी क्षेत्र के गांव अब पर्यटन मानचित्र पर जगह बनाने लगे हैं। गांवों की मिट्टी की खुशबू, पारंपरिक खानपान, पशुपालन संस्कृति और लोककलाएं अब पर्यटकों को आकर्षित कर रही हैं। कई जगह ग्रामीण महिलाएं पर्यटकों को बाजरे की रोटी, खीचड़ा और पारंपरिक व्यंजन बनाना सिखा रही हैं। यह बदलाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए भी नई संभावनाएं पैदा कर रहा है।

सोशल मीडिया से मिली नई पहचान

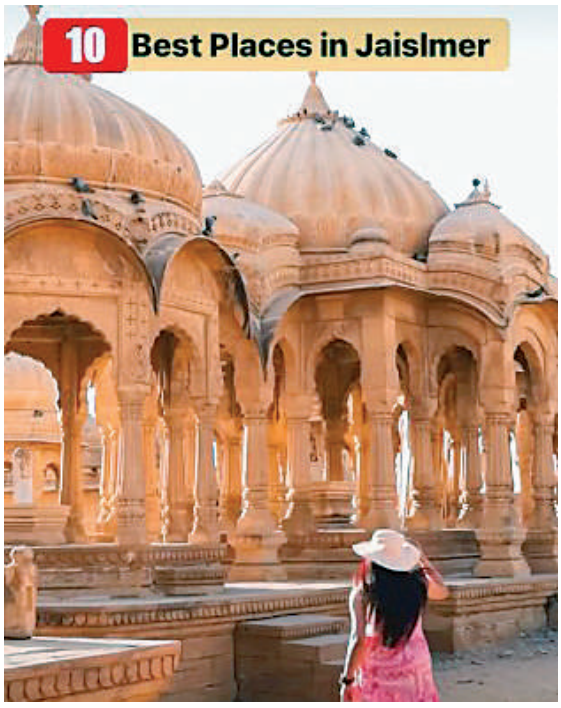

सोशल मीडिया ने राजस्थान की इस नई पर्यटन पहचान को तेजी से आगे बढ़ाया है। इंस्टाग्राम और यूट्यूब के दौर में लोग ऐसी जगहें तलाश रहे हैं जो भीड़ से अलग हों और जहां 'रियल एक्सपीरियंस' मिले। यही कारण है कि अब पुरानी गलियां, भुजिया बनाने की पारंपरिक इकाइयां, मिट्टी के घर, ऊंटों के साथ रेतीले दृश्य और गांवों की साधारण जिंदगी भी पर्यटन कंटेंट का हिस्सा बन रही है। कई युवा ट्रैवल ब्लॉगर अब राजस्थान को केवल राजमहलों का नहीं बल्कि "ऑथेंटिक कल्चर" का प्रदेश बताने लगे हैं।

राजस्थान में पर्यटन का एक और नया आयाम 'एस्ट्रो टूरिज्म' के रूप में सामने आ रहा है। जयपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में अब तारों और अंतरिक्ष आधारित पर्यटन को विकसित करने की दिशा में काम हो रहा है। शहरों की कृत्रिम रोशनी और भागदौड़ से दूर लोग अब साफ आसमान के नीचे तारों को देखने का अनुभव तलाश रहे हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि राजस्थान का विशाल रेगिस्तानी क्षेत्र और साफ वातावरण इस क्षेत्र के लिए बेहद अनुकूल है। आने वाले समय में रेगिस्तान की रातें केवल लोकगीतों के लिए नहीं बल्कि 'स्टार गेजिंग' के लिए भी पहचानी जा सकती हैं।

इसके साथ ही वेलनेस टूरिज्म भी धीरे-धीरे राजस्थान में जगह बना रहा है। कई पर्यटक अब यहां शांति, योग, ध्यान और प्राकृतिक जीवनशैली की तलाश में आ रहे हैं। ग्रामीण परिवेश में बने रिसॉर्ट और सांस्कृतिक केंद्र अब लोकसंस्कृति के साथ मानसिक सुकून और स्वास्थ्य आधारित अनुभव भी जोड़ रहे हैं।

हालांकि इस पूरे बदलाव के बीच कुछ चिंताएं भी मौजूद हैं। कई जगह संस्कृति केवल प्रदर्शन बनकर रह जाती है। सोशल मीडिया आधारित पर्यटन के कारण कुछ स्थानों पर मूल सांस्कृतिक स्वरूप प्रभावित होने का खतरा भी बढ़ रहा है। चुनौती यह है कि आधुनिक पर्यटन और असली सांस्कृतिक पहचान के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए। फिर भी यह स्पष्ट है कि राजस्थान का पर्यटन अब नए मोड़ पर खड़ा है। यहां अब केवल इतिहास नहीं बिक रहा बल्कि अनुभव, अपनापन और संस्कृति की आत्मा लोगों को आकर्षित कर रही है।

बदलते मौसम में इम्युनिटी, संतुलित जीवनशैली और सावधानी की बढ़ती जरूरत

सेहत की चुनौती और होम्योपैथी

भीषण गर्मी और मानसून का मौसम केवल राहत और बदलाव नहीं लाते बल्कि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता की भी कठिन परीक्षा लेते हैं। बदलती जीवनशैली, तनाव और जंक फूड के दौर में मौसमी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे समय में होम्योपैथी केवल रोग नहीं बल्कि शरीर की आंतरिक शक्ति को संतुलित कर स्वास्थ्य को मजबूत बनाने का संदेश देती है।

रोजलीना डिसूजा, वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्सक

मौसम बदलता है और उसके साथ बदलती हैं हमारी स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां। कभी झुलसाती गर्मी शरीर की ऊर्जा को सोख लेती है तो कभी मानसून संक्रमण और वायरल बीमारियों का खतरा बढ़ा देता है। यदि शरीर भीतर से मजबूत न हो तो बदलता मौसम आसानी से बीमारियों का कारण बन जाता है।

आज की तेज भागदौड़ वाली जीवनशैली, अनियमित खान-पान, देर रात तक जागना, तनाव, प्रदूषण और जंक फूड ने लोगों की प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर कर दिया है। यही कारण है कि हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन, वायरल फीवर, डेंगू, मलेरिया, पेट संबंधी रोग और त्वचा संक्रमण जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे समय में केवल बीमारी का इलाज पर्याप्त नहीं होता, बल्कि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाए रखना भी जरूरी हो जाता है।

होम्योपैथी इसी समग्र सोच पर आधारित चिकित्सा पद्धति मानी जाती है। यह व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थिति को ध्यान में रखकर उपचार की कोशिश करती है। इसकी दवाइयां नियंत्रित मात्रा में सामान्यतः सुरक्षित मानी जाती हैं और कई मौसमी समस्याओं में सहायक हो सकती हैं। हालांकि किसी भी दवा का उपयोग योग्य चिकित्सक की सलाह से ही किया जाना चाहिए।

गर्मी का मौसम और बढ़ती परेशानियां

गर्मी के मौसम में अत्यधिक पसीना आने से शरीर में पानी और आवश्यक मिनरल्स की कमी होने लगती है। इससे कमजोरी, चक्कर, सिरदर्द, एसिडिटी, उल्टी, त्वचा रोग और लू लगने जैसी समस्याएं बढ़ जाती हैं। लंबे समय तक तेज धूप में रहने से शरीर का तापमान असंतुलित हो जाता है और कई बार स्थिति गंभीर भी हो सकती है। ऐसी स्थितियों में कुछ होम्योपैथिक औषधियां लक्षणों के आधार पर उपयोगी मानी जाती हैं।

Belladonna – इस दवा का उपयोग अचानक तेज बुखार, सिर गर्म लगने और धूप के प्रभाव वाले लक्षणों में किया जाता है।

Glonoine - अत्यधिक गर्मी, सिरदर्द और सनस्ट्रोक जैसे लक्षणों में सहायक माना जाता है।

Bryonia - शरीर में सूखापन, अधिक प्यास और गर्मी से होने वाले सिरदर्द में दी जाती है।

Natrum Muriaticum - उन लोगों के लिए उपयोगी मानी जाती है जिन्हें गर्मी में अधिक पसीना और डिहाइड्रेशन की समस्या रहती है।

Gelsemium - गर्मी और उमस से होने वाली सुस्ती, थकान और कमजोरी में उपयोग की जाती है।

गर्मी से जरूरी पर्याप्त पानी और हल्का व संतुलित भोजन

- गर्मी में केवल पानी पीना ही पर्याप्त नहीं होता। शरीर में इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखना भी जरूरी है। नारियल पानी, छाछ, बेल का शरबत और नींबू पानी जैसे प्राकृतिक पेय शरीर को राहत देते हैं। अत्यधिक ठंडे शीतल पेय और एनर्जी ड्रिंक्स से बचना चाहिए।
- गर्मी में भारी और तैलीय भोजन पाचन पर अतिरिक्त दबाव डालता है। भोजन में खीरा, तरबूज, ककड़ी, पपीता, दही और मौसमी फलों को शामिल करना लाभकारी माना जाता है। बाहर का मसालेदार और खुले में रखा भोजन संक्रमण का कारण बन सकता है।

पर्याप्त नींद और आराम... देर रात तक मोबाइल या टीवी देखने की आदत शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करती है। पर्याप्त नींद शरीर को मौसम के अनुकूल ढालने में मदद करती है। लगातार बंद कमरों और एसी में रहने से शरीर की प्राकृतिक अनुकूलन क्षमता कम हो सकती है। प्रतिदिन कुछ समय खुली हवा और हरियाली में बिताना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है।

त्वचा और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल

▪ गर्मी में पसीना लंबे समय तक त्वचा पर रहने से फंगल संक्रमण और घमौरियां हो सकती हैं। सूती कपड़े पहनना और साफ-सफाई रखना जरूरी है। साथ ही बढ़ती चिड़चिड़ाहट और तनाव को कम करने के लिए ध्यान, संगीत और योग जैसे उपाय उपयोगी हो सकते हैं।

▪ मानसून गर्मी से राहत जरूर देता है, लेकिन इसके साथ संक्रमण का खतरा भी बढ़ जाता है। बारिश और नमी का मौसम बैक्टीरिया, वायरस और मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल माना जाता है। इसी कारण डेंगू, मलेरिया, वायरल फीवर, टायफाइड, डायरिया और त्वचा रोग तेजी से फैलते हैं।

ऐसे मौसम में कुछ होम्योपैथिक औषधियां लक्षणों के अनुसार उपयोगी मानी जाती हैं-

Arsenicum Album - दूषित भोजन या पानी से होने वाली उल्टी-दस्त और कमजोरी में दी जाती है।

Rhus Toxicodendron - बारिश में भीगने के बाद होने वाले बदन दर्द और वायरल लक्षणों में उपयोगी मानी जाती है।

Eupatorium Perfoliatum - डेंगू जैसे लक्षणों में होने वाली शरीर टूटन में प्रयोग की जाती है।

Dulcamara - मौसम बदलने से होने वाले सर्दी-जुकाम और त्वचा रोगों में दी जाती है।

Mercurius Solubilis - गले के संक्रमण और बैक्टीरियल समस्याओं में उपयोग की जाती है।

China Officinalis - लंबे बुखार या दस्त के बाद आई कमजोरी में सहायक मानी जाती है।

Podophyllum - मानसून में पेट संबंधी संक्रमण और दस्त की समस्या में उपयोगी बताई जाती है।

मानसून में क्या सावधानियां जरूरी हैं

▪ खुले और कटे हुए खाद्य पदार्थों से बचें।

▪ पानी हमेशा शुद्ध या उबला हुआ पिएं।

▪ बारिश में भीगने के बाद तुरंत कपड़े बदलें।

▪ घर और आसपास पानी जमा न होने दें ताकि मच्छरों का प्रकोप न बढ़े।

▪ मोबाइल और अन्य गैजेट्स की नियमित सफाई करें क्योंकि इन पर भी रोगाणु जमा हो सकते हैं।

मानसून में लाभकारी पेय

तुलसी-अदरक का हल्का गर्म पेय गले और वायरल संक्रमण में राहत दे सकता है। हल्दी वाला दूध रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक माना जाता है। जीरा-धनिया पानी पाचन को बेहतर रखने में मदद करता है। नींबू-शहद का गुनगुना पानी शरीर को तरोताजा रखता है जबकि नारियल पानी इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखने में उपयोगी माना जाता है।

आधुनिक जीवनशैली और कमजोर होती इम्युनिटी

▪ आज की युवा पीढ़ी की डिजिटल जीवनशैली भी मौसमी बीमारियों का बड़ा कारण बनती जा रही है। देर रात तक जागना, लगातार स्क्रीन पर समय बिताना, तनाव और जंक फूड की आदत शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित करती है।

▪ विशेषज्ञों के अनुसार लगातार तनाव रहने से माइग्रेन, अनिद्रा, अपच और मानसिक थकान जैसी समस्याएं बढ़ती हैं। ऐसे मामलों में जीवनशैली सुधार सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

▪ होम्योपैथी में कुछ दवाएं जैसे Nux Vomica और Pulsatilla अपच और अनियमित खान-पान से जुड़ी समस्याओं में उपयोग की जाती हैं। वहीं Ignatia और Kali Phosphoricum मानसिक तनाव और थकान से जुड़े लक्षणों में दी जाती हैं।

मौसम बदल रहा है, जीवनशैली भी बदलनी होगी

गर्मी और मानसून केवल मौसम नहीं बल्कि हमारे शरीर की सहनशक्ति और जीवनशैली की वास्तविक परीक्षा हैं। केवल दवाइयों के भरोसे स्वस्थ रहना संभव नहीं है। संतुलित भोजन, पर्याप्त पानी, अच्छी नींद, स्वच्छता, नियमित व्यायाम और मानसिक संतुलन ही बेहतर स्वास्थ्य की असली आधारशिला हैं।

होम्योपैथी का उद्देश्य भी शरीर की समग्र स्थिति को संतुलित करने की दिशा में कार्य करना माना जाता है। यदि समझदारी भरी जीवनशैली और चिकित्सकीय सलाह के साथ इसका उपयोग किया जाए तो बदलता मौसम बीमारियों का कारण बनने के बजाय बेहतर स्वास्थ्य का अवसर भी बन सकता है।

महत्वपूर्ण सूचना- डेंगू, लगातार तेज बुखार, हीट स्ट्रोक, सांस लेने में कठिनाई, गंभीर संक्रमण या अत्यधिक कमजोरी जैसी स्थितियों में तुरंत चिकित्सकीय जांच आवश्यक है। किसी भी होम्योपैथिक दवा का सेवन योग्य चिकित्सक की सलाह से ही करें।

15 साल की उम्र में तूफानी अंदाज : कई विश्व रिकार्ड्स ध्वस्त

'बेबी बॉस' वैभव

समस्तीपुर के छोटे से गांव से निकलकर भारतीय क्रिकेट की नई उम्मीद बन चुके वैभव सूर्यवंशी ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ विस्फोटक बल्लेबाजी कर क्रिकेट जगत को चौंका दिया। मात्र 29 गेंदों में 97 रन जड़ने वाले इस 15 वर्षीय बल्लेबाज को अब भारतीय क्रिकेट का अगला बड़ा सुपरस्टार माना जाने लगा है।

अजय अस्थाना वरिष्ठ पत्रकार

कुछ बच्चे सिर्फ सपने नहीं देखते, वे कम उम्र में ही इतिहास लिखना शुरू कर देते हैं। कुछ ऐसे ही इरादों वाले हैं वैभव सूर्यवंशी, जिन्होंने मात्र 15 साल की आयु में कई बड़े रिकार्ड ध्वस्त कर क्रिकेट जगत को हैरान कर दिया है।

जिस उम्र में किशोर स्कूल और भविष्य के सपनों की उलझनों में रहते हैं, उस उम्र में वैभव दुनिया के सबसे खतरनाक टी-20 गेंदबाजों को ऐसी बेरहमी से धुन रहे हैं कि पूरा क्रिकेट जगत स्तब्ध है। 27 मई 2026 की शाम न्यू चंडीगढ़ के मैदान पर जो हुआ, उसे केवल एक पारी कहना शायद क्रिकेट के साथ अन्याय होगा। वह बल्लेबाजी नहीं थी, बल्कि गेंदबाजों पर खुला हमला था।

सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ आईपीएल एलिमिनेटर मुकाबले में वैभव ने मात्र 29 गेंदों में 12 छक्कों और 5 चौकों की मदद से 97 रन बना डाले। मैच के बाद वैभव ने कहा कि यदि उन्होंने फील्डर को नहीं देखा होता तो शायद 29 गेंदों में शतक पूरा हो जाता। उनका स्ट्राइक रेट 334 से भी अधिक रहा। वे केवल तीन रन से आईपीएल इतिहास का सबसे तेज शतक लगाने से चूक गए, लेकिन उनकी इस पारी ने कई बड़े रिकार्ड्स ध्वस्त कर दिए।

सबसे बड़ा रिकार्ड था एक आईपीएल सीजन में सर्वाधिक छक्कों का। वैभव ने 65 छक्के लगाकर लंबे समय से कायम क्रिस गेल का रिकार्ड ध्वस्त कर दिया। साथ ही आईपीएल प्लेऑफ इतिहास के सबसे तेज अर्धशतकों की सूची में भी अपना नाम दर्ज करा दिया। 15 साल की उम्र में ऐसा कारनामा क्रिकेट इतिहास में बेहद दुर्लभ माना जाता है। मैदान पर उनका अंदाज ऐसा था मानो नेट प्रैक्टिस चल रही हो। पैट कमिंस जैसे विश्व स्तरीय कप्तान और गेंदबाज बेबस नजर आए। पहली ही गेंद से हमला करना अब उनकी पहचान बन चुका है।

क्रिकेट में प्रतिभा अक्सर धीरे-धीरे पहचान बनाती है, लेकिन वैभव जैसे कुछ खिलाड़ी भी होते हैं जो आते ही अपने इरादे जाहिर कर देते हैं। उनके बल्ले से निकलने वाले शॉट्स में केवल ताकत नहीं, बल्कि स्पष्ट सोच और आत्मविश्वास भी दिखाई देता है। कवर ड्राइव, पुल शॉट और लंबे छक्के खेलने की क्षमता उन्हें अन्य युवा खिलाड़ियों से अलग बनाती है। खास बात यह है कि उनका खेल ताकत के साथ ही शानदार टाइमिंग और संतुलन पर भी टिका हुआ है।

महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर कहते हैं, 'उनका बैट स्विंग अविश्वसनीय है और शॉट खेलते समय उनका सिर बिल्कुल स्थिर रहता है। मैंने इतनी कम उम्र में किसी बल्लेबाज को इस तरह बल्लेबाजी करते नहीं देखा।' सचिन तेंदुलकर ने वैभव की बल्लेबाजी को 'नथिंग शॉर्ट ऑफ स्पेक्टैकुलर' बताया, जबकि क्रिकेट विशेषज्ञ इयान बिशप ने इसे 'दुर्लभ और असाधारण बल्लेबाजी' करार दिया।

बिहार के समस्तीपुर जिले के एक छोटे से गांव से निकलकर राष्ट्रीय क्रिकेट चर्चाओं तक पहुंचने वाला यह सफर आसान नहीं था। सीमित संसाधनों और साधारण माहौल के बीच वैभव ने क्रिकेट को जुनून की तरह जिया। उनके पिता संजीव सूर्यवंशी ने बचपन में ही बेटे की प्रतिभा को पहचान लिया था। गांव के मैदानों से शुरू हुआ अभ्यास धीरे-धीरे जिला और फिर राज्य स्तर तक पहुंच गया। कम उम्र में ही वैभव ने यह संकेत दे दिया था कि वे बड़े मंच पर कारनामा करने को तैयार हैं। रणजी ट्रॉफी से लेकर अंडर-19 क्रिकेट और अब आईपीएल तक उन्होंने हर स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। वे दबाव में कभी नहीं घबराते, बल्कि विपक्षी टीम पर ही दबाव बना देते हैं।

हालांकि कम उम्र में मिली लोकप्रियता अपने साथ बड़ी चुनौतियां भी लेकर आती है। आने वाले समय में वैभव के सामने सबसे बड़ी परीक्षा अपनी निरंतरता, फिटनेस और मानसिक संतुलन बनाए रखने की होगी। लेकिन जिस आत्मविश्वास और मेहनत के साथ वे आगे बढ़ रहे हैं, उसे देखकर क्रिकेट जगत को अगला बड़ा सुपरस्टार नजर आने लगा है।

वैभव सूर्यवंशी अब उन हजारों युवाओं की उम्मीद बन चुके हैं जो छोटे शहरों और गांवों से बड़े सपने लेकर निकलते हैं। भारतीय क्रिकेट के आसमान पर यह नया सितारा अभी और तेज चमकने वाला है।

आईसीसी महिला टी20 विश्व कप - नए सितारे बदल रहे हैं परिदृश्य

बदली हुई दुनिया का नया विश्व कप

अगले माह इंग्लैंड में शुरू होने जा रहा आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2026 केवल एक खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि महिला क्रिकेट की बदलती ताकत, बढ़ते बाजार और नई सामाजिक सोच का वैश्विक प्रदर्शन भी होगा।

कभी महिला क्रिकेट को केवल औपचारिक खेल आयोजन माना जाता था। दर्शक कम होते थे, प्रसारण सीमित होता था और खिलाड़ियों की पहचान भी चुनिंदा क्रिकेट प्रेमियों तक सिमटी रहती थी। लेकिन अब तस्वीर तेजी से बदल चुकी है। अगले माह इंग्लैंड और वेल्स में शुरू होने जा रहा आईसीसी महिला टी20 विश्व कप-2026 इसी बदलाव का सबसे बड़ा मंच बनने जा रहा है। 12 जून से 5 जुलाई तक चलने वाले इस टूर्नामेंट में 12 टीमें हिस्सा लेंगी और फाइनल ऐतिहासिक लॉर्ड्स मैदान पर होगा।

इस विश्व कप की सबसे बड़ी खासियत केवल क्रिकेट नहीं, बल्कि उसके पीछे बदलती वैश्विक मानसिकता है। अब महिला क्रिकेट भावनात्मक समर्थन का विषय नहीं रहा, बल्कि यह व्यावसायिक ताकत, दर्शक आकर्षण और खेल बाजार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

भारत-पाक 'हाई-वोल्टेज' मुकाबला

भारत और पाकिस्तान के बीच 14 जून को होने वाला मुकाबला पहले ही चर्चा में है। आयोजकों को उम्मीद है कि यह मैच डिजिटल दर्शकों के नए रिकॉर्ड बना सकता है। पिछले कुछ वर्षों में महिला क्रिकेट की लोकप्रियता जिस तेजी से बढ़ी है, उसमें भारत-पाक मुकाबलों की बड़ी भूमिका रही है।

महिला क्रिकेट की तेज उड़ान

पिछले कुछ वर्षों में महिला क्रिकेट ने असाधारण प्रगति की है। ऑस्ट्रेलिया की महिला बिग बैश लीग, भारत की महिला प्रीमियर लीग और इंग्लैंड की 'द हंड्रेड' जैसी प्रतियोगिताओं ने महिला क्रिकेट को नई पेशेवर पहचान दी है।

पहले जहां महिला क्रिकेटर सीमित अनुबंधों पर निर्भर रहती थीं, वहीं अब करोड़ों के कॉन्ट्रैक्ट और ब्रांड एंडोर्समेंट सामान्य बात बनते जा रहे हैं। भारत की हरमनप्रीत कौर और स्मृति मंधाना से लेकर ऑस्ट्रेलिया की एलिस पेरी तक कई खिलाड़ी अब वैश्विक खेल चेहरों के रूप में देखी जा रही हैं। महिला प्रीमियर लीग ने भारत में महिला क्रिकेट को नई ऊर्जा दी है। छोटे शहरों और कस्बों से भी अब बड़ी संख्या में लड़कियां क्रिकेट को करियर के रूप में देखने लगी हैं।

भारत की सबसे बड़ी परीक्षा

भारतीय महिला टीम पिछले कुछ वर्षों में लगातार बड़े टूर्नामेंटों में मजबूत प्रदर्शन करती रही है। हालांकि आईसीसी ट्रॉफी अब तक हाथ नहीं लगी, लेकिन टीम का संतुलन पहले से कहीं बेहतर दिखाई देता है। हरमनप्रीत कौर का अनुभव, स्मृति मंधाना की स्थिरता, शेफाली वर्मा की आक्रामक बल्लेबाजी और दीप्ति शर्मा की ऑलराउंड क्षमता भारत की सबसे बड़ी ताकत मानी जा रही है। लेकिन भारत की सबसे बड़ी चुनौती बड़े मैचों का दबाव है। यह विश्व कप उस छवि को बदलने का मौका भी होगा।

महिला क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया की स्थिति अब भी सबसे मजबूत टीम की मानी जाती है। फिटनेस, रणनीति और बेंच स्ट्रेंथ के मामले में ऑस्ट्रेलिया बाकी देशों से आगे दिखाई देता है। ऑस्ट्रेलिया रिकॉर्ड छह बार महिला टी20 विश्व कप जीत चुका है। मेजबान इंग्लैंड भी घरेलू परिस्थितियों में खतरनाक साबित हो सकता है। वहीं दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज जैसी टीमें भी किसी बड़े उलटफेर की क्षमता रखती हैं।

बदलती तस्वीर का संकेत... इस बार 12 टीमों की मौजूदगी महिला क्रिकेट के विस्तार का संकेत है। आयरलैंड, स्कॉटलैंड और नीदरलैंड जैसी टीमों की भागीदारी बताती है कि खेल अब पारंपरिक क्रिकेट देशों से आगे निकल चुका है। खास बात यह है कि नीदरलैंड पहली बार महिला टी20 विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने में सफल रहा है।

महिला क्रिकेट अब केवल खेल उपलब्धि का विषय नहीं रहा। टीवी अधिकार, डिजिटल स्ट्रीमिंग, टिकट बिक्री और ब्रांड साझेदारियों में लगातार वृद्धि हो रही है। हालांकि संसाधनों और सुविधाओं के मामले में पुरुष और महिला क्रिकेट के बीच अंतर अब भी मौजूद है, लेकिन बदलाव की रफ्तार पहले से कहीं अधिक तेज दिखाई देती है। कभी 'लड़कियों का क्रिकेट' कहकर जिस खेल को हल्के में लिया जाता था, वही अब वैश्विक खेल उद्योग का तेजी से उभरता चेहरा बन चुका है। यदि यह विश्व कप उम्मीदों के अनुरूप सफल रहता है तो यह महिला क्रिकेट को नई ऊंचाई देने वाला सबसे बड़ा मोड़ साबित हो सकता है।

राजस्थान को जल्द मिलेगी 200 गाड़ियां

जालोर से दिल्ली का सपना हुआ पूरा

तरुण गहलोत, लेखक

केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने जालोर से भुज-दिल्ली-जालोर-पाली रेल को हरी झंडी दिखाकर जैसे ही रवाना किया तो पूरा रेलवे स्टेशन ख़ुशी के मारे झूमने लगा। जिले भर से रेलवे स्टेशन पहुंचे लोगों ने पुष्प वर्षा कर रेल मंत्री का स्वागत किया। अब जालोर वासियों की मांग है कि एक वंदे भारत ट्रेन समदड़ी-भीलड़ी ट्रैक से होकर अहमदाबाद पहुंचे। हालांकि तकनीकी कारणों से फालना ट्रैक से गुजरने वाली वन्दे भारत कुछ दिनों के लिए समदड़ी-भीलड़ी ट्रैक से होकर अहमदाबाद पहुंची। अब जालोरवासी नियमित रूप से एक वन्दे भारत इस ट्रैक पर चाहते हैं।

जालोर-सिरोही सांसद लुंबाराम चौधरी भी ने भी कहा है कि वे वंदे भारत ट्रेन के लिए रेल मंत्री से मांग करेंगे। इसके साथ ही जालोर वासियों के लिए एक और मांग बहुत महत्वपूर्ण है जिसे लेकर सांसद चौधरी और राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग समेत क्षेत्र का हर नागरिक लगातार मांग करता रहा हैं। वह मांग है समदड़ी-भीलड़ी ट्रैक पर चलने वाली डेमो का पालनपुर या अहमदाबाद तक अंतिम स्टॉपेज किया जाए। यदि डेमो का अंतिम स्टॉपेज भीलड़ी की बजाय पालनपुर किया जाए तो इलाज के लिए जाने वाले गरीब और मजदूर तबके के लोगों को काफी राहत मिलेगी। अन्य रेलों के मुकाबले डेमो में किराया नाम मात्र है। यह वास्तविक गरीब रथ है।

जलोर जिले को भी नई ट्रेन मिलने के आसार

- रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि जल्द ही राजस्थान के लिए 200 नई गाड़ियां शुरू की जाएगी, जिससे रेल विस्तार में राजस्थान को अच्छी प्रगति मिलेगी। समदड़ी भीलड़ी ट्रैक डबलिंग होने के बाद जालोर जिले को भी नई ट्रेन मिलने के आसार है।
- सांसद लुम्बाराम चौधरी ने रेल मंत्री से रामेश्वरम् से रामदेवरा तक ट्रेन चलाने की मांग की है। चौधरी ने राजस्थान टुडे से बातचीत में बताया कि रामेश्वरम् भी बड़ा धार्मिक स्थल है और रामदेवरा बाबा रामदेवजी का धाम है। ऐसे में रामेश्वरम् से रामदेवरा तक एक ट्रेन चलाई जाए तो दर्शन करने वाले लोगों के लिए एक बेहतर पहल होगी। उन्होंने यह भी कहा कि रामेश्वरम् से रामदेवरा के बीच स्थित बड़े-बड़े धार्मिक स्थलों को भी इस ट्रेन से जोड़ा जाना चाहिए।

डबलिंग के बाद मिलेंगी रेलगाड़ियां

- रेलमंत्री वैष्णव ने कहा कि लूणी से भीलड़ी तक डबलिंग का काम जोरों पर हैं। यह कार्य पूरा होने के बाद जालोर जिले को और ट्रेनें मिलेगी। इससे जालोर रेल यात्रा का नया अध्याय लिखा जाएगा। लोगों ने यह भी मांग की कि अन्य ट्रेनों के साथ-साथ एक वन्दे भारत भी जालोर के नाम की जाए।
- रेलमंत्री ने कहा कि कांग्रेस की सरकारों में 682 करोड़ रुपए मिलते थे। अब देश के प्रधानमंत्री ने 10 हजार करोड़ रुपए दिए हैं। पीएम मोदी देश के लिए जो अच्छा हैं वहीं काम करते हैं।

ग्रेनाइट को गति शक्ति कार्गो टर्मिनल से मिलेगी रफ्तार

रेलमंत्री वैष्णव ने कहा कि राजस्थान में 24 गति शक्ति कार्गो टर्मिनल मिलेंगे। जालोर के ग्रेनाइट को रफ़्तार देने के लिए गति शक्ति कार्गो की जरूरत पड़ेगी तो यहां पर भी कार्गो टर्मिनल दे देंगे। बस आप जालोर वाले ग्रेनाइट की क्वालिटी का ख्याल रखना।

समानता की दौड़ में उलझते रिश्ते और बढ़ता मानसिक तनाव

रिश्तों के बीच बढ़ता अहं

सोशल मीडिया पर स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं को लेकर बढ़ती अतिरंजित बहसें अब केवल विचारों तक सीमित नहीं रहीं। महिमामंडन, प्रतिस्पर्धा और अपेक्षाओं के दबाव ने पारिवारिक रिश्तों में तनाव, क्रोध और टकराव को बढ़ाया है। यह आलेख इसी बदलते सामाजिक मनोविज्ञान, पारिवारिक संतुलन और स्त्री-पुरुष संबंधों की नई चुनौतियों पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत करता है।

डॉ. गौरव बिस्सा ✍ मैनेजमेंट ट्रेनर एवं जीवन प्रबंध प्रशिक्षक

आज के समय में सोशल मीडिया केवल मनोरंजन या जानकारी का माध्यम नहीं रह गया है। यह लोगों की सोच, अपेक्षाओं और रिश्तों को भी प्रभावित कर रहा है। विशेष रूप से स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं को लेकर सोशल मीडिया पर बड़ी संख्या में ऐसे संदेश प्रसारित होते हैं जो भावनात्मक रूप से प्रभावशाली तो होते हैं, लेकिन कई बार जीवन की जटिल वास्तविकताओं को बहुत सरल रूप में प्रस्तुत करते हैं।

महिलाओं के योगदान, त्याग और परिवार निर्माण में उनकी भूमिका को लेकर समाज में सदैव सम्मान रहा है। गृहिणी हो या कामकाजी महिला, परिवार और समाज को संभालने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब सोशल मीडिया पर किसी भी पक्ष को अत्यधिक महिमामंडित या पीड़ित रूप में प्रस्तुत किया जाने लगता है। इससे अपेक्षाओं और वास्तविकताओं के बीच दूरी बढ़ने लगती है।

आज कई संदेशों में यह दिखाने की कोशिश होती है कि घर की सारी जिम्मेदारियां केवल महिला ही निभाती है और बाकी लोग उसके योगदान को समझते नहीं। दूसरी ओर कुछ संदेश पुरुषों को पूरी तरह असंवेदनशील या गैर जिम्मेदार रूप में प्रस्तुत करते हैं। वास्तविकता इससे कहीं अधिक व्यापक और संतुलित है। परिवार एक साझेदारी है जहां स्त्री और पुरुष दोनों अपनी परिस्थितियों, क्षमताओं और जिम्मेदारियों के अनुसार योगदान देते हैं।

सोशल मीडिया और बदलती सोच

सोशल मीडिया पर दिखाई जाने वाली बातें अक्सर आंशिक सत्य होती हैं। उनका उद्देश्य कई बार संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा शुरू करना होता है, लेकिन निरंतर एकतरफा संदेश लोगों के अवचेतन मन को प्रभावित करने लगते हैं। इससे रिश्तों में तुलना, असंतोष और तनाव बढ़ सकता है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी इन संदेशों को जीवन की अंतिम सच्चाई मान बैठती है।

समाज में बदलती भूमिकाओं को भी समझना आवश्यक है। आज महिलाएं शिक्षा, प्रशासन, विज्ञान, व्यवसाय और उद्यमिता सहित हर क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। वहीं अनेक पुरुष भी घर और बच्चों की जिम्मेदारियों में पहले की तुलना में अधिक भागीदारी निभा रहे हैं। आधुनिक परिवारों में जिम्मेदारियों का बंटवारा परिस्थिति और आपसी समझ के आधार पर तय हो रहा है। यह बदलाव स्वाभाविक भी है और समय की मांग भी।

हालांकि इसके साथ मानसिक दबाव और अपेक्षाएं भी बढ़ी हैं। कामकाजी महिलाओं को घर और कार्यस्थल दोनों जगह अपनी भूमिका निभानी पड़ती है। दूसरी ओर पुरुषों पर आर्थिक जिम्मेदारियों और सामाजिक अपेक्षाओं का दबाव लगातार बना रहता है। जब दोनों ही पक्ष मानसिक तनाव से गुजरते हैं और संवाद कम होने लगता है, तब रिश्तों में टकराव पैदा होने लगता है।

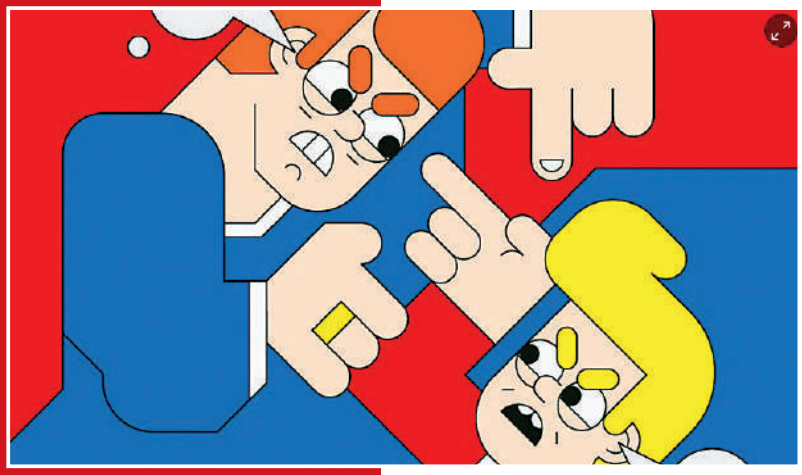

समाज में बढ़ी क्रोध की प्रवृत्ति

हाल के वर्षों में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि मानसिक तनाव और क्रोध की प्रवृत्ति समाज में बढ़ रही है। इसका प्रभाव केवल महिलाओं या पुरुषों तक सीमित नहीं है। बदलती जीवनशैली, प्रतिस्पर्धा, आर्थिक दबाव, सोशल मीडिया की तुलना आधारित संस्कृति और समय की कमी ने पारिवारिक शांति को प्रभावित किया है। ऐसे में यह आवश्यक है कि परिवारों में संवाद, संवेदनशीलता और सहयोग की भावना को मजबूत किया जाए।

आज अनेक परिवारों में यह शिकायत दोनों पक्षों से सुनाई देती है कि उनके योगदान को पर्याप्त सम्मान नहीं मिल रहा। कई पेशेवर दंपत्तियों में आर्थिक आत्मनिर्भरता और पद आधारित पहचान के कारण अनजाने में तुलना और अहं का भाव बढ़ने लगता है। कई पुरुष यह महसूस करते हैं कि उनके संघर्ष, जिम्मेदारियों और भावनात्मक प्रयासों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जा रहा, वहीं अनेक महिलाएं स्वयं को अत्यधिक दबाव और अपेक्षाओं के बीच घिरा हुआ मानती हैं। संवाद की कमी होने पर यह दूरी धीरे-धीरे रिश्तों में कटुता का रूप लेने लगती है। पारिवारिक परामर्शदाताओं का अनुभव भी बताता है कि जब रिश्तों में सम्मान और संवेदनशीलता कम होने लगती है तब कई बार काउंसलिंग भी सीमित प्रभाव छोड़ पाती है।

कटुता का परिवार पर नकारात्मक प्रभाव

क्रोध अपने आप में हमेशा नकारात्मक नहीं होता। अन्याय या असमानता के विरुद्ध आवाज उठाना आवश्यक है। लेकिन यदि क्रोध स्थायी तनाव, आरोप या रिश्तों में कटुता का रूप ले ले तो उसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। बच्चे, बुजुर्ग और युवा दंपत्ति सभी इससे प्रभावित होते हैं। इसलिए आवश्यक है कि भावनाओं को संतुलित तरीके से व्यक्त किया जाए।

आज महिलाओं में आत्मनिर्भर बनने की इच्छा तेजी से बढ़ी है और यह सकारात्मक परिवर्तन है। आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को आत्मविश्वास देती है। छोटे व्यवसाय, स्वरोजगार, शिक्षा और कौशल विकास के माध्यम से महिलाएं अपनी पहचान मजबूत कर रही हैं। समाज को भी इस दिशा में प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके साथ यह समझना भी जरूरी है कि केवल बाहरी आकर्षण या सोशल मीडिया पर दिखने वाली जीवनशैली ही सफलता का मापदंड नहीं है। वास्तविक सशक्तीकरण शिक्षा, ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास और मानसिक संतुलन से आता है।

स्त्री-पुरुष एक दूसरे के पूरक

- स्त्री और पुरुष प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। परिवार तब मजबूत बनता है जब उसमें सम्मान, संवाद और सहयोग का वातावरण हो। आधुनिक समाज में समानता का अर्थ संघर्ष नहीं बल्कि साझेदारी होना चाहिए।
- यदि सोशल मीडिया के प्रभाव से ऊपर उठकर परिवारों में संवेदनशील संवाद, जिम्मेदारियों का संतुलन और परस्पर सम्मान विकसित किया जाए तो समाज अधिक स्वस्थ और संतुलित बन सकता है। स्त्री और पुरुष दोनों की गरिमा और योगदान को समान सम्मान देकर ही मजबूत परिवार और एक समर्थ राष्ट्र की कल्पना साकार की जा सकती है।

डॉ. शोभा भंडारी कवि, लेखक

दर्पण का दर्द

आडम्बर और दिखावे से,
झूठी शान और तड़क-भड़क से,
तंग आकर, रूसवा होकर,
सुना है आजकल दर्पण ने भी,
हकीकतों से किनारा कर लिया है,
असली छवि दिखाना बंद कर दिया है।

दर्द बहुत है दर्पण के दिल में, क्योंकि
हकीक़त नहीं देखना चाहता कोई भी,
अपनी खामियों- कमजोरियों को,
नहीं स्वीकारना चाहता कोई भी।
दोष दर्पण में ही नज़र आता है हम सबको,
उस पर धुंधलेपन का इल्ज़ाम लगाया जाता है,
फितरत बदलने का तंज कसा जाता है,
सूरत बिगाड़ने वाला किरदार वो कहलाता है।
कदम-कदम पर कसूरवार वो ठहराया जाता है,
फरेबी और धोखेबाज वो कहलाता है।।

दर्द की इंतहा हो, उससे पहले,
दर्पण थककर बेजार हो, उससे पहले,
टूटकर जार-जार होने से पहले,
हम अपनी असलियत को जान लें,
अपनी हकीक़त को मान लें,
तब ही दर्पण की सार्थकता सिद्ध होगी,
उसकी अहमियत साकार होगी ।।।

आज़ादी के बाद जैतारण में विकास ने पकड़ी नई रफ्तार

जैतारण में विकास की नई इबारत

कैबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत के कार्यकाल में चिकित्सा, सड़क, पेयजल, बिजली, शिक्षा और खेल क्षेत्र में हुए रिकॉर्ड विकास कार्य

चैनराज भाटी, वरिष्ठ पत्रकार

जैतारण में नए बनने वाले उपजिला चिकित्सालय का डिज़ाइन।

ब्यावर जिले का जैतारण विधानसभा क्षेत्र अब तेजी से बदलते विकास की तस्वीर पेश कर रहा है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री और जैतारण विधायक अविनाश गहलोत के कार्यकाल में क्षेत्र में चिकित्सा, सड़क, पेयजल, विद्युत, शिक्षा, खेल और प्रशासनिक सुविधाओं के विस्तार को लेकर बड़े स्तर पर कार्य स्वीकृत हुए हैं। वर्षों से लंबित कई योजनाएं अब धरातल पर उतर रही हैं, जिससे लोगों को राहत मिल रही है।

चिकित्सा क्षेत्र में बड़ी सौगातें

- जैतारण में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को उप जिला चिकित्सालय में क्रमोन्नत किया गया है। लगभग 35 करोड़ रुपए की लागत से इसका निर्माण शुरू हो चुका है। इसके अलावा जैतारण, निमाज और रास में नवीन भवन निर्माण के लिए 2496 लाख रुपए स्वीकृत किए गए हैं।
- रास सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के लिए नवीन भवन स्वीकृत हुआ है, वहीं गिरी में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का नया भवन बनाया जाएगा। निमाज पशु चिकित्सालय को प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय में क्रमोन्नत किया गया है। आसरलाई, बलाड़ा, भूम्बलियां, कुड़की, लाम्बियां, मोहराई, निम्बोल, पाटवा, पीपाड़ा, सेवरिया, बलून्दा, डिगरना और फालका सहित 13 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के भवन निर्माण एवं मरम्मत के लिए 20.67 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं। प्रत्येक पीएचसी के लिए करीब 1.59 करोड़ रुपए निर्धारित किए गए हैं।
- इसके अलावा रायपुर में उप जिला चिकित्सालय, कलालिया में आयुष्मान आरोग्य मंदिर तथा राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय को आदर्श चिकित्सालय में क्रमोन्नत किया गया है।

बिजली व्यवस्था को मिलेगी मजबूती

- जैतारण में 118 करोड़ रुपए की लागत से 220 केवी जीएसएस निर्माण कार्य की स्वीकृति दी गई है। इसके अलावा जैतारण तथा मोहनगढ़, बांझाकुड़ी और बगतपुरा में 33 केवी जीएसएस स्वीकृत किए गए हैं।

सड़क विकास से बढ़ी कनेक्टिविटी

- जैतारण विधानसभा क्षेत्र में 38 करोड़ रुपए की लागत से समौखी से बलाड़ा, पृथ्वीपुरा से लौटोती, बलून्दा से खराड़ी, कालब खुर्द से काणुजा, बुटिवास से रास, निमाज से चावण्डियां कलां तथा कांवलिया से कालू तक 38 किलोमीटर सड़क कार्य स्वीकृत किए गए हैं। साथ ही 18 करोड़ रुपए लागत से बांझाकुड़ी, बलुन्दा, कानावास, काणेचा फाटा, बिकरलाई, रामावास और बिरोल तक सड़क कार्य किए जा रहे हैं। बर, मेगड़दा, भैरू का नाका और काणुजा सड़क के लिए 7.50 करोड़ रुपए स्वीकृत हुए हैं। रेलमगरा सर्किल से माकड़वाली और दीपावास सड़क निर्माण पर 5 करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं।
- जैतारण-बलाड़ा-बलुपुरा सड़क के लिए 25 करोड़, बाबरा-रामगढ़ से बिछयामाला डामरीकरण सड़क के लिए 1.50 करोड़, कुड़की नीलकंठ महादेव मंदिर से धनेरिया लील वाया दासावास सड़क के लिए 40 करोड़ व चिड़ियानाथ जी की समाधि (सेवरिया) तक डामरीकरण सड़क निर्माण के लिए 5 करोड़ रुपए तथा विभिन्न सड़कों के निर्माण के लिए अतिरिक्त 10 करोड़ रुपए भी स्वीकृत किए हैं।

पेयजल योजनाओं से गांवों को राहत

- पाली, सोजत और जैतारण शहर सहित 245 गांवों में पेयजल आपूर्ति एवं पाइपलाइन कार्यों के लिए 23.47 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं। कलालिया, बगड़ी, कोट किराना और काणुजा ग्राम पंचायतों को भोमादा बांध पेयजल योजना से जोड़ने के लिए 50 लाख रुपए की डीपीआर स्वीकृत की गई है। सोजत, मारवाड़ जंक्शन और जैतारण क्षेत्र के 175 गांवों में निर्बाध पेयजल आपूर्ति के लिए बागावास तालाब में आरडब्ल्यूआर एवं पम्प हाउस निर्माण कार्य के लिए 14.60 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं।
- भोमादा बांध से काणुजा, कोटकिराणा, कलालिया व बगड़ी ग्राम पंचायतों को जोड़ने वाली पेयजल योजना के लिए 50 करोड़ रुपए की स्वीकृति के साथ ही जैतारण और निमाज की शहरी पेयजल योजना पर 15.21 करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं।

शिक्षा और छात्रावासों को बढ़ावा

ग्राम निम्बोल में अनुसूचित जाति छात्रावास की स्वीकृति तथा ब्यावर में महाविद्यालय स्तरीय बालिका छात्रावास तथा जैतारण में सावित्री बाई फुले बालिका छात्रावास की स्थापना की गई है। नवगठित जिले में पॉलिटेक्निक कॉलेज की स्वीकृति भी युवाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

खेल और युवाओं के लिए नई पहल

जैतारण में 7 करोड़ रुपए की लागत से हॉकी खेल अकादमी स्थापित होने के बाद खिलाड़ियों को स्थानीय स्तर पर बेहतर प्रशिक्षण और सुविधाएं उपलब्ध होंगी। जैतारण में बांझाकुड़ी रोड पर राष्ट्रीय स्तर का एस्ट्रो टर्फ हॉकी ग्राउंड बनने जा रहा है। जल्द ही इसका भूमिपूजन होगा।

प्रशासनिक और औद्योगिक सुविधाओं का विस्तार

जैतारण में खान विभाग के सहायक अभियंता (खनिज) कार्यालय की स्थापना की गई है। इसके अलावा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग का अधिशासी अभियंता कार्यालय, सार्वजनिक निर्माण विभाग का अधिशासी अभियंता कार्यालय तथा रास-जैतारण में कनिष्ठ अभियंता कार्यालय शुरू किए गए हैं। रीको क्षेत्र जैतारण, एडीजे कोर्ट बर, मिनी सचिवालय, रायपुर में नई नगरपालिका और डीएसपी कार्यालय जैसी प्रशासनिक सुविधाओं ने क्षेत्रीय विकास को नई दिशा दी है।

नगर विकास और सौंदर्यीकरण कार्य

जैतारण नगर निकाय को क्रमोन्नत किया गया है। नगर पालिका क्षेत्र में सौंदर्यीकरण कार्यों की स्वीकृति दी गई है। रायपुर में नवीन नगरपालिका गठन भी प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। निमाज स्थित मगरमंडी माताजी मंदिर के जीर्णोद्धार कार्य करवाए जा रहे हैं। क्षेत्रवासियों का कहना है कि वर्षों से लंबित कई योजनाएं अब तेजी से पूरी हो रही हैं। लगातार स्वीकृत हो रही योजनाओं और निर्माण कार्यों ने क्षेत्र के लोगों में नए विश्वास का संचार किया है।

ग्रहों की चाल

विपुल डोभाल, ज्योतिष, पीठाधीश्वर।
श्री शनिधाम आश्रम, विकासनगर देहरादून
ईमेल : vipravaani@gmail.com
मोबाइल : 9928424374

मेष

इस महीने आत्मविश्वास पहले से अधिक मजबूत रहेगा। जो काम रुके हुए थे, उनमें गति आएगी। नौकरी और व्यवसाय में आपकी सक्रियता प्रभावित करेगी। जल्दबाज़ी नुकसान भी दे सकती है, इसलिए हर कदम सोच-समझकर रखें। महीने के मध्य में कुछ नए अवसर सामने आ सकते हैं। परिवार में आपकी बातों को महत्व मिलेगा। स्वास्थ्य के लिए थकान, गुस्सा और नींद की कमी से बचें। प्रेम जीवन में संवाद बनाए रखना आपके लिए लाभकारी रहेगा।

वृषभ

जून का महीना आर्थिक रूप से अच्छा संकेत दे रहा है। धन से जुड़े मामलों में सुधार होगा और रुका हुआ पैसा मिलने की संभावना है। आपकी कार्यशैली में स्थिरता रहेगी, जिससे लोग भरोसा करेंगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी, लेकिन खर्चों पर नियंत्रण रखना आवश्यक होगा। जो लोग व्यापार से जुड़े हैं, उनके लिए यह समय नए संपर्क बनाने का है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, लेकिन खानपान में लापरवाही न करें। रिश्तों में मिठास बनाए रखने से लाभ होगा।

मिथुन

इस महीने आपके विचारों में तेजी और नई योजनाओं की भरमार रहेगी। पढ़ाई, लेखन, संचार, मार्केटिंग, तकनीकी काम या सोशल मीडिया से जुड़े लोगों के लिए समय अनुकूल है। नए लोगों से मुलाकात होगी, जिनसे भविष्य में लाभ मिल सकता है। नौकरीपेशा लोगों को भी कौशल दिखाने का अवसर मिलेगा। प्रेम में थोड़ी अस्थिरता आ सकती है, इसलिए बातों को स्पष्ट रखें। स्वास्थ्य में मानसिक तनाव से बचें और नियमित दिनचर्या बनाए रखें।

कर्क

यह महीना भावनात्मक और पारिवारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेगा। घर-परिवार से जुड़ी जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं, लेकिन आप उन्हें निभाने में सक्षम रहेंगे। आर्थिक मामलों में सोच-समझकर आगे बढ़ें। निवेश के लिए जल्दबाज़ी न करें। कार्यक्षेत्र में आपका सम्मान बढ़ सकता है, खासकर यदि आप धैर्य और विनम्रता से काम लें। स्वास्थ्य में पाचन, नींद और पानी की कमी पर ध्यान देना चाहिए। आध्यात्मिक रुचि बढ़ेगी और मन को शांति मिलेगी।

सिंह

जून का महीना व्यक्तित्व को निखारने वाला रहेगा। कामकाज में नेतृत्व क्षमता उभरेगी। यदि आप किसी टीम या संगठन से जुड़े हैं, तो आपकी भूमिका मजबूत हो सकती है। आर्थिक रूप से स्थिति बेहतर रहेगी, लेकिन बड़े निर्णय सोच-समझकर लें। अहंकार पर नियंत्रण रखना होगा। परिवार में मान-सम्मान मिलेगा। प्रेम संबंधों में गर्मजोशी बनी रहेगी, लेकिन आपसी समझ बहुत जरूरी होगी। स्वास्थ्य में ऊर्जा बनी रहेगी, फिर भी अत्यधिक तनाव से बचना चाहिए।

कन्या

यह महीना व्यवस्था, मेहनत और परिणाम का समय है। अपने काम को योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ाएंगे, जिससे सफलता मिलने की संभावना रहेगी। नौकरी में आपकी मेहनत की सराहना हो सकती है। व्यापारियों के लिए भी यह महीना स्थिरता लाएगा। आर्थिक रूप से धीरे-धीरे स्थिति मजबूत होगी। स्वास्थ्य के मामले में नियमित दिनचर्या, संतुलित भोजन और आराम जरूरी है। रिश्तों में बहुत अधिक आलोचना से बचें, नहीं तो अनावश्यक तनाव बढ़ सकता है।

तुला

इस महीने साझेदारी, संबंध और संतुलन आपके जीवन का मुख्य विषय रहेंगे। व्यापार, साझेदारी और सामाजिक संपर्कों से लाभ मिलने की संभावना है। आपकी बातों में आकर्षण रहेगा। नौकरी और व्यवसाय दोनों में नए अवसर मिल सकते हैं। दांपत्य जीवन में सामंजस्य बनाए रखना आवश्यक होगा। यदि आप किसी निर्णय को लेकर दुविधा में हैं, तो जल्दबाज़ी न करें। स्वास्थ्य में कमजोरी या मानसिक उलझन महसूस हो सकती है, इसलिए विश्राम जरूरी है।

वृश्चिक

यह महीना परिवर्तन और गहराई का संकेत दे रहा है। कुछ पुराने मामलों का समाधान मिलेगा और मानसिक रूप से हल्का महसूस करेंगे। आर्थिक दृष्टि से सावधानी बरतें, लेकिन नए अवसर भी सामने आ सकते हैं। यदि धैर्य और रणनीति के साथ आगे बढ़ेंगे, तो लाभ मिल सकता है। रिश्तों में विश्वास व पारदर्शिता बहुत जरूरी होगी। स्वास्थ्य में छोटे-छोटे संकेतों को अनदेखा न करें। इस समय आपकी अंतर्ज्ञान शक्ति मजबूत रहेगी, इसलिए भीतर की आवाज़ को महत्व दें।

धनु

जून का महीना प्रगति और गति लेकर आएगा। कामकाज में नए अवसर और नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। उत्साह ऊंचा रहेगा और आप कई चीज़ों को एक साथ संभालने की कोशिश करेंगे। इस दौरान धैर्य रखना बहुत जरूरी होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं। परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलेगा। स्वास्थ्य में यात्रा, थकान या अनियमित दिनचर्या से परेशानी हो सकती है, इसलिए ध्यान रखें। प्रेम जीवन में ईमानदारी और स्पष्टता लाभ देगी।

मकर

यह महीना मेहनत और स्थिरता का है। आप अपने करियर और भविष्य को लेकर गंभीर रहेंगे, और यही आपको आगे बढ़ाएगा। व्यवसाय में पुराने प्रयासों का परिणाम धीरे-धीरे दिख सकता है। नौकरीपेशा लोगों को भी अपने काम में स्थिरता बनाए रखने से लाभ होगा। आर्थिक रूप से समय ठीक है, लेकिन खर्च सोच-समझकर करें। परिवार व सामाजिक जीवन में आपकी भूमिका खास रहेगी। स्वास्थ्य में कमर, घुटनों या थकान की समस्या पर ध्यान दें।

कुंभ

इस महीने आपके लिए नए विचार, तकनीकी प्रगति और रचनात्मकता का समय है। आप जिस क्षेत्र में भी काम करते हैं, उसमें कुछ अलग करने की इच्छा रहेगी। दोस्तों व सहयोगियों के माध्यम से लाभ मिलने की संभावना है। नौकरी व व्यवसाय में प्रयोग सफल हो सकते हैं। आर्थिक रूप से मिश्रित समय रहेगा। आय के साथ कुछ अनपेक्षित खर्च भी आ सकते हैं। प्रेम व वैवाहिक जीवन में समझदारी काम आएगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मीन

जून का महीना आपके लिए भावनात्मक, आध्यात्मिक और रचनात्मक दृष्टि से अच्छा रहेगा। आपका मन कल्पनाशील रहेगा और किसी कला, लेखन या आध्यात्मिक कार्य में रुचि ले सकते हैं। परिवार और बच्चों से जुड़े मामलों में भूमिका महत्वपूर्ण होगी। कार्यक्षेत्र में भी आपकी समझदारी प्रभावित करेगी। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। स्वास्थ्य में नींद, तनाव और भावनात्मक थकान पर ध्यान दें। यह समय मन को शांत रखने का है।

सुख, सुरक्षा और अपनापन का नाम

घर नहीं एक एहसास

मल्लेश्वर नगर

आधुनिक बंगले और डुप्लेक्स

जहाँ दिल को सुकून मिले, **वही घर है**

स्कूल

पार्क

मॉल

चौड़ी सड़के

मुख्य सड़कों और शहर के अहम स्थानों से आसान जुड़ाव

बच्चों का खेल क्षेत्र

प्रस्तावित लेआउट मैप
खसरा नं. 1052, सिरोही

अस्वीकरण / Disclaimer : यह मानचित्र एवं लेआउट केवल ब्रोशर की प्रस्तुति एवं सौंदर्य हेतु सम्मिलित किया गया है। वास्तविक निर्माण कार्य की परिस्थितियों भूमि की संरचना एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं के अनुसार इसमें आंशिक या पूर्ण परिवर्तन किया जा सकता है। अंतिम लेआउट एवं प्लॉट विभाजन निर्माण की वास्तविक स्थितियों पर आधारित होगा।

एक उत्कृष्ट जीवनशैली का अनुभव

- **आबादी क्षेत्र के निकट स्थित कॉलोनी** — बाजार, स्कूल और अस्पताल - सब कुछ पास में
- **हरा-भरा गार्डन एवं पार्क** — जहाँ बच्चे खेलें और बुजुर्ग बैठकर सुकून पाएँ
- **4 भव्य एवं सुरक्षित प्रवेश द्वार** — कॉलोनी में आवागमन सुविधाजनक एवं व्यवस्थित
- **सम्पूर्ण भूमिगत अवसंरचना** — सीवरेज, पानी व गैस पाइप लाइन सब एक साथ
- **पट्टासुदा आवासीय भूमि** — पूरी तरह वैध बिना किसी कानूनी उलझन के
- **रोड लाइट एवं आधुनिक सुविधाएँ** — दिन हो या रात कॉलोनी हमेशा जगमग
- **60, 40 एवं 30 फीट की चौड़ी सड़कें** — सुव्यवस्थित यातायात और खुला वातावरण
- **कॉम्शीयल शॉपिंग मॉल एवं दुकानें** — रोजमर्रा की जरूरतें दरवाजे के पास ही

विक्रय कार्यालय : पहल इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा. लि.,
टोयोटा शोरूम के निकट, सिरोही, राजस्थान
02972-221302 | +91 96723 53388 | 95871 39999

साइट परियोजना पता : मल्लेश्वर नगर, खसरा नं. 1052, आदर्श नगर के पास, सिरोही, राजस्थान
02972-221302

RERA REG. NO. :
RAJ-HERA-2025-11594 | RAJ-RERA-2026-11704
www.rera.rajasthan.gov.in

CELEBRATING 42 YEARS OF TRUST — THE LIQUID GOLD

ISO 22000 2018

स्वाद वो जो बना दे बात

मनभाती महक, लाजवाब स्वाद, भरपूर पौष्टिकता

सोना सिक्का®©

BEST CHOICE REFINED GROUNDNUT OIL
शुद्धता से समझौता नहीं
SONA SIKKA

महंगा है पर खरा है! स्वाद और सेहत से भरा है

42 वर्षों से शुद्धता के हर मापदंड पर खरा उतरा है, इसलिए बेस्ट है सोना सिक्का

सोना सिक्का रखता है ख्याल आपकी सेहत का आपके परिवार की खुशियों का इसलिए सोना सिक्का तेल के निर्माण में गुणवत्ता शुद्धता और सेहत से कोई समझौता नहीं किया जाता है।

परिवार की सेहत के लिए सोना सिक्का में व्यंजन बनायें, खुद खायें, सबकों खिलायें....!

मिलते-जुलते नाम और अशुद्ध ब्रांड से सावधान. आपके स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ नहीं

SHAKUN

Shyam and Shyam Oils Pvt. Ltd. Jodhpur

Plot No. B 5,6,7 (A), 1st Phase, Basni Industrial Area, Jodhpur, (Raj.)

डिस्ट्रीब्यूटर बनने एवं डीलरशिप हेतु
टोल फ्री नं. पर सम्पर्क करें: 1800 313 3292

sonasikka.com | info@sonasikka.com | sonasikka

0291-2512333, 2512338

Available on : amazon | Flipkart